MPHIN36951
कुल पृष्ठ : 52, मूल्य : 50 रुपए
वर्ष 01, अंक 01 मासिक पत्रिका
जुलाई 2021

हमारा देश हमारा अभिमान

हर-हर महादेव

कैसी दिखेगी राम की नगरी

अयोध्या ?

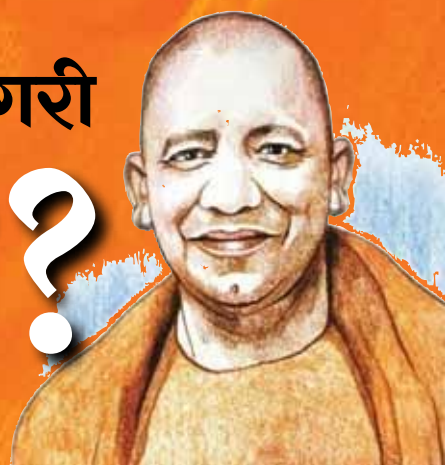

पिताजी बाबूलालजी चतुर्वेदी

मां श्रीमती शकुंतला चतुर्वेदी

हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका की पूरी टीम और संपादक मनोज चतुर्वेदी को आशीर्वाद और वधाई

रूद्राक्ष चतुर्वेदी (बेटा)

विकास चतुर्वेदी (भाई)

उन्नति चतुर्वेदी (भांजी)

हमारा देश
हमाराअभिमान

वरिष्ठ संरक्षक मंडल
अनन्त श्री विभूषित श्रीमद जगद्गुरु श्री राम स्वरूपचार्य जी महाराज कामदगिरि पीठाधीश्वर चित्रकूट धाम
श्री महामंडलेश्वर रामप्रिय दास
श्री महामंडलेश्वर अनिरुद वन जी
श्री डॉ. श्रीमन नारायण मिश्रा

संरक्षक मंडल
श्री लोकेश चतुर्वेदी
श्री डॉ. दिनेश उपाध्याय
श्री अरविंद जैन
श्री अरुण कांत शर्मा
श्री मनोज भारद्वाज

संपादक
मनोज चतुर्वेदी

प्रमुख परामर्शदाता
पंकज दीक्षित

विशेष संवाददाता
• रवि परिहार • रविकांत शर्मा

कानूनी सलाहकार
एडवोकेट अनिल शुक्ला शासकीय अधिवक्ता ग्वालियर हाईकोर्ट
एडवोकेट श्याम पाठक ग्वालियर डिस्ट्रिक्ट कोर्ट

ब्यूरो : अविनाश जाज पुरा (उज्जैन संभाग)

मुम्बई ब्यूरो (महाराष्ट्र)
सचिंदर शर्मा (फ़िल्म डायरेक्टर)

ब्यूरो राजस्थान
सुभाष सोरल (फ़िल्म निर्माता) कोटा

ब्रजेश जैन– साक्षात्कार व्यवस्थापक और विज्ञापन संवाददाता इंदौर

संवाददाता : संदीप पाटिल, इंदौर

सलाहकार
• डॉ. सुनील शर्मा, नेत्र रोग विशेषज्ञ
• डॉ. मुकेश चतुर्वेदी • अनिल जैन
• अनिल दुबे • विकास चतुर्वेदी

मार्केटिंग प्रमुख : शैलेन्द्र जैन

मार्केटिंग मैनेजर
• सुनील • हरशूल • संजू

स्वामी/मुद्रक/प्रकाशक मनोज कुमार चतुर्वेदी द्वारा कंचन ऑफसेट डी-1/63, सेक्टर-4, विनय नगर ग्वालियर- फोन नं. 0751-2481433, (म. प्र.) से मुद्रित एवं शिव कॉलोनी गली नं. 4 , रेलवे स्टेशन के पीछे, तहसील डबरा, जिला ग्वालियर, (मध्यप्रदेश) प्रकाशित। संपादक-मनोज कुमार चतुर्वेदी ।
(सभी विवादों का न्यायालय क्षेत्र ग्वालियर रहेगा।)

विवरणिका

संपादकीय	02
शुभाशीष	03
शुभकामना संदेश	04
हर-हर महादेव	05
कवर स्टोरी	06-07
II कवर स्टोरी	08-11
ज्योतिष	19
यूथ	23
स्वास्थ्य	24-25
साइबर	27
शोध	29
पेगासस	31-32-33
करियर	34-35
शिक्षा	37
महिला जगत	42-43
संस्कृति	44
रहन-सहन	45
मौसम विशेष	46
खान-पान	47
ग्लैमर	48

संपादकीय

हमारा देश हमारा अभिमान

परिवर्तन का नियम चिरस्थाई है। जितनी तेजी से समय बदल रहा है उतनी ही तेज़ी से जीवन के नियम भी बदलते जा रहे हैं। भवितव्य की बेहतरी के लिए आज जैसा भी है स्वीकार्य होना चाहिए। पर ऐसा होता नहीं है। वर्तमान में भी आम आदमी के विरोध के स्वर तेज़ और तेज़तर होते जा रहे हैं क्योंकि उसे अपना भविष्य नहीं, बिगड़ता हुआ वर्तमान दिखाई दे रहा है। संबंधों में कम होता सम्मान, बढ़ती हुई महंगाई, मिलावटी खाद्य पदार्थ और प्रतिकूल होती प्रकृति किसी बेहतर भविष्य की ओर संकेत नहीं करते। ऐसे में एक आशा की किरण जलाए रखना नितांत ज़रुरी है। और ये तभी संभव है जब हम भावनात्मक होने के साथ-साथ विवेक का भी पूरा इस्तेमाल करें।

आज ज़रुरी है कि आसपास बदलते माहौल के प्रति सतर्क रहकर गलत के प्रति विरोध जताया जाए फिर चाहें वह मामला समाज का हो, सरकार का हो या अपने घर का ही। संबंध बचाए रखने के लिए मौन तभी तक कारगर है जब तक आपकी निजता पर संकट न आ खड़ा हो। आपका अस्तित्व सिर्फ ज़िंदा रहने तक नहीं है बल्कि आप कितने जागरुक, कितने संवेदनशील, कितने सक्रिय हैं, इस बात से भी तय होता है।

...बस इसी अस्तित्व को लगातार मज़बूत करने, समाज की विडंबनाओं, विसंगतियों पर प्रहार का नाम है हमारा देश हमारा अभिमान। महादेव जी असीम कृपा, माता-पिता के आशीर्वाद और आप सभी के स्नेहपूर्ण साथ से मासिक पत्रिका का स्वप्न साकार हो रहा है। पूर्ण विश्वाश है कि कठिन समय मे प्रज्ज्वलित हुई ये मशाल देश का अभिमान और देश के आम आदमी के स्वाभिमान का प्रतीक बनेगी और उत्तरोत्तर प्रकाशवान रहेगी।

हर हर महादेव।

मनोज चतुर्वेदी
संपादक

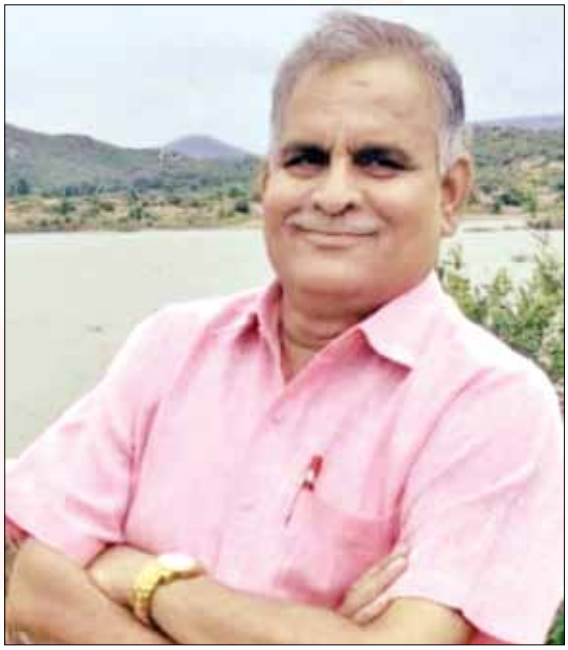

हमारा देश हमारा अभिमान के लिए शुभाशीष

समाज और पत्रकारिता का रिश्ता उतना ही पुराना है जितना मनुष्य में संस्कृति की शुरआत का। यानी एक सभ्य समाज बनाने में पत्रकार और पत्रकारिता का खास महत्व हमेशा से रहा है। ये भी सच है कि जिस तरह से समाज तप कर निखरता रहा है उसी तरह पत्रकारिता भी कठिन परीक्षा देते हुए अपनी संगति, विसंगतियों के साथ दिनों-दिन रुपान्तरित हो रही है। इसी क्रम में खबरों, संदेशों के इस विशाल समंदर में एक लहर हमारा देश हमारा अभिमान के रुप में जल्द ही आकार लेने जा रही है। एक विनयशील और कर्मठ पत्रकार मनोज चतुर्वेदी ने इस मासिक पत्रकारिता का ज़िम्मा अपने कंधों पर लिया है। मेरा स्नेह और शुभाशीष सदैव उनके साथ हैं। वे सफल हों और सकारात्मक पत्रकारिता की दिशा तय करते रहे यही शुभेच्छा है।

डॉ. श्रीमन नारायण मिश्रा
संरक्षक
हमारा देश हमारा अभिमान

ज्योतिरादित्य मा. सिंधिया
JYOTIRADITYA M. SCINDIA

नागर विमानन मंत्री
भारत सरकार
Minister of Civil Aviation
Government of India

07 अगस्त 2021

शुभकामना संदेश

मुझे यह जानकर प्रसन्नता हो रही है, कि हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका का आगाज हो रहा है। वर्तमान में जिस बात की सबसे ज्यादा आवश्यकता है वह है एक निर्भीक और ईमानदार पत्रकारिता। इसी वादे के साथ मासिक पत्रिका हमारा देश हमारा अभिमान की नींव रखी जा है । मेरी बहुत सारी शुभकामनाएं इस मासिक पत्रिका की पूरी टीम और निर्भीक वरिष्ठ पत्रकार और इस पत्रिका के सम्पादक मनोज कुमार चतुर्वेदी के लिए। पत्रिका अपने उद्देश्य में सफल हो और देश के चौथे स्तम्भ के सभी आदर्शों पर खरी उतरे यही मंगलकामना है।

भवदीय

ज्योतिरादित्य मा. सिंधिया

Office : Room No. 291, B-Block, Rajiv Gandhi Bhawan, Safdarjung Airport, New Delhi-110003
Tel. : 91-11-24610350, 24632991, Fax : 91-11-24610354

नमामीशमीशान निर्वाणरूपं। विभुं व्यापकं ब्रह्मवेदस्वरूपं। निजं निर्गुणं निर्विकल्पं निरीहं। चिदाकाशमाकाशवासं भजेऽहं।

अर्थात.... हे मोक्षरूप, विभु, व्यापक ब्रह्म, वेदस्वरूप ईशानदिशा के ईश्वर और हम सबके स्वामी शिवजी, आपको मैं नमस्कार करता हूं। निज स्वरूप में स्थित, चेतन, इच्छा रहित, भेद रहित, आकाश रूप शिवजी मैं आपको हमेशा भजता हूँ।

कैसी दिखेगी राम की नगरी अयोध्या?

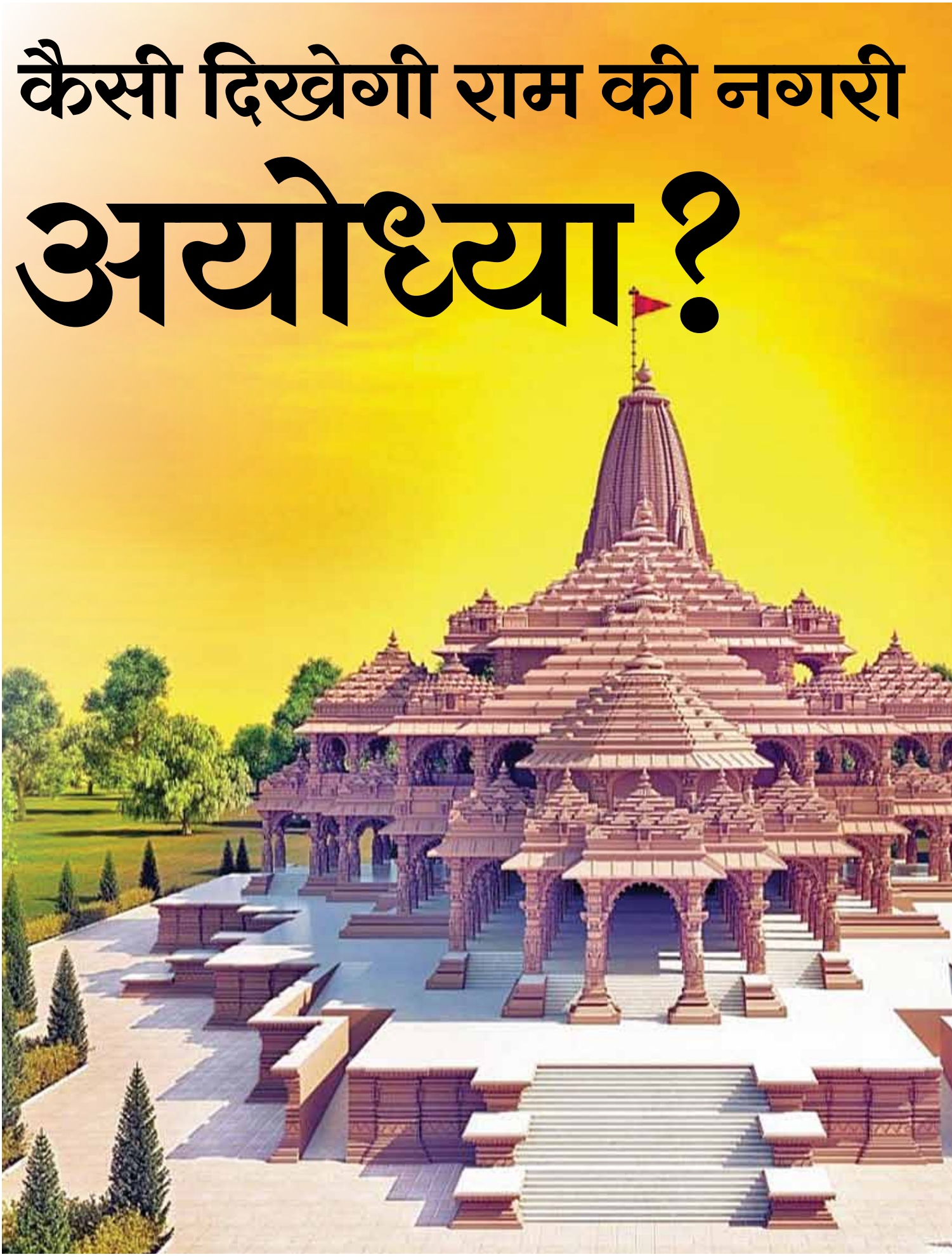

योगी सरकार के विजन डाक्यूमेंट में संशोधन

प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी के सुझाव पर योगी सरकार अयोध्या के विकास मॉडल में बदलाव करने जा रही है। प्रधानमंत्री के सुझाव के आधार पर अयोध्या को धार्मिक नगरी के साथ ही अब इस रूप में बसाया जाएगा ताकि मिनी भारत की छवि दिखे।

कवर स्टोरी

प्रधानमंत्री के सुझाव पर अयोध्या विजन 2051 को अयोध्या विजन 2047 किया जा रहा है। इसको देश की आजादी के 100 वर्ष के साथ जोड़ा जा रहा है। अयोध्या को मिनी भारत के रूप में प्रोजेक्ट किया जाएगा। यहां पर पूरे देश का प्रतिनिधित्व होगा। यह समग्र भारत को प्रदर्शित करेगा, जिससे वर्तमान संरचना में भी रामायणकालीन प्रेरक प्रसंग की अनुभूति हो सकेगी। चौराहों का विकास और नामकरण अध्यात्मिकता को समावेशित कर अयोध्या की पृष्ठ भूमि को परिलक्षित किया जाएगा। अयोध्या में चार से छह माह में पब्लिक यूटीलिटि यानी शौचालय व विश्राम स्थल की व्यवस्था की जाएगी, जिससे अभी आने वाले श्रद्धालुओं को सुविधा मिल सके।

डिजिटल टूरिस्ट गाइड भी होगा

प्रधानमंत्री ने यह भी सुझाव दिया है कि अयोध्या विकास के लिए नियमों में अगर संशोधन की जरूरत हो तो उसे भी किया जाए, लेकिन पर्यटकों की सुविधाओं का पूरा ध्यान रखा जाए। सड़कों के किनारे छोटे-छोटे होटल और धर्मशाला बनाने पर भी विचार हो। अयोध्या के लिए डिजिटल टूरिस्ट गाइड भी बनाने को कहा गया है। इससे पर्यटक अयोध्या व यहां उपलब्ध सुविधाओं, विशेष स्थलों के बारे में आसानी से जानकारी प्राप्त कर सकेंगे। यह काम तुरंत किया जा सकता है। अयोध्या विकास का मॉडल अभी ढांचागत सुविधाओं पर आधारित है। इसमें आत्मा कैसे आए इस पर भी विचार करने का सुझाव दिया गया है।

2023 में पूरा होगा निर्माण

भगवान राम की नगरी अयोध्या में राम मंदिर का निर्माण शुरू हो गया है। मंदिर निर्माण के लिए बुनियाद भरी जा रही है। बुनियाद में 1 इंच मोटी 44 लेयर भरी जानी है, जिसके लिए 50% से ज्यादा 25 लेयर भरी जा चुकी है। 15 सितंबर तक बुनियाद का काम खत्म करने की समय सीमा राम मंदिर ट्रस्ट के द्वारा कार्यदायी संस्था को दी गई थी और संस्था के अधिकारी 12-12 घंटे की दो शिफ्ट में मंदिर की बुनियाद का निर्माण कार्य करवा रहे है। मंदिर निर्माण के लिए अक्टूबर महीने से मंदिर के बेस का निर्माण होगा, जिसमें मिर्जापुर के बलुआ पत्थर और ग्रेनाइट स्टोन का इस्तेमाल किया जाना है। ट्रस्ट के द्वारा 2023 तक मंदिर निर्माण कर रामलला को विराजमान कराए जाने की बात कही गई है और कार्यदायी संस्था के द्वारा लगातार तेजी के साथ मंदिर निर्माण का कार्य चल रहा है।

यह भी दिया सुझाव

- वर्ष 2047 में कैसी अयोध्या होगी इसका मॉडल प्रदर्शित किया जाए
- भावना, आस्था के साथ 21वीं सदी के एक आधुनिक शहर बसाएं
- 108 कुंड बनाने के लिए देशव्यापी प्रतियोगिता आयोजित की जाए
- इसमें देशभर के आर्कीटेक्ट, छात्रों व डिजायनरों को शामिल किया जाए
- बेहतर डिजायन करने वालों को पुरस्कृत भी किया जाए
- अलग-अलग राज्यों से फाइन आर्टस के छात्रों को भी बुलाया जाए
- संगीत और नाट्य के क्षेत्र में भी विकास पर ध्यान दिया जाए
- स्कूलों में रामायण आधारित प्रसंगों जैसे त्याग, वीरता, मातृ-पितृ भक्ति आदि नाटक का मंचन कराया जाए
- अयोध्या विषय पर साल में एक बार बहुभाषीय कवि सम्मेलन भी आयोजित किया
- मंदिर प्रांगण के आसपास नो वेहिकल जोन विकसित किया जाए

सरोवरों का भी होगा विकास

अयोध्या में श्रीराम जन्मभूमि पर बन रहे रामलला के मंदिर के साथ-साथ अयोध्या के अन्य मंदिरों को भी विश्व के पर्यटन के मानचित्र पर लाने की तैयारी है। इसके लिए प्रदेश के पर्यटन विभाग ने 37 मंदिरों की सूची तैयार कर उन्हें विकसित करने का प्रस्ताव केंद्र सरकार को भेजा है। अब केंद्र सरकार की ओर से हरी झंडी मिलने के बाद इस दिशा में काम शुरू कर दिया जाएगा। यूपी में अगले साल होने वाले चुनाव के लिहाज से सरकार का यह कदम काफी महत्वपूर्ण माना जा रहा है। मंदिरों के अलावा अयोध्या नगर निगम दो करोड़ की लागत से अयोध्या की 84 कोस की सीमा के भीतर मौजूद 108 कुंड और सरोवरों का विकास करने की योजना पर काम कर रहा है।

शिल्पा का पति अश्लील फिल्मों का

शिल्पकार

अश्लीलता का 'शिल्प'कार

डेढ़ साल... 100 पोर्न मूवीज करोड़ों की कमाई

बॉलीवुड एक्ट्रेस शिल्पा शेट्टी के पति और बिजनेसमैन राज कुंद्रा अश्लील फिल्म बनाने के मामले में मुंबई पुलिस की क्राइम ब्रांच की हिरासत में हैं। इस पूरे पोर्न रैकेट को लेकर कई चौंकाने वाली जानकारियां सामने आई हैं। पता चला है कि डेढ़ साल में राज कुंद्रा ने 100 से ज्यादा पोर्न मूवीज बनाई थीं और इनसे करोड़ों रुपयों की कमाई की थी।

क्राइम ब्रांच ने अंधेरी वेस्ट स्थित राज कुंद्रा के वियान ऑफिस पर छापा मारा था, जहां से एजेंसी को कई सारा डेटा मिला है। इसको ऐसे ही समझ सकते हैं कि ये डेटा टैराबाइट में हैं। इतना ही नहीं, बहुत सारा डेटा तो डिलीट भी किया जा चुका है, जिसे क्राइम ब्रांच फोरेंसिक एक्सपर्ट की मदद से रिकवर करने में जुटी है। पुलिस अधिकारियों के मुताबिक, अश्लील फिल्मों के कारोबार में राज कुंद्रा अगस्त 2019 से थे और तब से अब तक 100 से ज्यादा पोर्न फिल्में बना चुके थे। क्राइम ब्रांच से जुड़े सूत्रों ने बताया कि इन फिल्मों के जरिए कुंद्रा ने करोड़ों में कमाई की।

सूत्रों का कहना है कि जिन ऐप पर इन अश्लील फिल्मों को अपलोड किया जाता है, उनके 20 लाख के आसपास सब्सक्राइबर थे और इसी वजह से कुंद्रा को करोड़ों की कमाई होती थी। क्राइम ब्रांच का कहना है कि कुंद्रा ने वेबसाइट की बजाय ऐप इसलिए बनाई थी क्योंकि उसका इस्तेमाल करना ज्यादा आसान है। इसके अलावा वेबसाइट को बंद भी कर दिया जाता है, लेकिन ऐप के साथ ऐसा नहीं होता। क्राइम ब्रांच से जुड़े सूत्रों ने ये भी बताया कि कुछ मॉडल और एक्ट्रेस हैं, जो इस तरह की फिल्मों में ही काम करती हैं और कुंद्रा उनका इस्तेमाल करते हैं।

बड़ी मुलाकातों का ब्योरा

इस पूरे मामले से जुड़े मुंबई पुलिस के एक सूत्र ने बताया कि राज कुंद्रा की दिल्ली से लेकर मुंबई और लंदन से लेकर अमेरिका तक की सभी लोगों से बीते कुछ सालों में हुई बड़ी मुलाकातों का पूरा ब्योरा इकट्ठा किया गया है। इस दौरान बहुत सी चीजों का खुलासा हुआ है। पुलिस के राज कुंद्रा पर हाथ डालने से पहले सारे सबूत न सिर्फ इकट्ठा किए गए बल्कि उनको एक सूचीबद्ध तरीके से मुंबई पुलिस ने अपने पास रखा है। ताकि अगले कुछ दिनों में उनको एक एक कड़ी से मिलाते हुए पेश किया जाएगा और फिर गिरफ्तारी होगी।

नेताओं से बात के प्रमाण

पुलिस सूत्रों के मुताबिक कुंद्रा से पहले इस मामले में हिरासत में लिए गए उसके सहयोगी के फोन कॉल के अलावा वाट्सएप और एसएमएस से कुछ नेताओं और बड़े अधिकारियों की बातचीत होने के प्रमाण भी हैं। हालांकि अब जांच इस दिशा में हो रही है कि इस पूरे मामले में इन लोगों की क्या संलिप्तता है।

पति राज के कारनामों के कारण शिल्पा शर्मिंदा

पति राज कुंद्रा के काले कारनामों के कारण शिल्पा शेट्टी की भी बदनामी हो रही है। राज कुंद्रा को मुंबई पुलिस ने हिरासत में ले लिया है क्योंकि उनपर पोर्नोग्राफिक वीडियो बनाने का आरोप लगा है। इस बारे में लोग तरह-तरह की बातें भी कर रहे हैं कि शिल्पा को शायद पहले से इस विषय में पता है, शिल्पा शेट्टी ने सिर्फ रूपया देखकर राज कुंद्रा से शादी की है आदि।

शिल्पा शेट्टी इस मामले के बाद सुपर डांसर की शूटिंग के लिए भी नहीं गई थीं और ये समय उनके लिए बहुत मुश्किल साबित हो रहा होगा लेकिन बॉलीवुड में यह कोई पहला मौका नहीं है जब किसी अभिनेत्री को अपने पति के कारण इस तरह से शर्मिंदगी झेलना पड़ रही है। इससे पहले भी दिव्या कुमार खोसला, निशा रावल, सुजैन खान आदि अभिनेत्रियां ऐसी जिल्लत से गुजर चुकी हैं। कुछ दिनों पहले ही निशा रावल का मामला चर्चा का विषय बना हुआ था।

निशा रावल

पिछले दिनों निशा रावल लोगों की चर्चा का विषय बनी हुई थीं और उसके पीछे कारण थे उनके पति करण मेहरा। उन्होंने अपने पति के खिलाफ घरेलू उत्पीड़न की शिकायत दर्ज की थी जिससे कि उनके पति ने साफ इनकार कर दिया था।

दिव्या खोसला

दिव्या कुमार खोसला को तब शर्मिंदा होना पड़ा जब उनके पति और टी-सीरिज के मालिक भूषण कुमार पर एक मॉडल ने बलात्कार का आरोप लगा डाला। हालांकि भूषण कुमार ने इन आरोपों को गलत बताया और उनके चरित्र पर दाग लगाने का जामा पहना दिया।

सुजैन खान

सुजैन खान को भी ऋतिक रोशन के कारण एक समय काफी कुछ कहा गया। ऋतिक का नाम शादी के कई सालों बाद बार्बरा मोदी और कंगना रणौत के साथ जुड़ा था। इन सब मामलों के बाद ऋतिक और सुजैन अलग हो गए और अभिनेत्री अब अपने अलग घर में रहती हैं।

कई बड़े नाम सामने आएंगे

राज कुंद्रा के जब राज खुलेंगे तो उसकी जद में कई बड़े नाम भी सामने आएंगे। इसमें सफेदपोश से लेकर कई बड़े नौकरशाह और फिल्मी सितारे भी होंगे। मुंबई पुलिस को राज कुंद्रा की गिरफ्तारी के बाद कई अहम सुराग हाथ लगे हैं। हालांकि पुलिस अभी जांच कर रही है। इसलिए कुछ भी बोलना नहीं चाहती। मुंबई पुलिस से जुड़े सूत्रों का कहना है पोर्न इंडस्ट्री में सिर्फ राज कुंद्रा ही नहीं कई और लोग भी जुड़े हुए थे। पुलिस से पूछताछ में कई नाम ऐसे सामने आए हैं, जिन्हें अभी हिरासत में लिया जाना है। मामले की जांच कर रही टीम के एक अधिकारी ने बताया कि यह हाल-फिलहाल के दौर का सबसे बड़ा रैकेट पकड़ में आया है। जिसमें नेता से लेकर अभिनेता तक शामिल हैं।

राज कुंद्रा ने बहुत पहले अपने बारे में कहा था कि, 'मैं बहुत ही हंबल बैकग्राउंड से आता हूं। मेरे पिता लंदन में बस कंडक्टर थे और मां कारखाने में काम करती थीं। गरीबी से मुझे बहुत नफरत हो गई, इससे मुझे अमीर बनने की प्रेरणा मिली।' राज कुंद्रा का जन्म लंदन की एक मिडिल फैमिली में हुआ था।

गरीबी से बहुत नफरत

2013 में फिल्मफेयर को दिए एक इंटरव्यू ने राज कुंद्रा ने कहा था, 'मैं हंबल बैकग्राउंड से आता हूं। 45 साल पहले मेरे पिता लंदन चले गए थे। वे वहां बस कंडक्टर का काम कर रहे थे और मेरी मां कारखाने में काम करती थी। हमारे लिए यह आसान नहीं था। मैं 18 साल की उम्र में कॉलेज छोड़ने के बाद से सेल्फ मेड मैन हूं। जब भी शिल्पा मुझे लापरवाही से खर्च करने से रोकती हैं तो मैं उनसे कहता हूं कि मैंने जो पैसा कमाया है, उसे एन्जॉय करने में मुझे कोई समस्या नहीं है। मेरे गुस्से ने मुझे पुश किया है। मुझे गरीबी से इतनी नफरत थी कि मैं अमीर आदमी बनना चाहता था। और मैंने अपने जीवन में बदलाव लाया। शिल्पा ने मेरी इस बात का सम्मान किया क्योंकि वे भी सेल्फ मेड हैं।'

राज कुंद्रा ने यह भी कहा कि, 'शिल्पा के बारे में जो बात मुझे सबसे अधिक परेशान करती है, वह है उनका बहुत जल्दी हाइपर हो जाना। मैंने उसे शांत रहने के लिए कहता हूं, पहले से तुलना करें तो वे बहुत अधिक शांत भी हो गई हैं। कोई भी बड़ी खबर या बात हो जाए तो वह बुरी तरह परेशान हो जाती है। मैं उसकी लाइफ में शांति का फैक्टर हूं। उस समय राजस्थान रायल्स को 100 करोड़ का जुर्माना लगा था तो शिल्पा ने मुझसे पूछा कि तुम हंस रहे हो। इस पर मैंने कहा कि मेरे परेशान होने से कुछ नहीं बदलेगा। इसलिए फ्लो के साथ चलो।'

राज कुंद्रा ने अपने कारोबारी करियर की शुरुआत 2000 यूरो 175770 (करीब एक लाख 75 हजार रुपए) से शुरू की थी। राज कुंद्रा का जन्म लंदन में एक साधारण मध्यम वर्गीय परिवार में हुआ था। उनके पिता बालकृष्ण करीब 50 साल पहले लुधियाना से लंदन जाकर बसे थे। बालकृष्ण ने शुरुआत में कॉटन फैक्ट्री में काम किया। बाद में बस कंडक्टर बन गए। उनकी पत्नी यानी राज की मां एक ऑप्टिशियन शोरूम में काम करती थीं। जब पिता और मां की शिफ्ट में टकराव होता तो मां उन्हें अपने साथ शोरूम ले जातीं।

राज कुंद्रा ने इंटरव्यू में कहा था, मेरी दो छोटी बहनों और मुझे जल्दी ही अहसास हो गया था कि हमारे माता-पिता हमें आराम से रखने के लिए कड़ी मेहनत कर रहे हैं। ऐसे में हमें पैसे की कीमत को समझने की जरूरत है। कुंद्रा परिवार के लिए तब चीजें बदलीं, जब बालकृष्ण ने किराने का व्यवसाय शुरू किया। उन्होंने बाद में डाकघर (यह ब्रिटेन में ही संभव है) और दवा भंडार खरीदे। बालकृष्ण एक व्यवसाय से दूसरे व्यवसाय में शिफ्ट होते चले गए। यदि वह एक उत्पाद में मंदी को देखते तो दूसरा पकड़ लेते।

राज कुंद्रा उर्फ रिपु सुदन कुंद्रा ने बताया था, 18 साल की उम्र में, मेरे पिता ने मुझे एक अल्टीमेटम दिया उन्होंने मुझसे कहा कि या तो आप हमारा रेस्तरां चलाओ या छह महीने में यह साबित कर दिखाओ कि आप अपने लिए कुछ कर सकते हैं। राज कुंद्रा के मुताबिक, वह जीवन भर बर्तन नहीं धोना चाहते थे, इसलिए उन्होंने अपना बैग पैक किया।

राज कुंद्रा के मुताबिक, उस समय उनके पास जो क्रेडिट कार्ड था, उसकी क्रेडिट लिमिट 2000 यूरो थी। वह पहले दुबई गए। वहां उन्होंने आभूषण और हीरा व्यापारियों से मुलाकात की। वहां उनकी बात नहीं बनी। फिर उन्होंने दुबई से नेपाल के लिए उड़ान भरी। नेपाल में उन्होंने पश्मीना शॉल देखी। वहां पर उसकी काफी कम कीमत थी।

राज ने नेपाल में ही भांप लिया था कि पश्मीना शॉल की कीमत बहुत ज्यादा है। राज वहां से करीब 100 शॉल खरीदकर लंदन ले गए। इसके बाद उन्होंने इंग्लैंड के बड़े-बड़े क्लोथिंग ब्रांड्स से संपर्क किया। उन्हें राज कुंद्रा के पश्मीना शॉल बहुत पसंद आए। देखते ही देखते ऐसा वक्त आया पश्मीना शॉल इंग्लैंड में फैशन ट्रेंड बन गया।

नतीजा यह हुआ कि राज कुंद्रा का उस साल का टर्नओवर 20 मिलियन यूरोज छू गया। इसके बाद राज ने कभी पीछे मुड़कर नहीं देखा और करोड़ों रुपए कमाए। साल 2009 में मॉरीशस की एक कंपनी की मदद से वह राजस्थान रॉयल्स के मालिक बने। मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, राज ने 75 करोड़ रुपए में राजस्थान रॉयल्स के 11.7 फीसदी स्टेक खरीदे थे।

-पोर्न ऐप से राज कुंद्रा को मिली लाखों की पेमेंट

इस साल की शुरूआत में मुंबई पुलिस द्वारा भंडाफोड़ किए गए एक पोर्न ऐप हॉट हिट से राज कुंद्रा के बैंक खाते में नियमित रूप से पेमेंट आता रहा। हॉट हिट खुद को सर्वश्रेष्ठ भारतीय फिल्में और वेब सीरिज के रूप में वर्णित करता है। ऐप पर वीडियो कंटेंट देखने के लिए यूजर्स को कोई एक प्लान के साथ सदस्यता लेने की आवश्यकता पड़ती है। इस साल फरवरी में मुंबई पुलिस ने उभरते हुए अभिनेताओं एवं अभिनेत्रियों को अश्लील फिल्मों के लिए शूट करने के लिए मजबूर करने के आरोप में 9 लोगों को गिरफ्तार किया था। इन फिल्मों को वेबसाइटों और मोबाइल एप्लिकेशन पर स्ट्रीम किया गया था।

हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका
के प्रथम संस्करण के सुअवसर पर

हमारा देश हमारा अभिमान

पत्रिका की पूरी टीम और मेरे छोटे भाई मनोज
चतुर्वेदी जी संपादक जी को

बहुत बहुत शुभकामनाएं

मा. नरोत्तम मिश्रा, गृह मंत्री, मध्यप्रदेश

एडवोकेट अनिल शुक्ला, शासकीय अधिवक्ता, ग्वालियर हाईकोर्ट

हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका
के प्रथम संस्करण के सुअवसर पर

हमारा देश हमारा अभिमान

पत्रिका की पूरी टीम और मेरे छोटे भाई मनोज
चतुर्वेदी जी संपादक जी को

बहुत बहुत शुभकामनाएं

शिव दयाल धाकड़ तहसीलदार, बहोड़ा पुर, ग्वालियर

हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका
के प्रथम संस्करण के सुअवसर पर

हमारा देश हमारा अभिमान

पत्रिका की पूरी टीम और मेरे छोटे भाई मनोज
चतुर्वेदी जी संपादक जी को

बहुत बहुत शुभकामनाएं

दीपक शुक्ला तहसीलदार, डबरा, ग्वालियर

किशोर कुमार कन्याल
भा.प्र.से.
KISHOR KUMAR KANYAL
IAS
Addl. Collector (Dev.)
& CEO Zila Panchayat Gwalior (M.P.)

Office : Zila Panchayat, Gwalior
Ph. : (O) 0751-2340342, Mob. 9425116934
Email : ceozpgwa@mp.gov.in
kishorekanyal@gmail.com

वर्द्धशासकीय पत्र क्रमांक 23
ग्वालियर, दिनांक 26.07.2021

/ / शुभकामना संदेश / /

अत्यन्त हर्ष का विषय है कि हमारा देश हमारा अभिमान की मासिक पत्रिका का प्रकाशन किया जा रहा है। समाज की आवाज को निष्पक्ष रूप से बुलंद करने में सहायक होगी। सकारात्मक एवं रचनात्मक लेखन से पाठक दिल से ज्यादा जुडते हैं।

मैं आपके द्वारा हमारा देश हमारा अभिमान की मासिक पत्रिका के प्रकाशन हेतु अपनी शुभकामनाऐं प्रेषित करता हूँ।

(किशोर कन्याल)

प्रति,

श्री मनोज चतुर्वेदी
सम्पादक
हमारा देश हमारा अभिमान

प्रशासक राम निवास सिकरवार
तहसीलदार डबरा

कौशलेंद्र विक्रम सिंह कलेक्टर, ग्वालियर

प्रदीप शर्मा
सीएमओ विलौआ

नगर पालिका विलौआ के द्वारा हमारा देश हमारा अभिमान पत्रिका के प्रथम अंक प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनाएं सहित विलौआ के नागरिकों से अपील करती है...

1. कोरोना के बचाव हेतु दो गज की दूरी मास्क है जरूरी।
2. निकाय के करों का समय पर भुगतान करें।
3. नगर को साफ स्वच्छ बनाने हेतु कचरा घरों में ही पृथक-पृथक डिब्बो में रखे, वाहन आने पर वाहन में ही कचरा डालें।
4. सड़क / गलियों में कचरा न फेंके।
5. वृक्षों को लगाना है, शहर को सुंदर बनाना है।

हमारा देश हमारा अभिमान

मासिक पत्रिका के प्रथम संस्करण के प्रकाशित होने पर हमारा देश हमारा अभिमान की सम्पूर्ण टीम और सम्पादक मनोज चतुर्वेदी को

बहुत बहुत शुभकामनाएं

शुभकामनाकर्ता

सोनी फ्यूल्स फिलिंग स्टेशन,डबरा

भारत पेट्रोलियम कार्पोरेशन लिमिटेड, डबरा

कृष्णा गोल्ड, डबरा, प्रो. बालकृष्ण सोनी

प्रो . आशा सोनी, प्रो.रोहित सोनी

अब थैलों में मिलेगा उचित मूल्य राशन

मुख्यमंत्री श्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि अगस्त माह के पहले सप्ताह से पात्र हितग्राहियों को 10-10 किलो राशन थैलों में प्रदाय किया जाएगा। प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना में पात्र परिवारों को प्रति व्यक्ति 5-5 किलो निःशुल्क राशन तथा मुख्यमंत्री अन्नपूर्णा योजना में 5-5 किलो राशन (1 रूपए किलो की दर पर) प्रदाय किया जाएगा। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि प्रदेश में आगामी 7 अगस्त को प्रत्येक उचित मूल्य दुकान पर समारोहपूर्वक राशन का वितरण प्रारंभ किया जाएगा। इस दिन उचित मूल्य दुकानों पर मंत्री, सांसद, विधायक तथा अन्य जन-प्रतिनिधि उपस्थित रहकर कार्य सम्पन्न कराएंगे।

गड़बड़ी करने वालों के विरूद्ध की जाएगी कड़ी कार्रवाई

मुख्यमंत्री श्री चौहान ने कहा कि यह गरीबों का राशन है। इसमें जो भी व्यक्ति गड़बड़ी करेगा उसके विरूद्ध कठोर कार्रवाई की जाएगी। मुख्यमंत्री श्री चौहान ने निर्देश दिए कि यह सुनिश्चित किया जाएगा कि हर पात्र व्यक्ति को निर्धारित मात्रा में निःशुल्क एवं उचित मूल्य राशन थैले में प्राप्त हो। कार्य में पूरी पारदर्शिता रखी जाए।

उचित मूल्य दुकानों पर हों सभी व्यवस्थाएँ- मुख्यमंत्री श्री चौहान ने निर्देश दिए कि उचित मूल्य दुकानों पर सभी आवश्यक व्यवस्थाएँ सुनिश्चित की जाए। सभी दुकानों की रंगाई-पुताई एवं सफाई हो। निर्धारित प्रारूप में आवश्यक सभी सूचनाओं का प्रदर्शन किया जाए। प्रधानमंत्री गरीब कल्याण अन्न योजना का बैनर लगाया जाए। माप एवं तौल काटों का प्रमाणीकरण किया जाए।

लगभग 5 करोड़ हितग्राहियों को मिलेगा लाभ- राशन वितरण में प्रदेश के 1 करोड़ 15 लाख 46 हजार 59 परिवारों के 4 करोड़ 89 लाख 89 हजार 855 हितग्राहियों को लाभ मिलेगा। इन्हें प्रदेश की 25 हजार 423 उचित मूल्य दुकानों से राशन का प्रदाय किया जाएगा।

राधेश्याम गुप्ता डायरेक्टर

दी स्टेट सिटीजन साख सहकारी संस्था मर्यादित डबरा के द्वारा हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका के प्रथम संस्करण के आने पर

पंकज जैन डायरेक्टर

बहुत बहुत शुभकामनाएं

ओमप्रकाश सखलेचा
मंत्री
सूक्ष्म, लघु और मध्यम उद्यम् एवं
विज्ञान और प्रौद्योगिकी विभाग
मध्यप्रदेश शासन

बी-7, सिविल लाइन्स (प्रोफेसर कॉलोनी),
भोपाल (म.प्र.)
दूरभाष { मंत्रालय : 0755-2708683
निवास : 0755-2441462, 2441672
फैक्स : 0755-2441672
E-mail : op.sakhlecha@mpvidhansabha.nic.in

क्रमांक : 735 /मंत्री/सू.ल.म.उ./वि.प्रौ./20
दिनांक : 08/8/21

-: शुभकामना संदेश :-

"हमारा देश हमारा अभिमान" मसिक पत्रिका के प्रकाशन पर शुभकामना और बधाई ।

आशा है यह मसिक प्रकाशन जन मानस मे सूचनाओ के सही प्रसार से अपनी एक अलग पहचान बनाएगा और पाठको को समय समय पर सही सूचनाएँ प्राप्त होंगी ।

भवदीय

ओमप्रकाश सखलेचा

ओमप्रकाश सखलेचा

प्रति:-

श्री मनोज चतुर्वेदी जी
संपादक
हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका

लाखन सिंह यादव पूर्व मंत्री मध्यप्रदेश सरकार और बर्तमान भितरवार विधायक कांग्रेस पार्टी की ओर से

हमारा देश हमारा अभिमान

मासिक पत्रिका के प्रथम संस्करण के प्रकाशित होने पर हमारा देश हमारा अभिमान की सम्पूर्ण टीम और सम्पादक मनोज चतुर्वेदी को

लाखन सिंह पूर्व मंत्री मध्यप्रदेश एवं वर्तमान विधायक भितरवार

बहुत बहुत शुभकामनाएं

मा. शिवराजसिंह चौहान, मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

मा. नरोत्तम मिश्रा, गृह मंत्री, मध्यप्रदेश

ए. आर. प्रजापति
प्रशासक लहार एवं लहार एडीएम

महेश पुरोहित
सीएमओ डबरा नगर पालिका

नगर पालिका लहार के द्वारा हमारा देश हमारा अभिमान पत्रिका के प्रथम अंक प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनाएं सहित लहार के नागरिकों से अपील करती है...

1. कोरोना के बचाव हेतु दो गज की दूरी मास्क है जरूरी।
2. निकाय के करों का समय पर भुगतान करें।
3. नगर को साफ स्वच्छ बनाने हेतु कचरा घरों में ही पृथक-पृथक डिब्बो में रखे, वाहन आने पर वाहन में ही कचरा डालें।
4. सड़क / गलियों में कचरा न फेंके।
5. वृक्षों को लगाना है, शहर को सुंदर बनाना है।

बेहद ही भाग्यशाली मानी जाती हैं ऐसी लड़कियां

हस्तरेखा शास्त्र अनुसार जिस प्रकार से हथेली में मौजूद रेखाओं से व्यक्ति के जीवन से जुड़ी महत्वपूर्ण बातों को जाना जा सकता है। उसी प्रकार से हाथ में मौजूद चिन्हों से भी कई अहम जानकारी हासिल की जा सकती है। समुद्रशास्त्र में शरीर पर मौजूद कई शुभ-अशुभ चिन्हों का जिक्र किया गया है। यहां हम बात करने जा रहे हैं लड़कियों के हाथ में मौजूद ऐसे 5 चिन्हों के बारे में जिनके होने से उनके भाग्यशाली और धनवान होने का पता चलता है।

उंगलियों पर चक्र निशान

ज्योतिष शास्त्र अनुसार जिनके हाथ में चक्र के निशान पाये जाते हैं ऐसे व्यक्ति अपने जीवन में सब कुछ हासिल करने की क्षमता रखते हैं। माना जाता है कि जिन लड़कियों की सभी उंगली के प्रथम पोर पर चक्र का चिह्न होता है वो उनकी सभी मनोकामनाएं पूर्ण होती हैं। इन्हें समाज में प्रसिद्धि और ख्याति प्राप्त होती है। ऐसी लड़कियां काफी बुद्धिमान होती हैं।

शंख का निशान

जिन लड़कियों की उंगलियों पर शंख का निशान होता है वे बेहद ही बुद्धिमान और भाग्यशाली मानी जाती हैं। ये समाज में अपनी एक अलग पहचान बनाती हैं। इनके जीवन में धन-धान्य की कोई कमी नहीं होती। जिनकी उंगलियों के प्रथम पोर पर शंख का निशान होना वे अत्यंत ही बुद्धिमान होती हैं। जिनकी चारों उंगलियों में शंख का निशान होता है उन्हें जीवन में सारे सुख प्राप्त होते हैं।

स्वस्तिक का निशान

कहते हैं कि जिन लड़कियों की हथेली में ये चिन्ह होता है वे अत्यंत सदाचारी, सद्गुणी और धार्मिक होती हैं। इन्हें धर्म-कर्म के कार्य करके प्रतिष्ठा हासिल होती है। ऐसी लड़कियां न केवल अपने बल्कि दूसरों के जीवन में भी सकारात्मक ऊर्जा का संचार करती हैं।

मछली का निशान

हाथों पर मछली का निशान होना भी काफी शुभ माना जाता है। कहते हैं कि जिन लड़कियों के हाथों में ये शुभ चिन्ह होता है ऐसी लड़कियां अपने साथ-साथ अपने से जुड़े लोगों के लिए भी भाग्यशाली होती हैं। मछली को भगवान विष्णु का चिन्ह माना जाता है। अगर मछली की आकृति जीवन रेखा पर बनती है तो यह भाग्यशाली होने का संकेत है।

कमल का निशान

माता लक्ष्मी कमल के फूल पर विराजती हैं। जिन लड़कियों की हथेलियों में कमल का निशान होता है वे बेहद ही भाग्यशाली मानी जाती हैं। ऐसी लड़कियां बेहद ही परिश्रमी होती हैं और इनके घर में धन संपदा की कभी कोई कमी नहीं होती है। ज्योतिष के अनुसार भाग्य रेखा, जीवन रेखा, शनि पर्वत, गुरु पर्वत के साथ शुक्र पर्वत पर कमल की आकृति का बनना शुभ संकेत है। इस चिन्ह के हाथ में होने पर व्यक्ति की ख्याति दूर दराज तक फैलती हैं।

बेहद चंचल स्वभाव के होते हैं 2 मूलांक वाले

चंद्रमा मूलांक 2 का स्वामी ग्रह माना जाता है। जिन लोगों का जन्म महीने की 2, 11, 20 या 29 तारीख को हुआ हो उनका मूलांक 2 होगा। ये लोग काफी भावुक, मधुरभाषी, कल्पनाशील और कोमल हृदय के होते हैं। जैसे चंद्रमा का स्वभाव चंचल माना जाता है वैसे ही इन लोगों की मन स्थिति कभी एक जैसी नहीं रहती। ये शरीर से कमजोर लेकिन मानसिक रूप से सबल होते हैं। जानिए मूलांक 2 वालों के बारे में दिलचस्प जानकारी...

मूलांक 2 वाले किसी को ह्यनाह्ण बिल्कुल भी नहीं बोल पाते हैं। प्रेम और सौंदर्य में इन्हें महारथ हासिल होती है। इन लोगों के अंदर आत्मविश्वास की थोड़ी कमी देखने को मिलती है। इनका मन काफी अस्थिर रहता है। ये एक समय पर कई काम करने के इच्छुक होते हैं। इन्हें काम में जरा सी भी लापरवाही पसंद नहीं होती। इन लोगों का दिल चंद्रमा की तरह कोमल होता है। ये बहुत जल्दी भावुक हो जाते हैं। यहां तक की किसी के दुख को देखकर रो भी पड़ते हैं। ये छोटी-छोटी बातें दिल पर लगाकर बैठ जाते हैं। इन्हें नाचने, गाने और साज-सज्जा का काफी शौक होता है। इनकी तरफ कोई भी व्यक्ति आसानी से आकर्षित हो जाता है। ये पल भर में किसी अंजान व्यक्ति को भी अपना दोस्त बना सकते हैं। इनके अंदर दूसरों के मन की बात जानने का गुण होता है। ये लोग दूसरों की भावनाओं की काफी कद्र करते हैं। इन्हें प्रेम संबंधों में अधिक सफल नहीं देखा गया है। कई बार इन्हें लव लाइफ के चक्कर में परेशानी भी उठानी पड़ती है। हालांकि इनका पारिवारिक जीवन सुखद रहता है।

हमारा देश हमारा अभिमान

मासिक पत्रिका के प्रथम अंक के प्रकाशन पर हमारा देश हमारा अभिमान की टीम और सम्पादक मनोज चतुर्वेदी को **हार्दिक शुभकामनाएं**

सभी जिलावासियों से अपील

1. वनों को किसी भी प्रकार से नुकसान नही पहुंचाये ।
2. वृक्षों को नही काटे, वनों के जीवों को किसी भी प्रकार का नुकसान नही पहुंचाये ।
3. वन जीवों को नुकसान नही पहुंचाये।
4. वृक्षों को काटना कानूनी अपराध है ।
5. वन जीवों की हत्या,वन जीवो के साथ किसी भी प्रकार का वो कार्य करना जिससे इनकी स्वतंत्रता और इनके जीवन को क्षति पहुँच सकती है के कार्य कानूनी अपराध मैं आता है ।
6. वृक्षो को अधिक से अधिक लगाएं यह जीवन को जरुरी है।
7. कोरोना के इस आपदा मैं मास्क लगाए, वैक्सीनेशन करवाये साथ ही सावधानी बनाये रखें। **दो गज दूरी है जरूरी के नियम का पालन अवश्य करे**।

अपीलकर्ता : अभिनव पल्लव
ग्वालियर जिला वनमण्डलाधिकारी (डीएफओ) आई.एफ.एस

राम सेवक सिंह गुर्जर (बाबूजी)
पूर्व सांसद ग्वालियर एवं मुरैना प्रभारी
कांग्रेस पार्टी की ओर से

हमारा देश हमारा अभिमान

मासिक पत्रिका के प्रथम संस्करण के प्रकाशित होने पर

बहुत बहुत शुभकामनाएं

रामसेवक सिंह गुर्जर
पूर्व सांसद, ग्वालियर लोकसभा

रजत रघुवंशी (अधिवक्ता उच्च न्यायालय इंदौर) की ओर से

हमारा देश हमारा अभिमान

मासिक पत्रिका के प्रथम संस्करण के प्रकाशित होने पर हमारा देश हमारा अभिमान की सम्पूर्ण टीम और सम्पादक मनोज चतुर्वेदी को

बहुत बहुत शुभकामनाएं

रजत रघुवंशी (अधिवक्ता उच्च न्यायालय इंदौर)

संजीव श्रीवास्तव (इंदौर जिला अभियोजन अधिकारी) की ओर

हमारा देश हमारा अभिमान

मासिक पत्रिका के प्रथम संस्करण के प्रकाशित होने पर हमारा देश हमारा अभिमान की सम्पूर्ण टीम और सम्पादक मनोज चतुर्वेदी को

बहुत बहुत शुभकामनाएं

संजीव श्रीवास्तव (इंदौर जिला अभियोजन अधिकारी)

12वीं कक्षा तक पढ़ाई पूरी करने पर सरकार छात्राओं को देगी एक लाख रुपए

मध्यप्रदेश की शिवराज सरकार ने प्रदेश की बालिकाओं के लिए एक और बड़ा ऐलान किया है। बालिकाओं को आत्मनिर्भर बनाने के उद्देश्य से शुरू की गई लाड़ली लक्ष्मी योजना के स्वरूप में सरकार बदलाव करने जा रही है। मुख्यमंत्री शिवराज सिंह चौहान ने कहा है कि लाड़ली लक्ष्मी योजना को शिक्षा और रोजगार से जोड़ा जाएगा। समाज में यह धारणा स्थापित करना है कि बेटी बोझ नहीं बुढ़ापे का सहारा है।

सीएम ने कहा कि लाड़ली लक्ष्मी योजना में पंजीकृत लाड़लियां, सशक्त, समर्थ, सक्षम और आत्मनिर्भर बनकर समाज में योगदान दें, इसके लिए लाड़ली लक्ष्मियों को उच्च शिक्षा, व्यावसायिक शिक्षा, रोजगार, स्व-रोजगार आदि के लिए हरसंभव मार्गदर्शन और प्रोत्साहन उपलब्ध कराया जाएगा। लाड़ली लक्ष्मी योजना में बालिकाओं के आर्थिक सशक्तिकरण, कौशल संवर्धन और उन्हें आत्म-निर्भर बनाने के लिए आवश्यक व्यवस्था की जाएगी। इसके लिए योजना को नया स्वरूप प्रदान किया जाएगा। जिसके तहत अब पंजीकृत बालिकाओं को अब सरकार 1 लाख की प्रोत्साहन राशि देगी। योजना में पंजीकृत बालिकाओं को 12वीं कक्षा तक पढ़ाई पूरी करने पर आगे की शिक्षा या व्यवसायिक प्रशिक्षण के लिए प्रोत्साहन स्वरूप 20 हजार रूपए की राशि उपलब्ध कराई जाएगी। एक लाख रूपए में से शेष 80 हजार रूपए का भुगतान 21 वर्ष की आयु पूर्ण करने पर होगा।

117 डिप्लोमा और 282 सर्टिफिकेट कोर्स होंगे शुरू- मंत्री यादव

उच्च शिक्षा मंत्री मोहन यादव का कहना है कि नए शिक्षा सत्र से 107 सरकारी कॉलेजों में डिप्लोमा और सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम शुरू किए जा रहे हैं. इनमें 117 डिप्लोमा और 282 से ज्यादा सर्टिफिकेट कोर्स शुरू किए जाएंगे. सर्टिफिकेट और डिप्लोमा के 15 कोर्स तैयार किए गए है. सर्टिफिकेट कोर्स 6 महीने का और डिप्लोमा कोर्स एक साल का होगा। छात्र-छात्राएं डिग्री करते हुए सर्टिफिकेट कोर्स भी कर सकेंगे।

इंटर्नशिप के बाद मिलेगी नौकरी

उच्च शिक्षा मंत्री मोहन यादव का कहना है कि कोर्स के दौरान छात्र-छात्राओं को इंटर्नशिप की व्यवस्था भी कराई जाएगी. देश भर के हर जिलों में नोडल अधिकारी की नियुक्ति कराई जाएगी. नोडल अधिकारी की निगरानी में छात्र-छात्राओं को कंपनियों में ट्रेनिंग कराई जाएगी. ट्रेनिंग के बाद उसी कंपनी में नौकरी भी दिलाई जाएगी. इसका मुख्य उद्देश्य यही है कि कोर्स करने के तुरंत बाद ही छात्र-छात्राओं को नौकरी मिल सके।

भोज मुक्त विश्वविद्यालय में भी रोजगार मूलक कोर्सेस

भोज मुक्त विश्वविद्यालय में भी अब नए शिक्षा सत्र से रोजगार मूलक कोर्स शुरू होने जा रहे है. कोर्स के पूरा होने के साथ ही स्टूडेंट्स को नौकरी की भी गारंटी रहेगी. जिस भी कंपनी में स्टूडेंट्स ट्रेनिंग करेगा उसी कंपनी में जॉब मिलेगी. शॉर्ट टर्म कोर्सेस के जरिए अब छात्र छात्राओं को जॉब के अवसर महाविद्यालय विश्वविद्यालय मुहैया कराने जा रहे हैं।

सुरेश राजे डबरा विधायक (कांग्रेस)
मध्यप्रदेश की ओर से

हमारा देश हमारा अभिमान

मासिक पत्रिका के प्रथम संस्करण के प्रकाशित होने पर हमारा देश हमारा अभिमान की सम्पूर्ण टीम और सम्पादक मनोज चतुर्वेदी को

बहुत बहुत शुभकामनाएं

सुरेश राजे डबरा विधायक (कांग्रेस)

क्रिप्टोकरेंसी को लेकर भारतीय युवाओं में क्रेज

अमीर हर कोई बनना चाहता है। लेकिन आज के दौर में युवाओं में अमीर बनने का ज्यादा क्रेज है। कुछ युवा जल्दी अमीर बनने के लिए शॉर्टकट रास्ते पर चल पड़ते हैं, और जोखिम को नजरअंदाज कर देते हैं। दरअसल, पिछले कुछ महीनों में युवाओं में क्रिप्टोकरेंसी में निवेश को लेकर क्रेज बढ़ा है।

बीते दिनों क्रिप्टोकरेंसी ने जिस तेजी से निवेशकों को मालामाल किया है, उससे क्रिप्टोकरेंसी में निवेश बढ़ा है। इस साल अप्रैल में बिटक्वाइन का भाव तेजी से बढ़कर 65,000 डॉलर के करीब पहुंच गया था। फिलहाल गिरावट के बावजूद भाव 30,000 डॉलर के करीब चल रहा है। भारत में तेजी से युवा क्रिप्टोकरेंसी के पीछे भाग रहे हैं, इसकी वजह यह है कि इन्वेस्टमेंट का ड्यूरेशन काफी कम होता है, और रिटर्न खूब उम्मीद होती है। बिटक्वाइन में निवेश को लेकर गूगल में सर्च करने वालों की तादाद तेजी से बढ़ती जा रही है। लेकिन इसके जोखिम भी हैं। जिसके बारे में लोगों को पूरी जानकारी नहीं है।

पिछले एक साल में क्रिप्टोकरेंसी में निवेश 200 मिलियन डॉलर से बढ़कर 40 बिलियन डॉलर तक पहुंच चुका है। इसमें बिटक्वाइन, डोजिक्वॉइन, इथीरियम शामिल है। क्रिप्टोकरेंसी में निवेश करने वाले अधिकतर 18-35 साल के युवा हैं। भारत में क्रिप्टो में ट्रेडिंग करने वालों की संख्या 1.5 करोड़ के करीब है। जबकि अमेरिका में इनकी संख्या 2.3 करोड़ और यूके में महज 2.3 मिलियन है।

क्रिप्टोकरेंसी में निवेश के बड़े खतरे

1 क्रिप्टोकरेंसी की कीमत जितनी तेजी से बढ़ती है, उतनी ही तेजी से गिरती भी है। अधिकतर निवेशक समझ नहीं पाते हैं कि किस वजह से गिरावट आ रही है और फिर वे घबराकर नुकसान में क्रिप्टोकरेंसी बेच देते हैं। पिछले दो महीनों में बिटक्वाइन का भाव गिरकर आधा से कम रह गया है।

2 भारत में क्रिप्टोकरेंसी को लेकर अनिश्चितता बरकरार है। क्योंकि क्रिप्टोकरेंसी को कोई मान्यता नहीं मिली हुई है। भारतीय रिजर्व बैंक (RBI) ने क्रिप्टो पर प्रतिबंध लगाया हुआ है और उसने बैंकों और फिनटेक कंपनियों को कह दिया है कि वर्चुअल करेंसी में डील करने वाली संस्थाओं को सेवा देना बंद कर दें। ऐसे में कभी भी इसके गैरकानूनी घोषित किए जाने का खतरा बना रहता है। इसके बावजूद अगर आप इसमें निवेश करते हैं तो जोखिम बना रहता है।

3 सरकारों का मानना है कि क्रिप्टोकरेंसी के साथ एक खतरा ये भी है कि इसका इस्तेमाल मनी लॉन्ड्रिंग के तौर पर किया जा सकता है। जिससे देश की सुरक्षा को खतरा पैदा हो सकता है। इसलिए क्रिप्टो को भारत में नियामक से मंजूरी नहीं मिली है। भारत सरकार ने अभी तक क्रिप्टोकरेंसी को लेकर कोई बिल नहीं पास किया है।

4 क्रिप्टो की चाल देश दुनिया की खबरें भी तय करती हैं। पिछले दिनों टेस्ला के मालिक एलन मस्क के ट्वीट से बिटक्वाइन में भारी गिरावट देखने को मिली। छोटे निवेशकों के लिए ये एक बड़ा खतरा है।

5 साइबर सिक्योरिटी से संबंधित खतरे और क्रिप्टोकरेंसी का उपयोग करने को लेकर बनी अनिश्चितता भी एक बड़ी वजह है, जिससे निवेशकों को नुकसान हो सकता है। क्रिप्टोकरेंसी का लेनदेन एक कोड और पासवर्ड के जरिए किया जाता है। जिसे भूलने पर इसमें लगाई पूरी रकम डूब सकती है।

6 क्रिप्टोकरेंसी का सबसे बड़ा नुकसान यह है कि इसके लिए कोई नियम नहीं है। इसे कंट्रोल करने के लिए कोई देश, सरकार या संस्था नहीं है जिससे इसकी कीमत कभी बहुत ज्यादा बढ़ जाती है तो कभी बहुत ज्यादा गिर जाती है, ऐसे में इसमें इन्वेस्ट करना जोखिम भरा है।

7 क्रिप्टोकरेंसी में स्कैम और फ्रॉड का खतरा बना रहता है। अमेरिका के फेडरल ट्रेड कमीशन के मुताबिक अक्टूबर- 2020 के बाद से मई-2021 तक करीबन 7,000 लोगों को क्रिप्टोकरेंसी की डीलिंग में चपत लग चुकी है। जिससे लोगों को करीब 585।43 करोड़ का नुकसान हुआ है।

कोरोना से पूरी दुनिया क

समय से प

कोरोना से दुनिया में बड़ा बदलाव आया है। इसके चलते पूरी दुनिया सिमट कर एक घर में रह गई है और इसका असर बच्चों के स्वास्थ्य पर भी हुआ है। हाल ही, में इटेलियन जर्नल ऑफ पीडियाट्रिक की आई रिपोर्ट की मानें, तो पिछले साल लॉकडाउन की शुरुआत के बाद से, बच्चों में समय से पहले प्यूबर्टी आने के मामलों में तेजी से बढ़ोतरी हुई है। इस रिपोर्ट की मानें, तो मार्च से सितंबर 2020 तक ज्यादातर माता-पिता ने इस बात की शिकायत की है कि छोटी उम्र में ही बच्चियों को पीरियड्स हो रहे हैं और लड़कों में प्यूबर्टी (यौवन) के तमाम लक्षण नजर आ रहे हैं।

प्रिकॉशियस प्यूबर्टी एक ऐसी स्थिति है जिसमें एक बच्चा जल्दी यौवन तक पहुंच जाता है। ऐसे में बच्चे का शरीर सामान्य से पहले एक वयस्क शरीर में विकसित होने के लक्षण दिखाना शुरू कर देता है। लड़कियों में यह 8 साल की उम्र में होता है और लड़कों में यह 9 साल की उम्र में होता है। इसके चलते बच्चों के पीरियड्स और हाईट बढ़ने के जुड़ी तमाम परेशानियां होती हैं। होता यह है कि शरीर खुद ही मैच्योर होने लगता है और हड्डियां मजबूत हो कर बढ़ना बंद कर देती हैं। यह इसलिए भी माता-पिता के लिए चिंता की बात है कि असामयिक यौवन वाले बच्चों का इलाज नहीं किया जाता है और उनका शरीर पूरी तरह से ग्रोथ नहीं कर पाता है। प्रिकॉशियस प्यूबर्टी के पीछे कई कारण हैं, जिनमें कुछ शरीररिक तो कुछ वातावरण से जुड़े कारक सम्मिलित है। कुछ प्राथमिक कारणों की बात करें, तो ये अंडाशय, अधिवृक्क ग्रंथियों, पिट्यूटरी ग्रंथि या मस्तिष्क पर ट्यूमर या वृद्धि के कारण हो सकता है। अन्य कारणों में केंद्रीय तंत्रिका तंत्र की समस्याएं, बीमारी का पारिवारिक इतिहास या कुछ दुर्लभ आनुवंशिक सिंड्रोम शामिल हो सकते हैं। कई मामलों में, विकार के लिए कोई कारण नहीं पाया जा सकता है।

ध्यान रहे कि प्रिकॉशियस प्यूबर्टी वाले बच्चे अपने साथियों के साथ तुलना में जल्दी से बढ़ सकते हैं और लंबे हो सकते हैं। लेकिन, क्योंकि उनकी हड्डियां सामान्य से अधिक तेजी से परिपक्व होती हैं, वे अक्सर सामान्य से पहले बढ़ने से रोकते हैं। प्रारंभिक यौवन की शुरुआत, खासकर जब यह बहुत छोटे बच्चों में होता है, तो वे उन्हें सामाजिक और भावनात्मक रूप से परेशान कर सकता है। लड़कियां और लड़के जो अपने साथियों की तुलना में बहुत पहले प्यूबर्टी की स्टेज में आ जाते हैं, वे अपने शरीर में होने वाले परिवर्तनों के बारे में बेहद आत्म-जागरूक हो सकते हैं। यह आत्मसम्मान को प्रभावित कर सकता है और अवसाद या मादक द्रव्यों के सेवन के जोखिम को बढ़ा सकता है। इसलिए माता-पिता को ऐसे बच्चों का खास ख्याल रखना चाहिए।

गोनैडोट्रोपिन-डिपेंडेंट

गोनैडोट्रोपिन-डिपेंडेंट को केंद्रीय अनिश्चित यौवन के रूप में भी जाना जाता है। यह युवावस्था का सबसे आम प्रकार है। अधिकांश लड़कियों और आधे युवा लड़कों में यह होता है। इस प्यूबर्टी की शुरुआत गोनाडोट्रोपिन नामक हार्मोन के प्रारंभिक स्राव से होती है। गोनैडोट्रोपिन में ल्यूटिनाइजिंग हार्मोन (एलएच) और कूपिक उत्तेजना हार्मोन (एफएसएच) शामिल हैं। लड़कियों में, अनिश्चित यौवन हाइपोथैलेमस, पिट्यूटरी ग्रंथियों और अंडाशय की प्रारंभिक परिपक्वता के कारण हो सकता है। लेकिन ज्यादातर मामलों में, कोई कारण नहीं पाया जा सकता है। गोनैडोट्रोपिन-इंडिपेंडेंट एक असामयिक यौवन का रूप है जो कि गोनैडोट्रॉपिंस के शुरुआती रिलीज से शुरू नहीं होता है। इसके बजाय यह सेक्स हार्मोन के उच्च स्तर के शुरुआती स्राव के कारण होता है। इनमें पुरुष एण्ड्रोजन और महिला एस्ट्रोजेन शामिल हैं।

अल्ट्रासाउंड (सोनोग्राफी): यह परीक्षण रक्त वाहिकाओं, ऊतकों और अंगों की छवियों को बनाने के लिए ध्वनि तरंगों और एक कंप्यूटर का उपयोग करता है। यह अधिवृक्क ग्रंथियों और अंडाशय को देखने के लिए किया जा सकता है।

एमआरआई: यह परीक्षण शरीर में ऊतकों की विस्तृत छवियां बनाने के लिए बड़े मैग्नेट और एक कंप्यूटर का उपयोग करता है।

प्रिकॉशियस प्यूबर्टी का उपचार

- प्रिकॉशियस प्यूबर्टी का कोई खास उपचार नहीं है। इसके जोखिम कारकों से बचा नहीं जा सकता। लेकिन, ऐसी चीजें हैं जो आप अपने बच्चे के अनिश्चित यौवन के विकास की संभावना को कम करने के लिए कर सकते है।
- बच्चे को एस्ट्रोजन और टेस्टोस्टेरोन के बाहरी स्रोतों से दूर रखें, जैसे कि घर में वयस्कों के लिए प्रिस्क्रिप्शन दवाएं या एस्ट्रोजन या टेस्टोस्टेरोन युक्त आहार की खुराक।
- बच्चे को घर का स्वस्थ भोजन खिलाएं।
- वजन संतुलित रखने प्रोत्साहित करें।
- योग या एक्सरसाइज करवाएं।
- स्ट्रेस फ्री और खुश रहने के लिए प्रेरित करें।

की स्थिति में हुआ बदलाव

हले यौवन

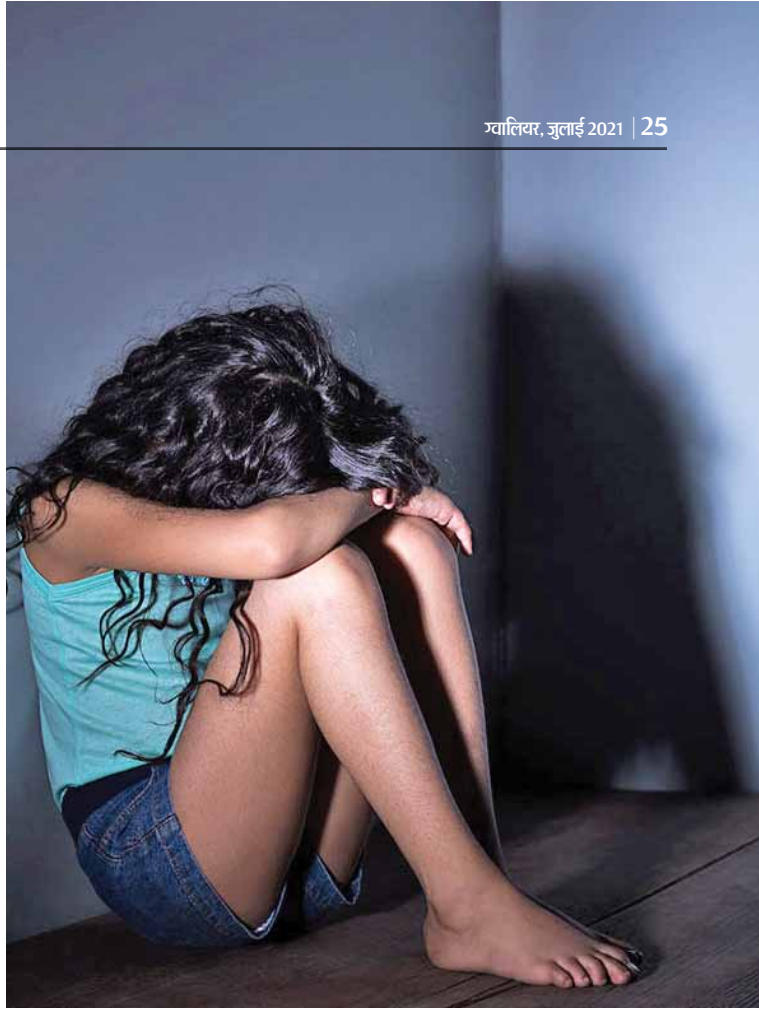

कठिन होता है बदलाव

युवावस्था से जल्दी गुजरना बच्चों के लिए भावनात्मक और सामाजिक रूप से भी कठिन हो सकता है। उदाहरण के लिए, असामयिक यौवन के साथ लड़कियों को उनके किसी भी पीरियड से पहले उनके पीरियड्स या बढ़े हुए शरीर के बारे में भ्रम या शर्मिंदगी हो सकती है। उनका इलाज अलग तरह से किया जा सकता है क्योंकि वे अधिक उम्र के दिखते हैं। इसके अलावा भी प्रिकॉशियस प्यूबर्टी के चलते बच्चों में भावनाएं और व्यवहार भी असामयिक यौवन के साथ बदल सकते हैं। लड़कियां मूडी और चिड़चिड़ी हो सकती हैं। लड़के अधिक आक्रामक हो सकते हैं।

प्रिकॉशियस प्यूबर्टी के लक्षण

- यौवन में हड्डियों और मांसपेशियों का तेजी से विकास ।
- शरीर के आकार में परिवर्तन।
- शरीर की प्रजनन क्षमता का विकास • मुंहासे
- आवाज का गहरा होना
- जांघों और अंडरआर्म के बाल बढ़ना।
- चेहरे के बालों का बढ़ना।
- आंतरिका अंगों का बढ़ना।
- सहज इरेक्शन।
- शुक्राणु का उत्पादन।
- मनोदशा में बदलाव।
- मूड स्विंग्स।
- आक्रामकता में वृद्धि।
- अन्य सहपाठियों की तुलना में पहले लंबा हो जाना।
- हाईट न बढ़ना।
- समय से पहले ही पीरियड्स शुरू हो जाना।

प्रिकॉशियस प्यूबर्टी में जोखिम

- प्रिकॉशियस प्यूबर्टी लड़कियों में विकसित होने की आशंका अधिक होती है। पर इसके अंदर कई और कारक भी हैं, जिसके चलते प्रिकॉशियस प्यूबर्टी का जोखिम तेजी से बढ़ने की संभावना रहती है।
- अंडाशय, अधिवृक्क ग्रंथियों, पिट्यूटरी ग्रंथि या मस्तिष्क पर ट्यूमर या वृद्धि
- केंद्रीय तंत्रिका तंत्र की समस्याएं
- रोग का पारिवारिक इतिहास
- एक दुर्लभ आनुवंशिक सिंड्रोम
- मोटापा,हाइपोथायरायडिज्म का खतरा
- केंद्रीय तंत्रिका तंत्र से जुड़ी परेशानी होने पर ट्यूमर, ल्यूकेमिया या अन्य स्थितियों के लिए विकिरण उपचार से युवावस्था का खतरा बढ़ सकता है।

प्रिकॉशियस प्यूबर्टी की जांच

स्वास्थ्य सेवा प्रदाता आपके बच्चे के लक्षणों और स्वास्थ्य इतिहास के बारे में पूछेगा। वह परिवार के स्वास्थ्य इतिहास के बारे में भी पूछ सकता है। बच्चे के हार्मोन के स्तर को मापने के लिए रक्त परीक्षण हो सकते हैं जैसेः -ल्यूटिनाइजिंग हार्मोन परीक्षण, फोलिकल स्टूमिलेशन होर्मोन परीक्षणो, टेस्टोस्टेरोन टेस्ट,थायराइड हार्मोन परीक्षण, गोनैडोट्रोपिन-उत्तेजक हार्मोन परीक्षण आदि। एक्स-रेः यह परीक्षण शरीर के अंदर ऊतकों की छवियों को बनाने के लिए विकिरण की एक छोटी मात्रा का उपयोग करता है। बाएं हाथ और कलाई पर एक एक्स-रे किया जा सकता है। यह बच्चे की हड्डी की उम्र का अनुमान लगा सकता है। अनिश्चित यौवन के साथ, हड्डी की उम्र अक्सर कैलेंडर उम्र से अधिक होती है।

किताबों का क्रेज बरकरार, नहीं लुभाती ई-बुक्स

किताबें पढ़ना अच्छी आदत है। पढ़ने-लिखने का शौक रखने वाले लोगों की दुनिया में कोई कमी नहीं है। हालांकि, कई लोगों का मानना है कि आज की युवा पीढ़ी ई-रीडर्स के जरिए इलेक्ट्रोनिक फॉर्म में किताबें पढ़ना पसंद करती है। मगर एक शोध ने इस बात को सिरे से खारिज किया है। इस शोध के अनुसार, आज की युवा पीढ़ी भी ई-रीडर्स के बजाय कागजी किताबों को ज्यादा तवज्जो देती है। उनके बीच यह क्रेज उनसे ज्यादा उम्र के लोगों से भी अधिक है। 'इलेक्ट्रोनिक मार्केट्स' नाम के जरनल में छपे इस शोध ने इस मिथक को तोड़ दिया है।

इस शोध में एक बात सामने आई की वयस्क पाठकों के विभिन्न आयुवर्गों में ई-बुक्स को रखने और देखने का अलग तरीका है। फिजिकल बुक्स के लिए उनके बीच अलग लगाव है। यह रिपोर्ट उन कंपनियों के बेहद अहम है, जो डिजिटल तरीके से किताबों की बिक्री की पैरवी करते हैं।

रिसर्चर्स ने उम्र के आधार पर चार समूह का निर्धारण किया। पहले समूह में छोटे बच्चे, दूसरे समूल में नौजवान और तीसरे व चौथे समूह में मिलिनियल (21वीं शताब्दी में वयस्त होने वाले लोगों) को शामिल किया। तीसरे और चौथे समूह के लोगों को कॉलेज और उससे ऊपर के आयु वर्ग के आधार पर विभाजित किया। इस शोध में शामिल लोगों ने एकमत राय दी की किताबों के मामले में 'स्वामित्व' काफी अहम भूमिका निभाता है। यदि उनका किसी किताब पर पूरा नियंत्रण नहीं है, तो उसे प्राथमिकता नहीं दी जाती। उदाहरण के लिए वे डिजिटल बुक्स को कई बार एक से अधिक डिवाइस पर कॉपी नहीं कर सकते।

इसके अलावा कई लोगों ने कहा कि ई-बुक्स की अपनी सीमाएं हैं। इन्हें दोस्तों के साथ शेयर करना, गिफ्ट करना और सर्कुलेट करना कठिन है। साथ ही इन किताबों की बिक्री भी नहीं की जा सकती, जो इनकी वैल्यू और कम करता है। ज्यादातर लोगों ने कहा कि कागजी किताबों के साथ जुड़ाव अधिक होता है। सभी आयुवर्ग के लोगों ने कहा कि किताबों की उनके बचपन में अहम भूमिका रही है। बहुत से लोगों ने नई किताबों के रंग, महक, स्पर्श की अलग-अलग व्याख्या भी की। लोगों ने अपनी युवा अवस्था में कागजी नोट और हाइलाइटिंग की आदत को भी स्वीकार किया।

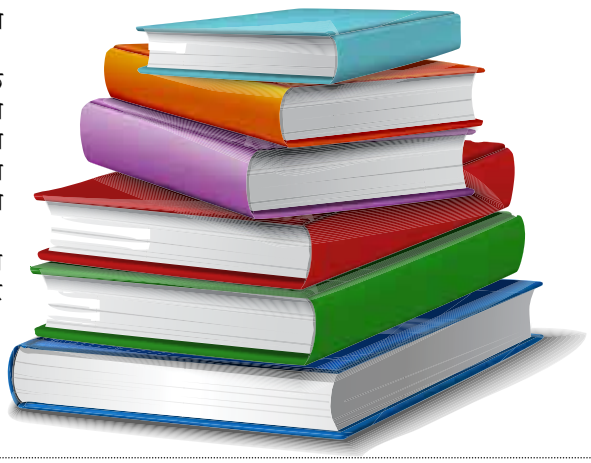

कई लोगों ने माना कि वे किताबों का संग्रहण करने में रुचि रखते हैं। ई-बुक्स में ये सुविधा नहीं मिलती। हालांकि, ई-बुक्स की खरीदारी की मुख्य वजह यही है कि वे जगह नहीं घेरती। युवाओं ने कहा कि ई-बुक्स की खरीदारी किसी चीज को किराए पर लेने के समान है क्योंकि वह वस्तु आपकी निजी नहीं होती। हालांकि, हर वर्ग ने फिजिकल किताबों को अपने-अपने नजरिए से समझाया। ई-रीडर में युवा वर्ग को कई अन्य सहुलियतें भी मिलती हैं, जैसे कम वजन और टैक्स को बड़ा कर पढ़ पाने की आजादी। अधिक उम्र के पाठकों ने कहा कि वे ई-बुक्स के साथ तालमेल नहीं बिठा पाए, इसलिए कागजी किताबें बेहतर हैं।

एक कंपनी पर सप्ताह में 1,738 बार हुआ हमला

महामारी में साइबर अटैक 6 माह में 29% का इजाफा

पिछले साल महामारी की शुरुआत में ही बड़े स्तर पर साइबर अटैक की चेतावनी दी गई थी। उसके बाद कई बड़े साइबर अटैक हुए जिनमें कोलोनियल पाइपलाइन, तोशिबा और सबसे बड़ी मीट सप्लाई करने वाली कंपनी जेबीएस (JBS) पर हुए अटैक शामिल हैं।

भारतीय संस्थानों पर हर सप्ताह औसतन 1,738 बार साइबर अटैक हुए हैं, जबकि ग्लोबली यह संख्या 757 प्रति सप्ताह है। पिछले छह महीनों में भारत में स्वास्थ्य संस्थाओं, एजुकेशन और रिसर्च, सरकार और मिलिट्री, इंश्योरेंस और लीगल, मैन्यूफैक्चरिंग जैसी संस्थाओं पर हैकर्स के निशाने पर सबसे ज्यादा रहे हैं। पिछले साल महामारी की शुरुआत में ही बड़े स्तर पर साइबर अटैक की चेतावनी दी गई थी। उसके बाद कई बड़े साइबर अटैक हुए जिनमें कोलोनियल पाइपलाइन, तोशिबा और सबसे बड़ी मीट सप्लाई करने वाली कंपनी जेबीएस (JBS) पर हुए अटैक शामिल हैं। अब एक नई रिपोर्ट में दावा किया गया है कि पिछले छह महीने में संस्थानों पर होने वाले साइबर अटैक में 29 फीसदी का इजाफा देखने को मिला है। ये साइबर अटैक यूरोप, मध्य पूर्व और अफ्रीका के देशों में हुए हैं। अमेरिका और एशिया प्रशांत में भी बड़े स्तर पर साइबर अटैक हुए हैं। संस्थानों पर होने वाले रैनसमवेयर अटैक 93 फीसदी का इजाफा हुआ है। अन्य देशों के मुकाबले हैकर्स के लिए भारत सबसे बड़ा बाजार रहा है।

चेक प्वाइंट : रिपोर्ट से मिली जानकारी

साइबर सिक्योरिटी फर्म चेक प्वाइंट ने 'Cyber Attack Trends: 2021 Mid-Year' नाम से एक

रिपोर्ट जारी की है जिसमें तमाम तरह की संस्थाओं जैसे सरकारी, स्वास्थ्य और अन्य पर होने वाले साइबर अटैक के बारे में जानकारी दी गई है। रिपोर्ट के मुताबिक केवल अमेरिका में होने वाले साइबर अटैक में 17 फीसदी का इजाफा हुआ है। यहां हर सप्ताह औसतन 443 साइबर हमला हुआ है। वहीं यूरोप में इसमें 27 फीसदी की बढ़ोत्तरी हुई है। यूरोप में हर सप्ताह किसी संस्थान पर औसतन 777 बार साइबर अटैक हुए हैं, जबकि लैटिन अमेरिका में 19 फीसदी की बढ़ोत्तरी हुई है। अमेरिका और एशिया प्रशांत के देशों में हर सप्ताह किसी संस्थान पर औसतन 1,338 बार साइबर अटैक हुआ है जो कि इस साल के शुरुआती महीनों से 13 फीसदी अधिक है।

भारत रहा हैकर्स का सबसे बड़ा बाजार

चेक प्वाइंट की रिपोर्ट के मुताबिक हैकर्स के लिए भारत पहले नंबर पर था। भारतीय संस्थानों पर हर सप्ताह औसतन 1,738 बार साइबर अटैक हुए हैं, जबकि ग्लोबली यह संख्या 757 प्रति सप्ताह है। पिछले छह महीनों में भारत में स्वास्थ्य संस्थाओं, एजुकेशन और रिसर्च, सरकार और मिलिट्री, इंश्योरेंस और लीगल, मैन्यूफैक्चरिंग जैसी संस्थाओं पर हैकर्स के निशाने पर सबसे ज्यादा रहे हैं।

रैनसमवेयर अटैक में भी भारी इजाफा

चेक प्वाइंट की रिपोर्ट में कहा गया है कि रैनसमवेयर अटैक में भी भारी इजाफा हुआ है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि किसी संस्थान के सिस्टम को हैक करके डाटा चोरी करना और डाटा के बदले पैसे वसूलना हैकर्स के लिए आम बात हो गई है। रिपोर्ट में यह भी कहा गया है कि हैकर्स अब नए तरह के मैलवेयर जैसे -Trickbot, Dridex, Qbot और IcedID का इस्तेमाल कर रहे हैं।

महिला खिलाड़ी और खेलतंत्र का मर्दवादी रवैया : क्यों पहनने पड़ते हैं छोटे कपड़े?

पुरुषवादी समाज महिला एथलीटों के प्रति एक ख़ास रवैया रखता है और यही कारण है कि महिला खिलाड़ियों की प्रतिभा को दरकिनार कर उनके कपड़ों, उनके लुक पर अधिक ध्यान दिया जाता है। किसी भी खिलाड़ी का मूल्यांकन करते हुए उसकी एथलैटिक क्षमता और उसकी निपुणता पर ध्यान केंद्रित करना आवश्यक है लेकिन महिला खिलाड़ियों के मामले में तस्वीर बिलकुल उलटी दिखती है। नूतन यादव महिला समानता और लैंगिक मुद्दों पर लगातार लिखती रही हैं। इस लेख के माध्यम से उन्होंने खेल की दुनिया के भीतर महिला खिलाड़ियों की ड्रेस कोड और उसे लेकर मौजूद मानसिकता पर गंभीर और सार्थक सवाल उठाएं हैं-

पुरुषवादी समाज महिला एथलीटों के प्रति एक ख़ास रवैया रखता है और यही कारण है कि महिला खिलाड़ियों की प्रतिभा को दरकिनार कर उनके कपड़ों, उनके लुक पर अधिक ध्यान दिया जाता है। किसी भी खिलाड़ी का मूल्यांकन करते हुए उसकी एथलैटिक क्षमता और उसकी निपुणता पर ध्यान केंद्रित करना आवश्यक है लेकिन महिला खिलाड़ियों के मामले में तस्वीर बिलकुल उलटी दिखती है। उनके खेल को उनके द्वारा बनाए गए रिकॉर्ड्स को छोड़कर उनके कपड़ों, दैहिक गठन, उनकी त्वचा आदि पर बात की जाती है। अगर वह गर्भवती हो गईं तब तो यह मान लिया जाता है कि उनका करियर खत्म हो गया।

आमतौर पर महिला खिलाड़ियों की सुडौल मांसपेशियों वाली देह को बहुत सकरात्मक रूप से नहीं देखा जाता। उदाहरण के लिए महिला बॉक्सर की मसल्स वाली देह को देखने से पुरुष परहेज करते हैं। यहां तक कि वे महिलाएं जो बॉडी-बिल्डिंग से जुडी हैं उनकी बॉडी भी पुरुषों की बॉडी जैसे सराहना नहीं पाती। अपनी सुगठित देह को लेकर वे बॉडी शेम्ड हो जाती हैं।

वहीं दूसरी ओर टेनिस और स्केटिंग जैसे खेलों में महिला खिलाड़ियों की मजबूत जांघों पर मर्दवादी समाज की नजर हमेशा बनी रहती है। यही कारण है कि पत्र-पत्रिकाओं में

टेनिस खिलाड़ियों की स्कर्ट की लंबाई का मुद्दा हमेशा छाया रहता है। पूरी दुनिया में सेरेना विलियम्स से लेकर सानिया मिर्ज़ा तक की जांघों और स्कर्ट की लम्बाई पर अलग-अलग तरह के विचार देखने को मिलते हैं। अक्सर पत्र-पत्रिकाओं में आकर्षक और सुन्दर महिला खिलाड़ियों के उत्तेजक पोज़ दिखते हैं, वहीं पुरुष खिलाड़ियों की तस्वीरों के केंद्र में उनकी परफॉरमेंस उनके परिश्रम को दिखाती तस्वीरें प्रमुखता से छापी जाती हैं। महिला खिलाड़ियों के पसीने से भीगी देह देखने को लोग लालायित भी रहते हैं।

डॉ. सुनील शर्मा नेत्र रोग विशेषज्ञ की ओर से

हमारा देश हमारा अभिमान

मासिक पत्रिका के प्रथम संस्करण प्रकाशन पर

बहुत बहुत शुभकामनाएं

डॉ. सुनील शर्मा (एमएस)
फेको एवं रेटीना सर्जन
फेलो एस.एस.जी. हॉस्पिटल,
राजकोट, रजि. नं. MP-4058

डॉ. अदिति शर्मा (एमएस)
ग्लूकोमा सर्जन
फैलो अरविंद आई हॉस्पिटल, मदैरे
रजि. नं. MP-4874

118, कैलाश विहार, इनकम टैक्स ऑफिस के सामने, सत्कार गेस्ट हाउस के पीछे,
सिटी सेंटर, ग्वालियर (मप्र) फोन नं. 0751-4922350
Email : dr.sunilsharma41077@gmail.com

बच्चों की आंखें हो रही कमजोर, टेंशन में दुनिया के वैज्ञानिक

ब्रिटेन के बच्चों में निकट दृष्टि दोष या मायोपिया बढ़ रहा है और पिछले 50 बरस में निकट दृष्टि दोष से पीड़ित बच्चों की संख्या दोगुनी हो गई है। दुनियाभर की बात करें तो एक अनुमान के अनुसार 2050 तक दुनिया की आधी आबादी निकट दृष्टि दोष का शिकार होगी। हालांकि निकट दृष्टि दोष के कारणों की बात की जाए तो इसका एक कारण पारिवारिक हो सकता है और दूसरा पर्यावरण से जुड़ा है, जो बच्चे के बहुत अधिक समय तक घर के भीतर रहने की वजह से हो सकता है।

ज्यादातर लोगों में, निकट दृष्टि दोष आनुवांशिकी और पर्यावरणीय दोनों कारकों के मिश्रण से विकसित होता है। लेकिन ऐसे प्रमाण मिले हैं कि आधुनिक जीवनशैली भी निकट दृष्टि दोष होने का एक कारण हो सकती है। हालांकि वैज्ञानिक अभी भी पूरी तरह से निश्चित नहीं हैं कि ऐसा क्यों होता है। उदाहरण के लिए, शोध से पता चलता है कि बच्चा जितना समय घर से बाहर बिताता है, वह निकट दृष्टि दोष विकसित करने के उनके जोखिम में महत्वपूर्ण भूमिका निभा सकता है।

शोधकर्ता निश्चित नहीं हैं कि ऐसा क्यों

अधिकांश अध्ययनों से पता चलता है कि जो बच्चे घर से बाहर अधिक समय बिताते हैं, उनमें निकट दृष्टि दोष विकसित होने की संभावना कम होती है। इसी तरह जिन बच्चों को स्कूल के घंटों के दौरान घर से बाहर अधिक समय बिताना पड़ता है, उनमें निकट दृष्टि दोष की शुरुआत की दर घर से बाहर समय नहीं बिताने वाले बच्चों की तुलना में कम होती है। लेकिन शोधकर्ता अभी भी निश्चित नहीं हैं कि ऐसा क्यों है। एक सिद्धांत यह है कि घर के भीतर के मुकाबले बाहर के प्रकाश का उच्च स्तर हमारे रेटिना रिसेप्टर्स (आंखों में प्रकाश संकेतों को संसाधित करने वाली नसें) में अधिक डोपामाइन जारी करता है, जिससे निकट दृष्टि दोष होने की आशंका कम होती है।

दीवारें देखते रहने से हो सकता है दृष्टिदोष

एक अन्य सुझाव यह है कि बच्चों द्वारा आमतौर पर घर से बाहर की जाने वाली ढेरों शारीरिक गतिविधियां उनकी आंखों में दृष्टिदोष को पनपने से रोकती हैं। हालांकि अध्ययन यह भी बताते हैं कि इसका प्रभाव बहुत ही कम होता है। यह भी सुझाव दिया गया है कि हम घर के भीतर और बाहर जो जो देखते हैं वह भी नजर कमजोर होने की एक वजह हो सकती है। उदाहरण के लिए, एक अध्ययन से पता चलता है कि घर के भीतर सादा साधारण वातावरण और दीवारें देखते रहने से दृष्टिदोष हो सकता है। हो सकता है कि शहरी क्षेत्रों में इसी वजह से निकट दृष्टि दोष अधिक आम हो। हालांकि, इसे समझने के लिए और अधिक शोध की आवश्यकता है। आधुनिक जीवन शैली यह सच है कि आधुनिक जीवन शैली में अक्सर हमें अपना बहुत सारा समय घर के अंदर बिताना होता है। उदाहरण के लिए, स्कूल छोड़ने की उम्र अब पहले से ज्यादा हो चुकी है और उच्च शिक्षा ग्रहण करने वालों की संख्या में भी इजाफा हुआ है, जिससे बच्चे औपचारिक शिक्षा में अधिक समय व्यतीत कर रहे हैं, जो दृष्टि दोष का एक कारण हो सकता है। फिर भी अभी तक यह पता नहीं चल पाया कि औपचारिक शिक्षा के कौन से पहलू दृष्टि दोष की आशंका में वृद्धि कर रहे हैं। लंबे समय तक पढ़ना, बहुत नजदीक से चीजों को देखना, घर के अंदर ज्यादा समय बिताना और स्क्रीन का बढ़ता उपयोग सभी इसके लिए जिम्मेदार हो सकते हैं।

बच्चे दिन में कम 40 मिनट घर से बाहर बिताएं

इस बीच एक अध्ययन से पता चलता है कि किताब को आंखों से 25 सेमी से अधिक की दूरी पर रखकर पढ़ने से दृष्टि दोष विकसित होने का खतरा हो सकता है, वैसे दृष्टि दोष विकसित होने में पढ़ने का प्रभाव बहुत कम पाया गया है। बच्चों में अधिक स्क्रीन उपयोग के कारण दृष्टिदोष होने को लेकर भी अलग कारक हैं - शायद इसलिए कि स्क्रीन के उपयोग का अनुमान लगाना और दीर्घकालिक प्रयोग में इसे नियंत्रित करना मुश्किल है। इसके बावजूद, यह समझने के लिए और शोध की आवश्यकता है कि क्या दृष्टिदोष की उच्च दर के लिए अत्यधिक स्क्रीन उपयोग को दोष देना ठीक है और यदि इस सवाल का जवाब हां है तो फिर यह जानना होगा कि ऐसा क्यों है। दृष्टि दोष विकसित करने के जोखिम कारकों को देखते हुए, अब यह भी चिंता है कि महामारी के दौरान घर पर रहने की बंदिश और घर पर सीखने से बच्चों की दृष्टि खराब हो सकती है। यद्यपि ब्रिटेन में बच्चों पर इसके प्रभाव को लेकर अभी तक कोई अध्ययन नहीं किया गया है, लेकिन अन्य स्थानों पर पूर्व में मिले प्रारंभिक परिणाम बताते हैं कि महामारी अधिक बच्चों में दृष्टिदोष विकसित करने का कारण बन सकती है- लेकिन एक अनुमान है कि इसका प्रभाव कम ही होगा। अभी यह देखा जाना बाकी है कि क्या महामारी दृष्टिदोष में स्थायी वृद्धि का कारण बन सकती है। फिलहाल तो बच्चों में दृष्टिदोष का जोखिम कम करने के लिए सबसे अच्छी सलाह यह है कि वह दिन में कम 40 मिनट घर से बाहर बिताएं।

जल्द अपडेट करें ब्राउजर, वरना हो सकता है बड़ा नुकसान

गूगल क्रोम यूजर्स के लिए जरूरी खबर है। गूगल क्रोम ब्राउजर में कुछ दिनों पहले एक खामी आ गई थी। इसका फायदा हैकर्स ने उठाया और इसका दुरुपयोग करने की कोशिश भी की। लेटेस्ट अपडेट ये है कि हैकर्स के सफल होने से पहले ही गूगल क्रोम ने इस समस्या को ठीक कर दिया है। इसके साथ ही गूगल ने यूजर्स को जानकारी देते हुए क्रोम ब्राउजर को अपडेट करने की सलाह भी दी है। गूगल ने अपने ब्लॉगपोस्ट में अर्जेंट अपग्रेड वार्निंग जारी की है। बता दें कि गूगल क्रोम का इस्तेमाल करने वालों की संख्या बहुत ज्यादा है। विंडोज और एंड्रॉयड पर अधिकतर लोग गूगल क्रोम ब्राउजर को ही यूज करते हैं। लगभग 2 बिलियन यूजर्स यानी 2 अरब लोग इसका इस्तेमाल करते हैं, इसलिए खतरा भी बड़ा है।

गूगल ने गूगल क्रोम की सिक्योरिटी में गंभीर समस्या की बात स्वीकार करते हुए यूजर्स से ब्राउजर अपग्रेड करने को कहा है। गूगल ने नये Zero day exploit की बात स्वीकारी है। इसका मतलब होता है कि हैकर्स को इस बात का पता लग चुका है और इस वक्त इस खामी के कारण यूजर्स को नुकसान भी उठाना पड़ सकता है। गूगल ने उन सभी यूजर्स के क्रोम ब्राउजर को अपडेट करने की सलाह दी, जो इसका लंबे समय से इसका इस्तेमाल कर रहे हैं। अगर यूजर अपना क्रोम ब्राउजर

अपडेट नहीं करते हैं, तो ऐसे में उनके डिवाइस को कंट्रोल करने का खतरा ज्यादा है। यही नहीं, हैकर्स आपके डिवाइस का डेटा चुरा सकते हैं। ऐसे में जल्द से जल्द अपना क्रोम ब्राउजर अपडेट कर लें।

अपना क्रोम ब्राउजर अपडेट करने के लिए Settings » Help » About Google Chrome पर जाइए। अगर आपका ब्राउजर वर्जन 91.0.4472.114 या इससे ऊपर का नजर आता है तो आप सुरक्षित हैं और अगर नहीं तो मैनुअली अपडेट कर लीजिए। अपडेट करने के बाद अपने ब्राउजर को रीस्टार्ट कीजिए।

बृजेश जैन की ओर से

हमारा देश हमारा अभिमान

मासिक पत्रिका के प्रथम संस्करण प्रकाशन पर

सम्पूर्ण टीम और सम्पादक मनोज चतुर्वेदी को

बहुत बहुत शुभकामनाएं

बृजेश जैन राष्ट्रीय सचिव सामाजिक कल्याण एवं मानव अधिकार काउंसलिंग इंडिया, श्री गुरु पैकेजिंग पालदा इंदौर

पेगासस फोन टेप कांड : यानी सरकार का सर्विलांस इंडिया

• निशिकांत ठाकुर

विपक्ष या मीडिया कुछ भी कर ले, सरकार पर लाख आरोप-प्रत्यारोप लगा दे, लेकिन उसकी दाल गलने वाली नहीं है. सच है कि साधु भी आसानी से अपनी कमियां नहीं स्वीकारता, क्योंकि उसे साख खोने का डर सताता है। जबकि उसे यह भी पता होता है कि उसकी गलती/कमी/कमजोरियां कभी न कभी सार्वजनिक जरूर होंगी। लेकिन तात्कालिक लाभ के लिए हर कोई झूठ का सहारा जरूर लेता है। तभी वह कोई रक्षा कवच तैयार करने के बाद ही किसी अवैधानिक कार्य को करने की योजना बनाता है।

इजराइल की कंपनी एनएसओ का कहना है कि वह जासूसी करने वाली अपनी सॉफ्टवेयर पेगासस केवल सरकार को ही बेचती है। पेगासस स्पाइवेयर... यह नाम पहले वर्ष 2019 में पहली बार उस समय चर्चा में आया था, जब कई मानवाधिकार कार्यकर्ताओं के व्हाट्सएप से डाटा चोरी होने की रिपोर्ट सामने आई थी। हमारा भारत अमेरिका नहीं है, जहां आज से करीब 47 वर्ष पहले पूर्व राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन ने विरोधी दल की बैठक का फोन टेप कराया था और जिसके कारण उन्हें अपने पद से इस्तीफा देना पड़ा था। उस घटना को आज भी 'वॉटरगेट कांड' के नाम से जाना जाता है।

अभी हाल में केंद्रीय मंत्रिमंडल से बाहर होने वाले पूर्व आईटी मंत्री एवं एक बार फिर अपने लिए सरकार में जमीन तलाशते भाजपा के वरिष्ठ नेता रविशंकर प्रसाद ने कांग्रेस के आरोपों को बेबुनियाद और स्तरहीन करार दिया है। उन्होंने भाजपा सरकार का बचाव करते हुए कहा है कि कांग्रेस पंजाब और राजस्थान में अंदरूनी संकट से जूझ रही है, इसलिए वह सरकार पर आधारहीन फोन टेप करने का आरोप लगा रही है। यहां तक कि स्वयं प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, रक्षामंत्री तथा वर्तमान आईटी मंत्री अश्वनी वैष्णव सब इस बात से इंकार करते हुए कहते हैं कि फोन टेप या जासूसी कांड का आरोप भारतीय लोकतंत्र को बदनाम करने का प्रयास है, जो कांग्रेस के कार्यकाल में ही होता था।

ज्ञात हो कि पेगासस टेप कांड की तथाकथित सूची में आईटी मंत्री अश्वनी वैष्णव का भी नाम शामिल है। गृहमंत्री ने तो यहां तक कह दिया कि विपक्ष का रुख लोकतंत्र की गरिमा के कतई अनुकूल नहीं है। प्रधानमंत्री ने विपक्ष के तर्क को काटते हुए कई तर्क दिए और यहां तक कहा कि सभी सांसदों, राजनीतिक दलों से तीखे से तीखे सवाल पूछने का आग्रह करता हूं, पर सौहाद्रपूर्ण वातावरण में सरकार को जवाब देने का वह अवसर दें। ऐसा इसलिए, क्योंकि जनता तक पूर्ण सत्य पहुंचना चाहिए। इससे लोकतंत्र मजबूत होता है। उसे ताकत मिलती है। सरकार पर जनता का विश्वास बढ़ता है और देश के विकास को गति मिलती है।

प्रधानमंत्री ने कहा कि कांग्रेस पार्टी कोमा में चली गई है और भारतीय जनता पार्टी के सत्ता में आने को पचा नहीं पा रही है। इजराइली कंपनी एनएसओ ग्रुप ने इस आरोप को गलत और गुमराह करने वाला बताया कि पेगासस स्पाइवेयर के जरिये कई भारतीय पत्रकारों, विपक्षी नेताओं, मानवाधिकार कार्यकर्ताओं, न्यायाधीशों के फोन टेप किए गए। कंपनी ने कहा कि वह मानहानि का मुकदमा दाखिल करने पर विचार कर रही है।

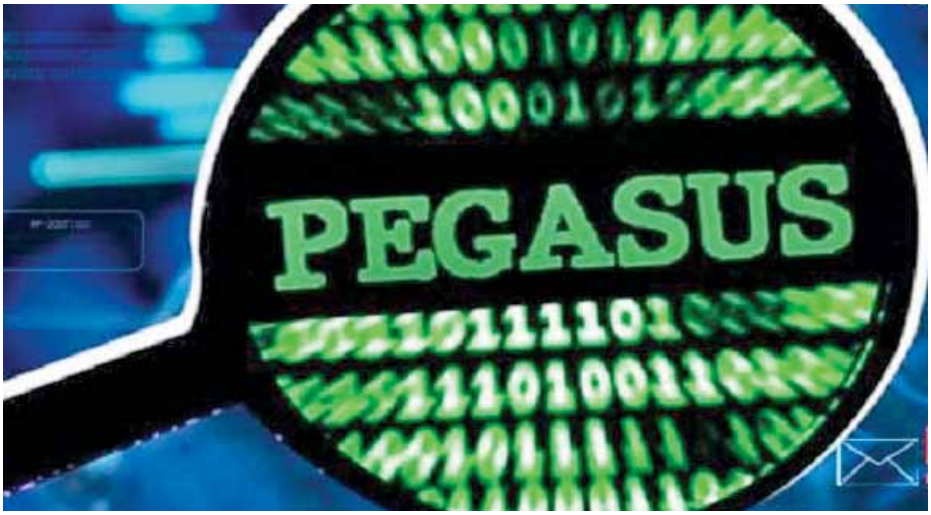

इधर, नई दिल्ली स्थित कांग्रेस पार्टी कार्यालय में मीडिया से बातचीत करते हुए वरिष्ठ कांग्रेस नेता और राज्यसभा में नेता प्रतिपक्ष मल्लिकार्जुन खड़गे, लोकसभा में पार्टी के नेता अधीर रंजन चौधरी और रणदीप सुरजेवाला ने सत्तारूढ़ दल के खिलाफ आक्रामक रुख अपनाते हुए गृहमंत्री से इस्तीफा मांग लिया और कहा कि इस संबंध में प्रधानमंत्री की भूमिका की भी जांच होनी चाहिए। कांग्रेस नेताओं ने कहा प्रधानमंत्री डिजिटल इंडिया की बात करते हैं। यह तो सर्विलांस इंडिया हो गया है। साथ ही नेताओं ने कहा कि भारतीय जनता पार्टी का नाम अब भारतीय जासूस पार्टी कर दिया जाना चाहिए। उनका कहना था कि भारतीय जनता पार्टी इसके माध्यम से आपके घर पहुंच गई है और आपकी बेटी—बहुओं की बात से लेकर हर चीज पर सरकार की निगाह है। कहा तो यह भी जा रहा है कि अभी कम से कम दस दिनों तक इस विषय में खुलासा होता रहेगा। पेगासस स्पाइवेयर मामले को लेकर जारी विवाद के बीच भारतीय जनता पार्टी के राज्यसभा सांसद सुब्रमण्यम स्वामी ने कहा है कि पेगासस स्पाइवेयर एक कमर्शियल कंपनी है जो पेड कॉन्ट्रैक्ट्स पर काम करती है। ऐसे में भारतीय 'ऑपरेशन' को अंजाम देने के लिए अगर केंद्र नहीं तो किसने उस कंपनी को पैसे दिए थे?

आज से करीब 47 वर्ष पहले पूर्व राष्ट्रपति रिचर्ड निक्सन ने विरोधी दल की बैठक का फोन टेप कराया था और जिसके कारण उन्हें अपने पद से इस्तीफा देना पड़ा था। उस घटना को आज भी 'वॉटरगेट कांड' के नाम से जाना जाता है।

अब सभी सत्तारूढ़ दल से मामले की संसदीय जांच कमेटी अथवा सुप्रीम कोर्ट के न्यायाधीश से जांच कराने की मांग कर रहे हैं, ताकि सच सामने आ सके। लेकिन, सत्तारूढ़ दल इस बात का विरोध करता है कि संसद में प्रधानमंत्री, गृहमंत्री, रक्षमंत्री ने जो कहा, वही सच है और इस मुद्दे की जांच करने का कोई औचित्य नहीं है। अब देखना है कि यह पेगासस फोन टेप कांड कब तक गरम रहता है और विपक्ष इसके कारण कितने दिनों तक संसद के मानसून सत्र को बाधित रखता है।

वैसे, विपक्ष की आवाज को दबाना देश की जनता में एक संदेह भी पैदा करता है, क्योंकि देश की जनता पूर्णरूप से सरकार की 'गुलाम' होती है, जिसे सबने वर्ष 2019 के लोकसभा चुनाव में देखा। उसी 'गुलामी' का परिणाम है कि पूर्ण बहुमत से सरकार का गठन हुआ। अब जनता के उस विश्वास को यदि ठेस पहुंचाया गया तो वर्ष 2024 के लोकसभा चुनाव में सरकार के अड़ियलपन का उत्तर जनता जरूर देगी। मुद्दा यही रहेगा... सरकार किसी की सुनती नहीं। स्वाभाविक तौर पर विपक्ष इसका भरपूर लाभ उठाएगा। ऐसे में बेहतर है कि सरकार इस पूरे प्रकरण की जांच जरूर कराए, ताकि सांप भी मर जाए और...।

सुप्रीम कोर्ट के वरिष्ठ अधिवक्ता प्रशांत भूषण ने कहा कि सरकार का यह कृत्य देशद्रोह के तहत आता है, क्योंकि सुप्रीम कोर्ट ने बार—बार कहा है कि देश के किसी भी नागरिक की निजता का हनन नहीं किया जा सकता, क्योंकि यह उसका संविधानप्रदत्त मौलिक अधिकार है। लेकिन, सरकार पर इसका कोई असर नहीं है। सुप्रीम कोर्ट का यह भी कहना है कि इसके लिए केवल केंद्रीय मुख्य गृह सचिव की स्वीकृति के बाद ही किसी का फोन टेप किया जा सकता है। विशेष परिस्थिति में केवल उनका ही फोन टेप किया जा सकता है जिन पर किसी गंभीर अपराध में मामला दर्ज हो या जिससे राष्ट्रीय सुरक्षा पर खतरा हो। लेकिन, यहां तो फोन टेपिंग के रोज तीन सौ आदेश दिए जाते हैं। यह कोई भारतीय मीडिया द्वारा निर्मित मुद्दा नहीं है, बल्कि यह अंतरराष्ट्रीय मीडिया द्वारा भारत सरकार का पर्दाफाश किया गया है।

फोन टैपिंग... भारत व

भारत में सिर्फ़ 10 एजेंसियों खुफिया ब्यूरो (आईबी), केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई), प्रवर्तन निदेशालय (ईडी), मादक पदार्थ नियंत्रण ब्यूरो (एनसीबी), केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी), राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई), राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए), रॉ, सिगनल खुफिया निदेशालय और दिल्ली पुलिस आयुक्त के पास ही फोन टैपिंग का अधिकार है।

• अभिनव नारायण झा

फोन टैपिंग का मसला वर्षों से सामाजिक पटल पर सुर्खियां में बना हुआ है। बीते कुछ दशकों से ही इसके बारे में चर्चाएं होती रही है। समय समय पर फ़ोन टैपिंग की वजह से संसद से सड़क तक आवाज़ उठती आई है। आवाज़ उठना और उठाना दोनों लाज़मी है, क्योंकि यह एक बेहद ही प्रासंगिक और संवेदनशील मुद्दा है, लेकिन इसे दुर्भाग्यपूर्ण ही माना जा सकता है कि संविधान और कानून में तमाम तरह के प्रावधानों के बाद भी बहुत आसानी से फ़ोन टैपिंग मामले में तेज़ी देखने को मिल रही है। सरकार और आयोग अभी भी इस विषय पर पूर्ण रूप से सख़्त नहीं हो पाई है। हालांकि तकनीक के दौर में फोन टैपिंग का मामला पहले से और भी ज्यादा देखने को मिल रहा है और यह काफ़ी चिंतनीय है। आइए जानते है कि भारत में फोन टैपिंग के लिए क्या क्या कानूनी प्रावधान मौजूद है? इसके साथ ही आज फोन टैपिंग का कानूनी रूप से उल्लंघन करने के प्रावधानों का भी जिक्र करेंगे।

क्या कहता है 1985 का भारतीय टेलीग्राफ अधिनियम?

यह कानून मुख्य रूप से आजादी के पूर्व का है। साल 1885 में इस कानून को अंग्रेज़ी हुकूमत के द्वारा भारत में लाया गया था। हालांकि समय समय पर इस कानून में संशोधन जरूर हुए है। भारतीय टेलीग्राफ अधिनियम, 1885 के अन्तर्गत केंद्र सरकार अथवा राज्य सरकार को आपातकाल या लोगों की सुरक्षा के लिए फोन कॉल को प्रतिबंधित करने, फ़ोन टैपिंग तथा फ़ोन की निगरानी करने का अधिकार प्राप्त है। अधिनियम की धारा 5(2) के मुताबिक सरकारी एजेंसियों के पास यह अधिकार है कि वह लोगों के फ़ोन को टैप कर सकती है। मुख्य रूप से देश की सुरक्षा, लोकहित, दूसरे राज्यों के साथ मैत्रीपूर्ण वातावरण, देश की अखंडता और संप्रभुता को खतरा होने की स्थिति से फ़ोन टैपिंग किया जा सकता है। इस एक्ट के नियम 419 एवं 419-A में फ़ोन कॉल्स और मेसेज की देखरेख तथा पाबंदी लगाने की प्रक्रिया के बारे में बताया गया है। इसके केवल सरकारी एजेंसियों को ही यह अधिकार दिया गया है कि वह गृह मंत्रालय के सचिव से पूर्व में इजाजत लेकर किसी व्यक्ति का फोन टेप कर सकती हैं। इस नियम को साल 2007 में संशोधन के तहत जोड़ा गया था। इसके साथ ही वित्त मंत्रालय एवं सीबीआई को गृह मंत्रालय की पूर्व इजाजत के बिना 72 घंटे तक किसी भी व्यक्ति का फोन टेप करने का अधिकार दिया गया है। यह अधिकार मुख्य रूप से सुरक्षा तथा

कार्रवाई की वजह से दिया गया है। आपको बता दें कि केंद्र और राज्य सरकार के अन्तर्गत गृह सचिव दो महीने के लिए फोन टैपिंग की अनुमति जारी करते है। साथ ही कुछ विशेष परिस्थिति में इसे ज्यादा से ज्यादा 180 दिन तक बढ़ाया जा सकता है। हालांकि अभी तक ऐसा कोई प्रावधान कानून में नहीं है, जिससे कोर्ट की इजाजत के बाद ही फ़ोन की टैपिंग हो सकें। दूसरे देशों में यह प्रावधान मौजूद है। जर्मनी में फ़ोन टैपिंग से पहले स्थानीय जज से अनुमति लेनी होती है।

फ़ोन टैपिंग से लोगों के मौलिक अधिकारों का होता है हनन?

संविधान के अनुच्छेद 19(1) के तहत लोगों को अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता दी गई है। इसके तहत लोग आसानी से अपनी अभिव्यक्ति का इजहार करते है। देखा जाएं तो फ़ोन टैपिंग अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का सीधे तौर पर हनन करता है। हालांकि अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता पर उचित प्रतिबंध अनुच्छेद 19(2) के अन्तर्गत लगाया गया है। इसके तहत लोकहित और देशहित में फ़ोन टैपिंग संवैधानिक दायरों और कानून के अंतर्गत की जा सकती है। लेकिन बिना किसी वजह और कानून के दायरे से बाहर जाकर फ़ोन टैपिंग मौलिक अधिकारों का हनन है। भारतीय संविधान में नागरिकों को मौलिक अधिकार प्रदत है। संविधान के अनुच्छेद 21 में व्यक्तिगत स्वतंत्रता की बात की गई है। इसके मुताबिक किसी भी व्यक्ति को जीवन और व्यक्तिगत स्वतंत्रता से वंचित नहीं किया जा सकता है। इसके साथ ही इसी अनुच्छेद में लोगों को निजता का अधिकार भी दिया गया है। टेलीफ़ोन पर हुई बातचीत भी निजता के अधिकार के अंतर्गत आता है। आपको बता दें कि लोगों के पास व्यक्तिगत निजता के साथ साथ अपने परिवार, शिक्षा, विवाह, मातृत्व आदि के विषय पर भी गोपनीयता का अधिकार संविधान में प्रदत है। फ़ोन टैपिंग मुख्य रूप से निजता के अधिकार के साथ साथ अनुच्छेद 21 का भी हनन है। सुप्रीम कोर्ट ने भी समय समय पर यह माना है कि फ़ोन टैपिंग से निजता के अधिकारों का हनन हो रहा है। हालांकि निजता के अधिकार पर भी उचित प्रतिबंध का प्रावधान हैं।

निष्कर्ष : भारत में समय समय पर फोन टैपिंग का मामला सामने आता रहा है। खासकर राजनेताओं पर काफी बार फोन टैपिंग का आरोप लगता रहा है। यह मुद्दा काफी गंभीर और संवेदनशील है। जरूरत है देश को पहले से बेहतर और सख्त कानून की, जिससे फोन टैपिंग पर रोक लगाई जा सकें। हालांकि तकनीकी विस्तार और कई सारे यंत्रों की मदद से फोन टैपिंग पहले से ज्यादा आसान हो गया है। 10 किलोमीटर के दायरे में कभी भी इन तकनीक के माध्यम से फोन टैपिंग की जा सकती है। सरकार और एजेंसियों को इसके लिए सख्त कदम उठाने की जरूरत है। सरकार को इस दिशा में आगे कदम बढ़ाने की जरूरत है।

अन्य देशों का कानून ?

फ़ोन टैपिंग पर सुप्रीम कोर्ट के ऐतिहासिक फैसले

सुप्रीम कोर्ट ने पीपुल्स यूनियन फॉर सिविल लिबर्टीज (पीयूसीएल) बनाम यूनियन ऑफ इंडिया (1996) केस में ऐतिहासिक फैसला सुनाते हुए फ़ोन टैपिंग को निजता के अधिकार का हनन माना। साथ ही कोर्ट ने इसके लिए केंद्र सरकार और राज्य सरकार को कमेटी बनाने का निर्देश दिया। कोर्ट ने फ़ोन टैपिंग करने के लिए सबसे पहले राज्य के गृह सचिव से इजाज़त लेना अनिवार्य कर दिया। साथ ही फ़ोन टैपिंग करने वाली एजेंसी को टैपिंग के कारणों को भी स्पष्ट करने का निर्देश दिया। इसके साथ ही न्यायालय ने फ़ोन टैपिंग के समय सीमा को भी निर्धारित किया। फ़ोन टैपिंग के उद्देश्य, कारण और बाकी सारी चीज़ों पर भी न्यायालय ने काफी सख़्ती दिखाई। इसके बाद सुप्रीम कोर्ट ने केएलडी नागाश्री बनाम भारत सरकार (2006) के केस में धारा 5(1) और धारा 5(2) के तहत पब्लिक इमरजेंसी तथा लोकहित में फोन टैपिंग को सही ठहराया और इसे वैध करार दिया। साथ ही रायाला

एम भुवनेश्वरी बनाम नगाफनेंद्र रयाला(2008) के केस में सर्वोच्च न्यायालय ने पति के द्वारा पत्नी पर किए गए फोन टैपिंग को अमान्य और अवैध करार दिया। साथ ही कोर्ट ने कहा कि यह कानून के साथ साथ पत्नी के निजता के अधिकारों का भी उल्लघंन है।

अन्य देशों में फ़ोन टैपिंग से जुड़े प्रावधान?

जर्मनी में दो अथवा दो से अधिक लोगों की जानकारी के बिना यदि फोन टैपिंग होता है तो इसे जर्मन क्रिमिनल कोड के अन्तर्गत अपराध की श्रेणी में रखा गया है। यहां तो फोन टैपिंग से पहले स्थानीय जज से अनुमति भी लेनी पड़ती है। इसके साथ ही बिना जानकारी के टैप किए हुए फोन को सबूत के तौर पर आगे की कार्रवाई के लिए इस्तेमाल किया जाता है। कनाडा में फोन पर बात कर रहे दो व्यक्ति में से किसी एक को भी टैपिंग की जानकारी होना आवश्यक है। फिनलैंड मामला उल्टा है। यहां पर किसी व्यक्ति का फोन टैप होना ज्यादा बड़ा मसला नहीं माना जाता है। अगर किसी का फोन टैप हुआ है और उससे किसी की प्राइवेसी भंग नहीं हुई है और कोई भी गोपनीय बातें लीक नहीं हुई है तो किसी भी प्रकार की कार्रवाई और कड़े कदम नहीं उठाए जाते है।

फ़ोन टैपिंग से बचने के लिए क्या कानूनी अधिकार?

बेवजह और गैर कानूनी तरीके से फ़ोन टैपिंग करने की स्थिति में व्यक्ति मानवाधिकार आयोग में इसकी शिकायत कर सकता है। क्योंकि फोन टैपिंग से लोगों के निजता के अधिकार का हनन होता है। फ़ोन टैपिंग होने की जानकारी की स्थिति में आप नजदीकी पुलिस स्टेशन में एफआईआर भी दर्ज करवा सकते है। इसके साथ ही अगर आपको लगता है कि आपका फ़ोन टैप हुआ है और अनाधिकृत रूप से इसका इस्तेमाल किया गया है तो आप फोन टैपिंग करने वाले व्यक्ति या कंपनी के खिलाफ कोर्ट में याचिका दायर कर सकते है। यह याचिका मुख्य रूप से भारतीय टेलीग्राफ अधिनियम की धारा 26(B) के तहत की जा सकती है। इस धारा के अन्तर्गत आरोपी को तीन साल की सजा का भी प्रावधान है।भारत में सिर्फ़ 10 एजेंसियों के पास ही फोन टैपिंग का अधिकार है। इसमें मुख्य रूप से खुफिया ब्यूरो (आईबी), केंद्रीय जांच ब्यूरो (सीबीआई), प्रवर्तन निदेशालय (ईडी), मादक पदार्थ नियंत्रण ब्यूरो

(एनसीबी), केंद्रीय प्रत्यक्ष कर बोर्ड (सीबीडीटी), राजस्व खुफिया निदेशालय (डीआरआई), राष्ट्रीय जांच एजेंसी (एनआईए), रॉ, सिगनल खुफिया निदेशालय और दिल्ली पुलिस आयुक्त शामिल हैं। यह जानकारी केंद्र सरकार ने लोकसभा में एक प्रश्न के उत्तर के दौरान दिया था।

वर्चुअल मीटिंग: बढ़िया हो इमेज

कोरोना महामारी के इस दौर ने एक नये वर्क कल्चर को तवज्जो दी है। यह है वर्क फ्रॉम होम। चाहे काम बच्चों का हो या बड़ों का। याद कीजिए पिछले साल का लॉकडाउन। कुछ लोगों को लगा था यह शानदार ब्रेक है, जो चाहो करो। ऑफिस भी अपनी मर्ज़ी का मालिक है। यह दौर आज भी कायम है। ऑफिस आज भी घर से चल रहा है। इस बात को डेढ़ साल बीत गए हैं। आगे क्या होगा, कुछ कहा नहीं जा सकता? बस, एक उम्मीद कि सब जल्द ठीक होगा। आर्थिक पक्ष को मजबूत करने के लिए हम माहौल से समझौता या हार नहीं मान सकते। ऐसे में सही यही होगा कि अपनी व अपनों की सुरक्षा को त्वज्जो देते हुए माहौल को स्वीकारें और काम करें। अभी तक आपने ऑनलाइन मीटिंग्स को हल्के में लिया था। लेकिन अब ऐसा नहीं है। जानते हैं वर्चुअल मीटिंग में भी अवव्ल रहने के महत्वपूर्ण टिप्स।

सिस्टम की जांच कर लें

जब भी मीटिंग का शेड्यूल फिक्स हो जाए, तो कम से कम 25 मिनट पहले ही अलर्ट हो जाएं। ऑनलाइन मीटिंग में प्रयोग होने वाली टेक्नोलॉजी या गैजेट को चेक करें। यानी इंटरेनट कनेक्शन चालू हो, लैपटॉप की बैटरी चार्ज हो, ब्लूटूथ की कनेक्विटी दुरुस्त हो, सभी चार्जर (फोन, लैपटॉप, मॉडम), ईयरफोन में आवाज़ चेक करें।

बैकग्राउंड साफ रखें

बैकग्राउंड साफ-सुथरा दिखेगा, तो आप कॉन्फिडेंट लगेंगे। काम के प्रति आपकी गंभीरता झलकेगी। यदि आपके पास ऑनलाइन मीटिंग की अलग से घर में जगह है तब तो आप बिंदास यहीं पर कैमरा सेटिंग करें। यदि नहीं है तो खोजें कि घर में किस कोने पर ऑनलाइन मीटिंग का सेटअप लगाया जा सकता है। बैकग्राउंड में टूटी अलमारी, पलस्तर झड़ती दीवारें, बेरंग दीवारों, फटे वॉल पेपर, कपड़ों के ढेर, किचन सीन न दिखाएं। यदि अच्छा बैकग्राउंड संभव नहीं तो दीवार को सुंदर वॉल हैंगिंग या चादर से ढकें और यहां मीटिंग का सेटअप लगाएं।

खुद को म्यूट भी रखें

म्यूट व अनम्यूट करने की सेटिंग्स भी सीख लें। ये नहीं आने पर आपकी तरफ से आ रही बेफिजूल आवाजें सामने वाले को सुनाई पड़े। इससे आपका इंम्प्रेशन तो खराब होगा, साथ ही मीटिंग भी डिस्टर्ब हो जाएगी। सुनने वाले को लगेगा कि आप मीटिंग के प्रति सीरियस नहीं हैं। आदत बनाएं कि जब बोलना है तभी माइक ऑन करें, अन्यथा म्यूट रखें।

शालीन हो ड्रेस

वर्चुअल मीटिंग में भी पहनावा शालीन होना चाहिये। ओवर ड्रेस या कम्फर्ट वियर से आपका कॉन्फिडेंस डगमगाएगा। कपड़े ऑफिस वियर ही हों। साफ व प्रेस किये हुए। याद रखें कि वीडियो में सब दिखता है।

समय पर करें फोकस

मीटिंग के लिए फिक्स शेड्यूल में ही लॉगिन करने से आपकी इमेज पर दाग नहीं लगेगा। इसीलिये रोज़ाना मीटिंग के शेड्यूल को फॉलो करें।

साउंड को कम करके रखें

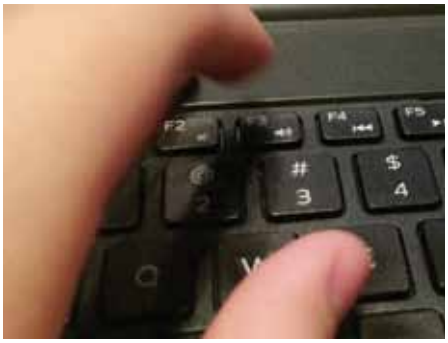

वर्चुअल मीटिंग में नोटिफिकेशन की आवाज़ सबका ध्यान भटकाती हैं। बार-बार बजते इस शोर में मीटिंग का एजेंडा भटक सकता है। वहां मौजूद लोगों में आपका इंप्रेशन नॉन सीरिअस पर्सन का होता है। इसके लॉन्ग टर्म नेगेटिव इफेक्ट्स आपको मालूम ही होंगे। इन मीटिंग्स में नोटिफिकेशन की साउंड ऑफ करें।

कुछ ज़रूरी हिदायतें

लेंस कॉन्टेक बनाएं। बोलना हो तो हाथ उठाएं। मीटिंग में चैट बॉक्स इस्तेमाल कर सकते हैं। बार-बार कैमरे के सामने अपने बाल आदि नहीं संवारें। बीच-बीच में कुछ भी चबाना ठीक नहीं है। मीटिंग के दौरान अलर्ट रहें कि आपकी गतिविधि को कैमरा कैप्चर कर रहा है। आपकी एक ज़रा सी गलती सबकी नज़र में आ जाएगी ।

अपने काम के विशेषज्ञ बनिए

मैं उस आदमी से नहीं डरता जिसने 10,000 किक्स की प्रैक्टिस एक बार की हो, बल्कि मैं उस आदमी से डरता हूं जिसने एक किक की प्रैक्टिस 10,000 बार की हो।' यह कथन है एक्टर, डायरेक्टर, फिलोसोफर और दुनिया के सबसे चर्चित मार्शल आर्ट एक्सपर्ट ब्रूस ली का। सचमुच, अपने काम में विशेषज्ञ होना खुद को तो आत्मविश्वास देता ही है, दूसरों के मन में आपकी पुख्ता पहचान भी कायम करता है। देश ही नहीं दुनिया में एक ख़ास मुकाम दिलवाता है। इसीलिए अपने काम को लेकर गंभीरता और सीखने की ललक सदा बनी रहनी चाहिए। खुद को बेहतर बनाने की कोई सीमा नहीं होती। ना ही नया सीखने और सीखे गए हुनर को निखारते रहने का कोई आखिरी पायदान है। अपने काम को अच्छे से करने की दक्षता पाने के प्रति गंभीर होना, उसे वाकई अच्छे कर पाने का भरोसा और कामयाबी दोनों देता है।

हरदम नया सीखिये और सिखाइये

नया सीखने की ललक सही मायने में आपको अपने फील्ड से जोड़े रखेगी। आज के दौर में एक बार डिग्री हासिल कर पढ़ाई पूरी कर लेना भर काफी नहीं है। लर्निंग के इस प्रोसेस को आगे भी कायम रखना होता है। इसके लिए प्रोफेशनल दुनिया में कदम रखने के बाद भी नया सीखने के लिए अपने सीनियर्स या क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञों से कुछ पूछने-समझने में संकोच नहीं होना चाहिए। कुछ बिलकुल नया सीखना हो तो बाक़ायदा क्लासेस ज्वाइन कीजिये। किताबें पढ़ियें। रोजमर्रा के समाचारों और सोशल मीडिया में उस क्षेत्र विशेष से जुड़े समाचारों पर नजर रखिये। साथ ही अपना भी एक दृष्टिकोण बनाइए। इतना ही नहीं जो आप जानते हैं, उसे अपने जूनियर्स से साझा कीजिये। ऑफिस के सहकर्मी हों या कोई दोस्त-रिश्तेदार, अपने क्षेत्र से जुड़ी किसी चीज़ को समझाना खुद भी उसे बेहतर ढंग से समझने वाला कदम है।

नियमित रहिये

क्षेत्र चाहे कोई भी हो, एक्स्पर्टीज बिना नियमित रहे नहीं आ सकती। अपने फील्ड में काम करने की बात हो या उससे जुड़ा कुछ नया सीखने की प्रक्रिया, एक रेगुलर शेड्यूल बनाये बिना विशेषज्ञता हासिल नहीं होती। दुनिया के कुछ सफल और चर्चित लोगों की कहानियां समेटे 'आउटलायर्स' जैसी कई बेस्टसेलिंग किताबों के लेखक मैल्कम ग्लैडवेल के मुताबिक़ किसी एक काम में विशेषज्ञ बनने के लिए 10,000 घंटे का अभ्यास करना पड़ता है। जो कि आसान नहीं है, अगर आप एक सप्ताह में 40 घंटे काम करते हैं, और आप हर पल उस खास कार्य का अभ्यास करने में बिताते हैं, जिसमें आपको एक्स्पर्टीज हासिल करनी है तो आपको हर साल पूरे 52 सप्ताह काम करना होगा। तब भी 10,000 घंटे अपने काम को देने में लगभग 5 साल का वक्त लगेगा। ऐसे में यह समझना मुश्किल नहीं कि अपनी सहूलियत के मुताबिक़ समय देकर अपने क्षेत्र में कुछ अलग कर दिखाना कठिन है। कुछ खास कर जाने के लिए फोकस्ड और नियमित रहना बेहद जरूरी है।

पुराने को बुनियाद बनाइये

नया जो भी सीखा जाये उसे पुराने नॉलेज के बिना पक्की बुनियाद नहीं मिल सकती। बेसिक चीज़ों की अनदेखी करना बेहतरी की राह में बहुत बड़ी बाधा है। छोटी छोटी जानकारियां ही बड़ा फर्क लाने का माध्यम बनती हैं। इसीलिए शॉर्टकट मत तलाशिये। लेखक और एकेडेमिशिन जे.आर. आर टोलोकिन के मुताबिक़ 'शॉर्टकट्स लंबी देरी का रास्ता खोल देते हैं।' इसीलिए विशेषज्ञ बनने के लिए अपने फील्ड से जुड़ी पुरानी जानकारियों से भी जुड़े रहिये। याद रखिये कि अपडेट रहना जरूरी है तो आधार को याद रखना भी। सबसे पहले अपने विषय से जुड़ी बारीकियों को ही जानिए। अपनी नींव मजबूत कीजिये। सफलता हो या विशेषज्ञता, नींव की मजबूती पर ही टिकी होती है।

सही राह चुनिये

बात चाहे सही क्षेत्र के चुनाव की हो या आपके चुने गए क्षेत्र से जुड़े विशेषज्ञों को फ़ॉलो करने की। सोच-समझकर सही राह पकड़िए। एक्सपर्ट होने के लिए समय रहते सोचने की आदत के भी एक्सपर्ट बनिये। खुले मन से सलाह लेने के लिए तैयार रहिये। आप अपने फील्ड में कितने भी सफल हों, कामयाबी के किसी भी पड़ाव पर हों, सलाह लेने में कोई बुराई नहीं है। फिर बात चाहे अपने जूनियर्स के विचार जानने की हो या अपने क्षेत्र के चर्चित चेहरों की सलाह मानने की। यह समय रहते किया जाये तो ही बेनेफिशियल होता है। हर मोर्चे पर समय रहते सोचना और सही राह चुनना अपने क्षेत्र में दक्षता हासिल करने में बहुत मददगार है। यह हर हाल में कामयाबी दिलाने और कमाल कर जाने की राह पर ले जाने वाला साबित होता है।

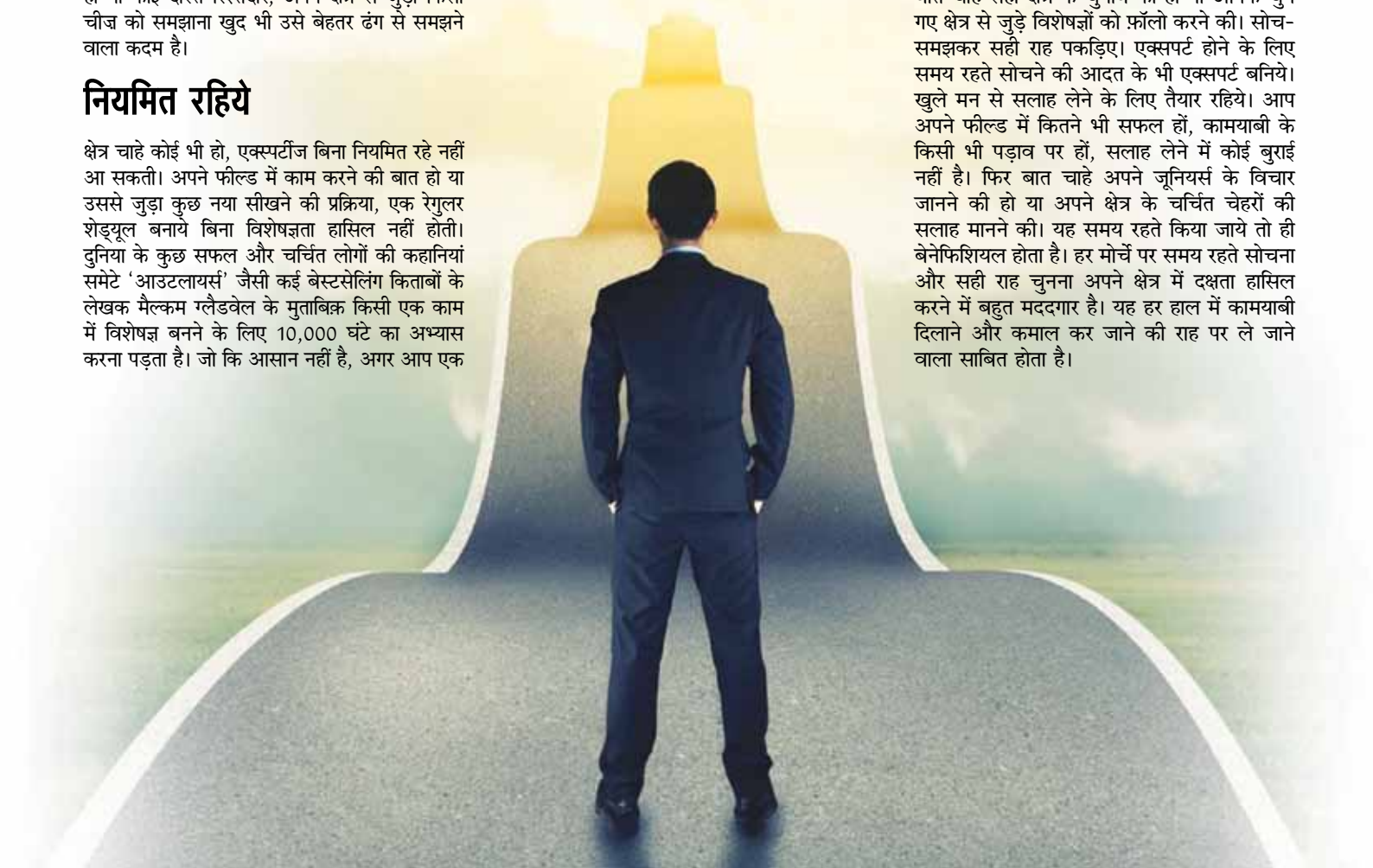

प्रतिष्ठान : धन लक्ष्मी वेयर हाउस चीनोर रोड डबरा, वैभव लक्ष्मी बेयर हाउस चीनोर रॉड डबरा

शिवराज सिंह
मुख्यमंत्री

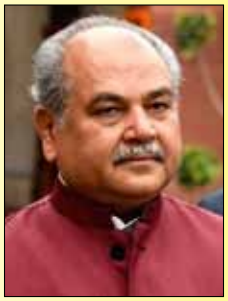

नरेंद्र सिंह तोमर
केंद्रीय मंत्री

ज्योतिरादित्य सिंधिया
केंद्रीय मंत्री

नरोत्तम मिश्रा
गृह मंत्री (मप्र)

विवेक शेजवलकर
सांसद, ग्वालियर

इमरती देवी
पूर्व मंत्री (मप्र)

महाकाल एग्रो फूड्स प्रा. लि.,

उच्च क्वालिटी के चावल निर्माता की ओर से

हमारा देश हमारा अभिमान

मासिक पत्रिका के प्रथम संस्करण प्रकाशन पर
सम्पूर्ण टीम और सम्पादक मनोज जी चतुर्वेदी को

बहुत-बहुत शुभकामनाएं

जितेन्द्र गुप्ता
मैनेजिंग डायरेक्टर महाकाल ऐग्रो फूड्स प्रा. लि.
प्रदेश कार्य समिति सदस्य भाजपा युवा मोर्चा (मप्र)

मुन्नालाल गुप्ता
महाकाल ग्रुप
अध्यक्ष गल्ला उद्योग एवं व्यापार संघ डबरा

अंग्रेजी दुर्ग में दस्तक

भारतीय भाषाओं में पढ़ने-पढ़ाने का अर्थ अंग्रेजी समेत किसी भी विदेशी भाषा का विरोध नहीं है। भाषा के रूप में हर विद्यार्थी को उन्हें पढ़ने की आजादी है, लेकिन जब माध्यम के रूप में उस पर लादी जाती है तो उससे पूरी शिक्षा व्यवस्था बर्बाद होती है।

• प्रेमपाल शर्मा

हमारी के इस दौर में शिक्षा के क्षेत्र में अच्छी खबर यह है कि आने वाले सत्र में इंजीनियरिंग कॉलेजों में भारतीय भाषाओं में भी पढ़ने-पढ़ाने की सुविधा मिलेगी। पिछले साल एआईसीटीई ने आईआईटी और देश भर के इंजीनियरिंग कॉलेजों से अनुरोध किया था कि वे ऐसे कॉलेजों को चुनें, जो भारतीय भाषाओं में तकनीकी शिक्षा दे सकते हैं। अभी देश भर के चौदह कॉलेज इस सत्र में हिंदी, तेलुगू, तमिल, बांग्ला, मराठी भाषाओं में इंजीनियरिंग शुरू करने के लिए सामने आए हैं। उम्मीद की जा रही है कि जल्दी ही आठवीं अनुसूची की दूसरी भाषाओं में भी इंजीनियरिंग की पढ़ाई शुरू हो जाएगी। भारतीय शिक्षा व्यवस्था के लिए यह बहुत क्रांतिकारी कदम साबित होगा।

दौलत सिंह कोठारी आयोग ने 1964-66 में अपनी सिफारिश में कहा था कि 'न केवल स्कूली शिक्षा, बल्कि उच्च शिक्षा भी अपनी भाषाओं में ही दी जानी चाहिए।' संसद में इस पर विचार हुआ था और इसी की अगली कड़ी के रूप में सिविल सेवा परीक्षा में भी आठवीं अनुसूची में शामिल भारतीय भाषाओं में परीक्षा देने की शुरुआत वर्ष 1979 में हुई थी। इसके परिणाम बहुत सुखद रहे। भारतीय भाषाओं में देश की सर्वोच्च नौकरशाही में गरीब, दलित, आदिवासी चुने गए हैं, जो पहली पीढ़ी के शिक्षित हैं यानी जिनके मां-बाप पढ़े-लिखे नहीं थे। इस पृष्ठभूमि में इंजीनियरिंग शिक्षा में अपनी भाषाओं का प्रवेश और उम्मीद जगाता है। अगर इंजीनियरिंग की पढ़ाई अपनी भाषाओं में होगी, तो इनके लिए यूपीएससी या राज्य सेवाओं के द्वार भी खुलेंगे। अभी तक तो यह कह कर हाथ खड़े कर दिए जाते हैं कि जब इंजीनियरिंग, डॉक्टरी की पढ़ाई अपनी भाषाओं में हो ही नहीं रही, तो वे परीक्षाएं कैसे दे पाएंगे। निश्चित रूप से इसमें कुछ समय लगेगा, लेकिन अंग्रेजी के दुर्ग पर दस्तक हो गई है।

दरअसल, भारतीय लोकतंत्र में अंग्रेजी के आतंक ने लोकतंत्र को लगभग विफल कर दिया है। आजादी के वक्त शिक्षा व्यवस्था में ऐसा नहीं था। कोठारी आयोग के सदस्य सचिव रहे जेपी नायक ने 1980 में एक महत्त्वपूर्ण शोध किया था- 'कोठारी आयोग और उसके बाद'। 1980 में वह पुस्तक प्रकाशित हुई थी। उसमें निष्कर्ष था कि आजादी के वक्त भले साक्षरता कम थी, लेकिन भारतीय भाषाओं में शिक्षा आज के मुकाबले कहीं ज्यादा थी। कहां तो कोठारी आयोग के बाद अपनी भाषाओं को और आगे बढ़ना चाहिए था, लेकिन जैसे-जैसे नौकरशाही और प्रशासनिक व्यवस्था में अंग्रेजी हावी होती गई, निजी स्कूल आगे बढ़ते गए, वैसे-वैसे अंग्रेजी का धंधा और तेज होता गया। यहां तक कि उदारीकरण ने सबसे ज्यादा नुकसान भारतीय भाषाओं का किया है। उदारीकरण ने यूरोप में तो अंग्रेजी को नहीं बढ़ाया और न चीन, सिंगापुर से लेकर दक्षिण पूर्व के दूसरे देशों में। अगर अंग्रेजी बड़ी है, तो ब्रिटिश उपनिवेश और भारत में सबसे आगे है। यह अचानक नहीं है दुनिया में अंग्रेजी में छपने वाली किताबों की संख्या सबसे ज्यादा भारत में है।

इसमें केंद्र सरकार की नीतियों का भी उतना ही योगदान रहा है। ज्ञान आयोग का उद्देश्य ज्ञान को बढ़ाना होना चाहिए था, लेकिन वह पूरी तरह अंग्रेजी को बढ़ाने में ही लगा रहा। उसके नीति नियंता सैम पित्रोदा तो यह तक कहते थे कि अंग्रेजी के बूते भारतीयों को विदेशों में लाखों रोजगार मिलेंगे। निश्चित रूप से शिक्षा पर इसका असर होना ही था। निजी स्कूल तो अंग्रेजी के बूते आगे बढ़ते ही रहे, सरकारी स्कूलों पर भी इसकी गाज गिरी है। रेलवे के अधीन लगभग चार सौ स्कूल हुआ करते थे और ज्यादातर भारतीय भाषाओं के साथ-साथ अंग्रेजी भाषा भी पढ़ाते थे। लेकिन धीरे-धीरे माध्यम भाषा की होड़ में वहां से बच्चे महंगे निजी स्कूलों की तरफ बढ़ते गए। नतीजा अस्सी फीसद रेलवे के स्कूल बंद हो गए हैं और शेष भी बंद होने के कगार पर हैं।

हर सरकारी कर्मचारी, जिसके पास थोड़े-बहुत पैसे हैं, वह अंग्रेजी स्कूलों में ही अपने बच्चों को भेजता है। पिछले वर्ष उत्तर प्रदेश सरकार ने पांच हजार स्कूलों में अंग्रेजी माध्यम शुरू करने का फैसला किया। ऐसा ही फैसला उत्तराखंड और राजस्थान सरकार ने भी किया। इसी कारण इन सभी राज्यों में हजारों सरकारी स्कूल बंद कर दिए गए हैं। दिल्ली के कारपोरेशन स्कूलों में भी पिछले वर्ष सौ स्कूलों में अंग्रेजी माध्यम से शिक्षा देने की शुरुआत की गई। वे बच्चे, जो अपनी भाषा भी ठीक से नहीं जानते, उन पर विदेशी भाषा लाद देना मनोवैज्ञानिक रूप से इतना आतंक पैदा करता है कि वे स्कूल ही छोड़ देते हैं।

इसलिए पिछले कुछ वर्षों में भारतीय भाषाओं के लिए जो कदम उठाए गए हैं उनका स्वागत किया जाना चाहिए। मेडिकल प्रवेश परीक्षा जिसे 'नीट' कहते हैं, पहले केवल अंग्रेजी में होती थी, पिछले वर्ष वह आठ भाषाओं में शुरू हुई और इस वर्ष वह तेरह भाषाओं में होगी। आईआईटी आदि के लिए प्रवेश परीक्षाओं में भी भारतीय भाषाओं की शुरुआत हो गई है। दो वर्ष पहले केंद्र सरकार ने एक और घोषणा की थी- राष्ट्रीय भर्ती परीक्षा की। इसके अंतर्गत कर्मचारी चयन आयोग, रेल भर्ती बोर्ड और बैंक भर्ती बोर्ड तीनों को मिलाकर एक एजेंसी ही परीक्षा लेगी और शुरुआत के तौर पर इसमें बारह भाषाओं में परीक्षा कराने का फैसला किया गया है।

जाति और धर्म से कहीं ज्यादा समाज का विभाजन अंग्रेजी ने किया है। जो अंग्रेजी जानते हैं वे अमीर हैं, अच्छी फीस दे सकते हैं, दिल्ली के महंगे कॉलजों में पढ़ सकते हैं। कोचिंग संस्थानों में लाखों की फीस दे सकते हैं और इसी के बूते दो फीसद अंग्रेजी जानने वाले भारतीय प्रशासनिक सेवा के अट्ठानबे फीसद पदों को हथिया लेते हैं। दुनिया भर के शिक्षाविद यह कहते आए हैं कि बच्चों की रचनात्मकता उनकी अपनी भाषा में ही सामने आती है। बावजूद इसके जिस दिल्ली विश्वविद्यालय में सत्तर के दशक में लगभग बीस फीसद अपनी भाषाओं में स्नातकोत्तर पढ़ाई उपलब्ध थी, आज लगभग शून्य हो चुकी है। जवाहरलाल नेहरू विश्वविद्यालय में भी भारतीय भाषाओं को माध्यम नहीं रखा गया। जबकि मानविकी के विषय जैसे इतिहास, राजनीति विज्ञान, समाज विज्ञान, मनोविज्ञान, अर्थशास्त्र आदि की किताबें भारतीय भाषाओं में पर्याप्त उपलब्ध हैं और उतनी ही उत्कृष्ट भी। मगर पिछले तीस सालों में ये किताबें चलन से बाहर हो गई हैं।

तकनीकी विषयों में पढ़ाने की चुनौती तो बहुत बड़ी है, लेकिन असंभव नहीं है। साठ-सत्तर की उम्र तक पहुंचे लगभग सभी प्रोफेसरों की पढ़ाई बारहवीं तक अपनी भाषाओं में हुई है। केंद्र और राज्य सरकारों को तुरंत ऐसे विद्वानों को जोड़ने की जरूरत है, जिससे विद्यार्थियों को उत्कृष्ट सामग्री उपलब्ध हो। राजनीतिक विचारधारा इसमें आड़े नहीं आनी चाहिए। सरकार को संसाधन तो जुटाने होंगे ही शिक्षकों के शिक्षक प्रशिक्षण और उनकी मानसिकता को भी बदलने की जरूरत है। भारतीय भाषाओं में पढ़ने-पढ़ाने का अर्थ अंग्रेजी समेत किसी भी विदेशी भाषा का विरोध नहीं है। भाषा के रूप में हर विद्यार्थी को उन्हें पढ़ने की आजादी है, लेकिन जब माध्यम के रूप में उस पर लादी जाती है तो उससे पूरी शिक्षा व्यवस्था बर्बाद होती है। देश भर के दर्जनों इंजीनियरिंग कॉलेजों से आत्महत्या की खबरें आ चुकी हैं। पता नहीं देश के कर्णधार बुद्धिजीवियों की संवेदना भाषा के मसले पर कब जागेगी?

क्या पेगासस स्पाइवेयर ने आपके फोन को भी टारगेट किया है?

इजरायल स्थित एनएसओ ग्रुप के पेगासस स्पाइवेयर ने कथित तौर पर भारत सहित देशों में सरकारों को हजारों कार्यकर्ताओं, पत्रकारों और राजनेताओं के फोन हैक करने में मदद की थी। समाचार आउटलेट्स के एक अंतरराष्ट्रीय संघ ने पिछले कुछ दिनों में टारगेट्स के बारे में कुछ जानकारी दी है। हालांकि, पेगासस के जरिए टारगेट हमलों के दायरे को अभी तक परिभाषित नहीं किया गया है। इस बीच, एमनेस्टी इंटरनेशनल के शोधकर्ताओं ने एक टूल विकसित किया है जिससे आप देख सकते हैं कि आपका फोन स्पाइवेयर द्वारा टारगेट है या नहीं।

आईफोन पर पता लगाना आसान

इस टूल का नाम मोबाइल वेरिफिकेशन टूलकिट (एमवीटी) है, जो पहचानने में आपकी सहायता करना है कि क्या पेगासस स्पाइवेयर ने आपके फोन को टारगेट किया है। यह एंड्रॉइड और आईओएस दोनों उपकरणों के साथ काम करता है, हालांकि शोधकर्ताओं ने नोट किया कि ऐप्पल हार्डवेयर पर अधिक फोरेंसिक ट्रेसेस उपलब्ध होने के कारण एंड्रॉइड डिवाइस की तुलना में आईफोन हैंडसेट पर ये पता लगाना आसान है। गैर-सरकारी संगठन ने अपने शोध में कहा, 'एमनेस्टी इंटरनेशनल के अनुभव में स्टॉक एंड्रॉइड डिवाइस की तुलना में ऐप्पल आईओएस उपकरणों पर जांचकर्ताओं के लिए काफी अधिक फोरेंसिक ट्रेसेस उपलब्ध हैं, इसलिए हमारी मेथॉडॉलॉजी ऐप्पल के आईओएस डिवाइस पर फोकस्ड है।'

यूजर को करना होगा ये काम

उपयोगकर्ताओं को पेगासस इंडिकेटर्स को देखने के लिए एमवीटी को अपने फोन पर लोकली स्टोर्ड फाइलों को डिक्रिप्ट करने देने के लिए अपने डेटा का बैकअप जनरेट करने की आवश्यकता है। हालांकि, आईफोन के मामले में, विश्लेषण के लिए एक फुल फाइल सिस्टम डंप का भी उपयोग किया जा सकता है। अपने वर्तमान चरण में, एमवीटी को कुछ कमांड लाइन नॉलेज की आवश्यकता होती है। हालांकि, यह समय के साथ एक ग्राफिकल यूजर इंटरफेस (GUI) प्राप्त कर सकता है। टूल का कोड भी ओपन सोर्स है और इसके डिटेल्ड डॉक्यूमेंटेशन के साथ GitHub के माध्यम से उपलब्ध है

ऐसे काम करता है टूल

एक बार बैकअप बन जाने के बाद, एमवीटी एनएसओ के पेगासस से संबंधित निशान देखने के लिए डोमेन नाम और बायनेरिज़ जैसे ज्ञात इंडिकेटर्स का उपयोग करता है। यदि वे एन्क्रिप्टेड हैं तो टूल आईओएस बैकअप को डिक्रिप्ट करने में भी सक्षम है। इसके अलावा, यह किसी भी संभावित समझौता के लिए डेटा का विश्लेषण करने के लिए एंड्रॉइड डिवाइस से इंस्टॉल किए गए ऐप्स और डायग्नोस्टिक जानकारी निकालता है। एमवीटी को सिस्टम पर चलने के लिए कम से कम Python 3.6 की आवश्यकता होती है। यदि आप मैक मशीन पर हैं, तो इसके लिए एक्सकोड और होमब्रू भी इंस्टॉल्ड होना चाहिए। यदि आप किसी एंड्रॉइड डिवाइस पर फोरेंसिक ट्रेसेस देखना चाहते हैं, तो आपको डिपेंडेंसीज भी इंस्टॉल करनी होंगी।

आपके सिस्टम पर एमवीटी के इंस्टॉलेशन के बाद, आपको एमनेस्टी के समझौता इंडिकेटर्स (आईओसी) में फीड करने की आवश्यकता है जो गिटहब पर उपलब्ध हैं। जैसा कि टेकक्रंच द्वारा रिपोर्ट किया गया है, ऐसा एक उदाहरण हो सकता है जिसमें टूल को एक संभावित समझौता मिल सकता है जो कि गलत सकारात्मक हो सकता है और उपलब्ध आईओसी से हटाने की आवश्यकता हो सकती है। हालांकि, आप ज्ञात इंडिकेटर्स की जांच करने और अपने बैकअप में उन्हें देखने के लिए संगठन की फोरेंसिक मेथॉडॉलॉजी रिपोर्ट पढ़ सकते हैं।

एमनेस्टी इंटरनेशनल के सहयोग से, पेरिस स्थित पत्रकारिता गैर-लाभकारी संस्था फॉरबिडन स्टोरीज ने समाचार आउटलेट कंसोर्टियम पेगासस प्रोजेक्ट के साथ 50,000 से अधिक फोन नंबरों की एक लिस्ट शेयर की। कुल संख्या में से, पत्रकार 50 देशों में एक हजार से अधिक व्यक्तियों को खोजने में सक्षम थे, जिन्हें कथित तौर पर पेगासस स्पाइवेयर द्वारा टारगेट किया गया था। टारगेट्स की लिस्ट में द एसोसिएटेड प्रेस, रॉयटर्स, सीएनएन, द वॉल स्ट्रीट जर्नल और इंडियाज द वायर सहित अन्य संगठनों के लिए काम करने वाले पत्रकार शामिल थे। भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के राहुल गांधी और राजनीतिक रणनीतिकार प्रशांत किशोर सहित कुछ राजनीतिक हस्तियों को भी हाल ही में टारगेट का हिस्सा होने का दावा किया गया था।

मा. नरोत्तम मिश्रा, गृहमंत्री

बंटी गौतम

शुकर्ण मिश्रा

विवेक मिश्रा

सिद्धू गौतम

हमारा देश हमारा अभिमान

पत्रिका के प्रथम संस्करण के सुअवसर पर हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका की पूरी टीम और बड़े भाई मनोज चतुर्वेदी संपादक जी को

बहुत-बहुत शुभकामनाएं

निशांत भार्गव

वर्धमान एजेंसी डबरा की ओर से

हमारा देश हमारा अभिमान

पत्रिका के प्रथम संस्करण के सुअवसर पर हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका की पूरी टीम और बड़े भाई मनोज चतुर्वेदी संपादक जी को

बहुत-बहुत शुभकामनाएं

अमित जैन

सोनल जैन

क्या कोरोना का डेल्टा स्वरूप हमें हरा रहा है?

...क्यों इस वेरिएंट से संपर्क में आए लोगों का पता लगाना है मुश्किल

ऑस्ट्रेलिया के ग्रेटर सिडनी में 26 जून को लॉकडाउन शुरू हुआ और तकरीबन एक महीने बाद न्यू साउथ वेल्स में कोविड-19 के एक दिन में करीब 100 नए मामले दर्ज किए जा रहे हैं। हम वायरस को पूर्वी उपनगरों से बाहर भी फैलते हुए देख रहे हैं। इसके बाद यह संक्रमण न्यू साउथ वेल्स से विक्टोरिया तक फैला जिससे दक्षिण ऑस्ट्रेलिया के बाद वहां भी लॉकडाउन लगाना पड़ा। डेल्टा अब तक पता चले सभी स्वरूपों में सबसे अधिक संक्रामक है। कोरोना वायरस के मूल वुहान स्वरूप की जगह मार्च 2020 तक अधिक संक्रामक डी614जी स्वरूप ने ली और यह स्वरूप विक्टोरिया में दूसरी लहर के लिए जिम्मेदार था। इसके बाद सितंबर में ब्रिटेन में अल्फा स्वरूप सामने आया तथा यह और अधिक संक्रामक था। अल्फा 2021 की शुरुआत तक दुनियाभर में फैलता दिखा लेकिन फिर डेल्टा स्वरूप आ गया। यह स्वरूप उत्परिवर्ती है जो इसे अल्फा से कहीं अधिक संक्रामक बनाता है और इसे टीकों से मिली प्रतिरक्षा से बचाने में सक्षम बनाता है। एक अध्ययन में पाया गया कि डेल्टा स्वरूप से अस्पताल, आईसीयू में भर्ती होने और मौत होने का खतरा दोगुना है। इसलिए न्यू साउथ वेल्स की जांच और संपर्क में आए लोगों का पता लगाने की रणनीति डेल्टा के खिलाफ काम नहीं आई।

डेल्टा ने काम और अधिक मुश्किल बना दिया है

1. हर किसी के लिए पर्याप्त टीकों की कमी में महामारी को नियंत्रित करने के लिए जांच करके सभी नए मामलों का पता लगाना और संक्रमण को फैलने से रोकने के लिए उन्हें पृथक करने की आवश्यकता है।
2. संपर्क में आए सभी लोगों का पता लगाने और उन्हें निश्चित अवधि तक पृथक करने की आवश्यकता है ताकि संक्रमण और न फैले। सार्स-सीओवी-2 उन लोगों में अधिक संक्रामक है जिनमें बीमारी के लक्षण नहीं है इसलिए संपर्क में आए लोगों का पता लगाए बिना इन लोगों को यह नहीं पता चलेगा कि वे संक्रमित हैं और वे दूसरे लोगों को भी संक्रमित कर सकते हैं। साथ ही संपर्क में आए लोगों का पता लगाना इसलिए भी महत्वपूर्ण है कि ताकि आपको पता चले कि किस व्यक्ति से उन्हें संक्रमण हुआ।
3. मास्क लगाना आवश्यक है।
4. लोगों के बीच संपर्क को कम करने के लिए सामाजिक दूरी का पालन करना आवश्यक है।

एक विस्तृत अध्ययन में पाया गया कि संक्रमित के संपर्क में आने से संक्रमित होने के बीच औसत समय 2020 में छह दिन का था लेकिन डेल्टा स्वरूप के मामले में यह चार दिन है। इससे संपर्क में आए लोगों के संक्रमित होने से पहले उनका पता लगाना मुश्किल हो गया है। तो हर बार संक्रमण फैलने पर लॉकडाउन के अलावा हम क्या कर सकते हैं? सबसे पहले हमें टीका लगवाने की आवश्यकता है। इजराइल जैसे देशों ने अपनी 60 प्रतिशत से अधिक आबादी को पूरी तरह टीका लगा दिया है और वहां डेल्टा स्वरूप से संक्रमण फैल तो रहा है लेकिन लोग अस्पताल में भर्ती होने तथा मरने से बच रहे हैं।

जानलेवा था अप्रैल और मई का महीना

ताजा सरकारी आंकड़ों के अनुसार, अप्रैल 2020 के बाद से भारत में कोरोना से हुई आधी मौतें सिर्फ दो महीनों यानी अप्रैल और मई 2021 में हुईं। ये आंकड़े इस बात पर प्रकाश डालती है कि दो महीने कितने घातक थे और इसका राज्यों पर किस तरह का प्रभाव पड़ा।

सिर्फ अप्रैल महीने में 1.20 लाख मौतें

एनसीडीसी ने कहा कि अप्रैल 2020 और मई 2021 के बीच कुल 329,065 कोविड मौतों में से, 166,632 अप्रैल और मई 2021 में हुईं। मई में 120,770 लोगों की मौत हुई और अप्रैल में 45,882 लोगों की जान गई। जून में, 69,354 कोविड मौतें दर्ज की गईं। अप्रैल-मई से पहले, एक महीने के लिए सबसे अधिक मौतें सितंबर 2020 में 33,035 हुई थीं। सितंबर-अक्टूबर को कोरोना की पहली लहर का चरम माना जाता था। उसके बाद फरवरी 2021 में इस महामारी से 2,777 मरीजों की जान गई।

मिलने लगे थे दूसरी लहर के संकेत

विशेषज्ञों ने कहा कि मार्च में लहर के संकेत सामने आने लगे, जब पंजाब, मध्य प्रदेश, हरियाणा और गुजरात में कोरोना से हुई मौत में इजाफा देखा गया। राष्ट्रीय स्तर पर भी यह संख्या दोगुनी से अधिक हो गई। इन सभी राज्यों में भी कोविड के मामले तेजी से बढ़ रहे थे। यह वह समय भी था जब राजनीतिक दल के नेता असम, केरल, पश्चिम बंगाल और तमिलनाडु में विधानसभा चुनावों के लिए आक्रामक रूप से प्रचार कर रहे थे। इसके अलावा सुपर स्प्रेडर हरिद्वार महाकुंभ की तैयारी की जा रही थी।

चुनावी राज्य : मौत में पांच गुना इजाफा

2 मई को विधानसभा चुनाव के परिणाम के बाद, चुनाव राज्यों में कोविड की मौत पांच गुना बढ़ गई। आरटीआई से मिली जानकारी में इसका खुलासा हुआ गहै।अप्रैल में पश्चिम बंगाल में 921 से मई में 4,162, असम में 177 से 2019 तक, तमिलनाडु में 1,233 से 9,821 और इसी अवधि में केरल में 653 से 3,382 मौतें हुईं। डॉ शहीद जमील ने कहा, "इस अवधि के दौरान अधिक मामलों का एक कारण मई में अधिक परीक्षण हो सकता है। मौतों से संकेत मिलता हैं कि राज्य सरकारों ने तीसरी लहर के संकेतों को नजरअंदाज किया और देर से प्रतिक्रिया दी।"

'यूपी-बिहार ने छुपाए मौत के आंकड़े'

एनसीडीसी द्वारा साझा की गई जानकारी विभिन्न राज्यों में दूसरी कोविड लहर के प्रभाव को दर्शाती है और इंगित करती है कि बिहार और उत्तर प्रदेश जैसे कुछ उच्च आबादी वाले राज्यों में मौतों की वास्तविक संख्या की सूचना नहीं दी गई है, जहां बड़ी ग्रामीण आबादी है, जहां मौतों की रिकॉर्डिंग शहरों की तरह संरचित नहीं है। जमील ने कहा, 'बिहार और यूपी में इस तरह के अजीबोगरीब कोविड के आंकड़े उच्च प्रसार के संकेत बताने के बावजूद एक रहस्य है। उत्तर प्रदेश, जिसने अप्रैल 2020 और मई 2021 के बीच 20,346 मौतों की सूचना दी, वहां मई, 2021 में 8,108 और अप्रैल, 2021 में 3,438 मौतें दर्ज की गईं। पड़ोसी उत्तराखंड में मई में 3,899 मौतों की सूचना दी गई, जो उस महीने उत्तर प्रदेश में हुई कुल मौतों का 48% है। बिहार, जहां मई में 2,624 मौतें हुईं, जून के पहले सप्ताह में दूसरी लहर के दौरान 3,951 मरीजों की कोरोना के कारण जान गई। इससे मरने वालों की संख्या 6,575 हो गई थी। इन मामलों को तब जोड़ा गया जब पटना उच्च न्यायालय ने राज्य सरकार को राज्य में सभी मौतों का ऑडिट करने के लिए कहा। बिहार के स्वास्थ्य विभाग के एक वरिष्ठ अधिकारी ने कहा, "इसमें अप्रैल और मई में हुई मौतें शामिल हैं।"

सच्चे साधकों की परीक्षा

श्रीराम शर्मा

असुरता इन दिनों अपने चरम उत्कर्ष पर हैं। दीपक की लौ जब बुझने को होती है तो अधिक तीव्र प्रकाश फेंकती और बुझ जाती है। असुरता भी जब मिटने को होती है तो जाते-जाते कुछ ना कुछ करके जाने की ठान लेती है। इन दिनों भी यही सब हो रहा है। असुर तो अपने नए तेवर और नए हथियार के साथ आक्रमण करने पर उतारू है। यह भ्रम, अश्रद्धा, लांछन, लोकापवाद फैलाने तथा कोई आक्रमण करने या दुर्घटना उत्पन्न करने जैसे किसी भी रूप में हो सकता है। असुरता इस प्रकार के अपने षड्यंत्रों को सफल बनाने में पूरी तत्परता के साथ लगी हुई है। उसका पूतना और ताड़का जैसा विकराल रूप देखने के लिए हम में से हरेक को तैयार रहना चाहिए। समुद्र मंथन के समय सबसे पहले विष निकला था बाद में वारुणी, फिर धीरे-धीरे क्रमशः उसमें से रत्न निकलते गए। अमृत सबसे पीछे निकला था। गायत्री महायज्ञ की धर्म अनुष्ठान में भी पहले विष ही निकल रहा है ईष्यालु लोग विरोध और विलगता करते हैं, आगे और भी अधिक करेंगे। यह इस बात की परीक्षा के लिए है कि आयोजन के कार्यकर्ताओं में किसकी निष्ठा सच्ची, किसकी झूठी है। जो दृढ़ निश्चय ही है वहीं अंत तक ठहरे तो उन्हें लाभ मिलेगा।

उथले स्वभाव और बालबुद्धि वाले सहयोगी यदि हट जाएं तो कोई हर्ज भी नहीं है। इस छांट का काम निंदको द्वारा बड़ी सरलता से पूरा हो जाता है। दुर्बल मनो भूमि वाले लोग तनिक थी संदेहास्पद बात सुनकर भाग खड़े होते हैं भीड़ को हटाने की दृष्टि से यह पलायन उचित भी है। गायत्री आंदोलन के प्रभाव से अब साधकों की भीड़ भी बहुत बड़ी हो गई है इनमें उच्च श्रेणी की सच्चे साधकों की परीक्षा के लिए यह उचित भी है कि झूठे-सच्चे लोकापवाद फैलें। विवेकवान लोग इन निंदाओं का वास्तविक कारण ढूंढेंगे तो सच्चाई मालूम पड़ जाएगी और उनकी श्रद्धा पहले से भी दूनी-चौगुनी बढ़ जाएगी और जो लोग दुर्बल आत्मा के है, वे तलाश करने की झगड़े में न पड़कर सुनने मात्र से ही भाग खड़े होंगे। इस प्रकार दुर्बल आत्माओं की भीड़ सहज ही छूट जाएगी। असुरता के आक्रमणों से जहां यज्ञों में बड़ी सारी अड़चने पड़ती हैं, वहां संयोजक में दृढ़ता पुरुषार्थ का मुकाबला करने की शक्ति की अभिवृद्धि, सच्चे धर्मप्रेमियों की सच्चाई जान लेने पर श्रद्धा का और अधिक विकास और दुर्बल आत्माओं की अनावश्यक भीड़ की छंटनी यह लाभ भी है। इसलिए अपने लक्ष्य पर सदा अग्रसर रहें। मार्ग में कितनी भी बाधाएं आ जाएं, अपने मार्ग से कभी पीछे न हटें, बल्कि पूरे जोश और पुरुषार्थ के साथ अपनी मंजिल को हासिल करें। सच्चे साधक कभी भी किसी परीक्षा से घबराते नहीं हैं और हमेशा सबसे आगे निकल जाते हैं।

सृष्टि का सम्मान- श्रीश्री रवि शंकर

जिस प्रेम से हमारा जीवन फल फूल रहा है, उस प्रेम को मान्यता देना ही पूजा में फूल को अर्पण करना है। परमात्मा हमें हरेक मौसम में तरह-तरह के फल देते हैं, हम फलों को उन्हें अर्पित करते हैं। प्रकृति हमें भोजन देती है, हम बदले में भगवान को अनाज चढ़ाते हैं...

सृष्टि का सम्मान करो। एक पेड़ को भी सम्मान के साथ देखो। पेड़ के अस्तित्व के लिए कृतज्ञ रहो। वह हमारी सांसों द्वारा निकले जहर को लेकर वायु को शुद्ध करता है। क्या आपने ऐसा कभी सोचा है कि पेड़ आपके हैं? अगर सृष्टि का सम्मान करेंगे, तो यह अनुभव करेंगे कि यह सभी आपके हैं। सम्मान करना दिव्य प्रेम का लक्षण है। इसी सम्मान को पूजा कहते हैं। पूजा से भक्ति पनपती है। जो कुछ प्रकृति हमारे लिए करती है, उसी की नकल हम पूजा की विधि में करते हैं। परमात्मा भिन्न-भिन्न रूपों में हमारी पूजा कर रहा है। हम पूजा द्वारा वह सब ईश्वर को वापस अर्पित करते हैं। पूजा में जो फूल चढ़ाए जाते हैं, वह फूल प्रेम के प्रतीक हैं। ईश्वर हमसे प्रेम करने अलग-अलग रूपों में आते हैं। माता-पिता, पति-पत्नी, मित्र, बच्चे आदि अनेक रूपों में। वही प्रेम गुरु के रूप में आकर हमें परमात्म स्वरूप तक पहुंचाता है जोकि हमारा सच्चा स्वभाव है। जिस प्रेम से हमारा जीवन फल फूल रहा है, उस प्रेम को मान्यता देना ही पूजा में फूल को अर्पण करना है। परमात्मा हमें हरेक मौसम में तरह-तरह के फल देते हैं, हम फलों को उन्हें अर्पित करते हैं। प्रकृति हमें भोजन देती है, हम बदले में भगवान को अनाज चढ़ाते हैं। इसी तरह प्रकृति में चांद व सूरज रोज उदय और अस्त होकर हमें लगातार प्रकाश देते हैं। उसी की नकल करके हम कपूर व दीपक की आरती करते हैं। सुगंध के लिए धूप जलाते हैं।

पूजा में पांचों इंद्रियों का पूरे भाव से प्रयोग करते हैं। पूर्ण कृतज्ञता और सम्मान भाव ही अर्चना है। आपने बच्चों को देखा होगा कि वह अपने छोटे-छोटे बरतनों से खेलते हैं और चाय व रोटी बनाते हैं। मां के पास आकर बोलते हैं, 'मां आप चाय पीजिए' वह खाली कप से भी ऐसे कल्पना करते हैं जैसे सचमुच चाय पी रहे हैं। वह आपके साथ खेल खेलते हैं। जैसा आप उनके साथ करते हैं, वह भी वैसा ही आपके साथ करते हैं। वह गुडिया को सुलाते हैं, खाना खिलाते हैं, नहलाते हैं। ऐसे ही पूजा में हम ईश्वर के साथ वही करते हैं जो ईश्वर हमारे साथ कर रहा है। पूजा नकल, सम्मान, खेल, प्रेम सब का सम्मिश्रण है। अधिकतर हम जिससे प्रेम करते हैं, उसको पाना चाहते हैं। पाने की चाह उस सुंदर वस्तु को कुरूप कर देती है। पूजा में इसके विपरीत होता है। पूजा में आदर, सम्मान के साथ स्वयं समर्पित हो जाते हैं। अधिकार जताने के ठीक विपरीत हम पूजा में अर्पण करना चाहते हैं। अधिकार जताने की चाह के कारण अधिकतर आपके संबंध भी पूर्णतः विकसित नहीं हो पाते। हम मांगना शुरू कर देते हैं। संबंधों में लोग अधिकांशतः कहते हैं, मैंने तो आपके लिए इतना किया है, बदले में आपने मेरे लिए क्या किया? मांग, सम्मान करने के विपरीत है। संबंध को बनाए रखने के लिए उसमें सम्मान का होना आवश्यक है। सृष्टि का सम्मान करो।

ब्यूटी ब्लंडर से जरा बचकर

सुंदर दिखना और सुंदरता को बनाये रखना, दोनों ही अलग-अलग चीजें हैं। ब्यूटी प्रोडक्ट्स और मेकअप आपकी ब्यूटी को सिर्फ निखारते हैं। लेकिन गलत ब्यूटी हैबिट्स इसे ज़ीरो भी कर सकती हैं। अगर आप चाहती हैं कि ब्यूटी प्रोडक्ट्स या ब्यूटी ट्रीटमेंट (केमिकल या होममेड) आपको हमेशा दमकता रखे तो इसके लिए बैड ब्यूटी हैबिट्स से बचकर रहें।

मेकअप हटाना भी ज़रूरी

आप रोज़ाना या किसी खास मौके पर मेकअप ज़रूर करती हैं। जितना मेकअप करने में तत्पर रहती हैं। क्या उसे रिमूव करने पर भी रहती हैं? शायद नहीं। जान लें कि रात में सोने से पहले मेकअप रिमूव करना बहुत ज़रूरी है। इसमें आपने आलस दिखाया तो एक, दो दिन में नहीं कुछ दिनों में स्किन सारे राज़ खोल देगी। आपको स्किन प्रॉब्लम्स, डार्क सर्कल्स, कील-मुंहासे, दाग-धब्बे, फाइन लाइंस की समस्या से जूझना होगा। रात को सोने से पहले मेकअप उतारकर व धुले चेहरे पर मॉइश्चराइज़र लगाना कभी नहीं भूलना चाहिए।

बार-बार चेहरा छूना

बहुत-सी लड़कियों को बार-बार चेहरा छूने की आदत होती है। यदि आप भी ऐसा करती हैं, तो इसे अभी से छोड़ दें। हाथ पर तमाम तरह के बैक्टीरिया, धूल-मिट्टी, तेल व पसीना होता है, जो बहुत बार आंखों से नहीं दिखता। ऐसे में बार-बार चेहरे पर हाथ फेरने से स्किन प्रॉब्लम्स हो सकती हैं।

मुहांसों से छेड़खानी

आपको भी पिंपल्स से छेड़छाड़ की आदत है तो यह अभी से ही बंद कर दें। ऐसा करके एक पल के लिए आप खूबसूरत दिखेंगीं, लेकिन आस-पास बैक्टीरिया फैलेंगे और अनगिनत स्किन प्रॉबलम्स होंगी। मुहांसे के दाग फीके करने के लिए सोने से पहले टूथपेस्ट लगाएं।

सनस्क्रीन को छोड़ना

बहुत-सी लड़कियां घर से बाहर जाने पर सनस्क्रीन नहीं लगातीं। रोज़-रोज़ सनस्क्रीन को इग्नोर करने से डार्क लाइंस, रिंकल्स और डार्क सर्कल्स चेहरे पर दिखते हैं। धूप में निकलने से पहले मॉइश्चराइज़र और अच्छे एसपीएफ युक्त सनस्क्रीन को चेहरे से लेकर शरीर के खुले भाग पर लगाएं। ताकि टैनिंग नहीं हो पाए।

साबुन से चेहरा धोना

चेहरे को साबुन से न धोएं। साबुन स्किन की प्रोटेक्टिव लेयर को तहस-नहस कर देगी। जो सनबर्न, रूखी त्वचा और ऐजिंग का कारण बनता है। अपनी स्किन टाइप के अनुसार क्लींजर का चयन करें।

ज्यादा स्क्रबिंग नहीं लगाएं

माना कि स्क्रबिंग से मृत कोशिकाएं निकल जाती हैं। लेकिन रोज़ाना स्क्रबिंग करने से त्वचा ढीली होने लगती है। साथ ही इससे स्किन ओवर सेंसटिव होकर वाइटहेड्स का कारण भी बन सकती है।

पुराने मेकअप ब्रश से मोह तोड़ें

हर बार एक ही ब्रश से मेकअप कर रही हैं, तो बंद कर दें। ब्रश पर बैक्टीरिया और फंगस पनपते हैं। साथ ही गंदे ब्रशेज से मेकअप में फिनिशिंग आना संभव नहीं। हर एक-दो दिन में ब्रश को अच्छ से धोएं।

डार्क सर्कल पर लाइट मेकअप

ब्यूटी में सबसे ज्यादा मायने रखता है कि आपको प्रोडक्टस के बारे में कितनी जानकारी है। आजकल मार्केट में बहुत से प्रोडक्ट आ रहे हैं लेकिन महिलाओं को उनकी सही जानकारी नहीं होती। अधिकतर महिलाएं नहीं जानती कि वे अपनी स्किन पर कैसे प्रोडक्ट का इस्तेमाल करें कि वे खूबसूरत दिखें। ब्यूटीशियन बबीता बत्रा कहना है कि अच्छी क्वालिटी के प्रोडक्ट का सही जानकारी के साथ इस्तेमाल करने से हर तरह के कॉम्पलेक्शन की महिलाएं खूबसूरती बढ़ा सकती हैं।

मॉइस्चराइजर

मेकअप करने से पहले त्वचा को मॉइस्चराइजिंग करें। क्योंकि रूखी त्वचा पर मेकअप और भी डल नज़र आता है। ऐसा करने से आप जब भी मेकअप करेंगे वो अच्छे से ब्लेंड होता है और नेचुरल भी दिखता है। हर रोज सुबह और रात में सोने से पहले क्लींजिंग, टोंनिंग और मॉइस्चराइजिंग करें। अच्छी क्वालिटी के मॉइस्चराइजर का इस्तेमाल करें।

ब्लशर शेड

सांवली स्किन के साथ अगर आप ब्लश करना चाहती हैं तो इसमें रोज, डीप ओरेंज और कोरल जैसे कलर्स का चयन कर सकती हैं। ऐसे में ब्राउन और बैज टोन से बचना चाहिए। डार्क स्किन टोन वाली महिलाएं दिन के लिए डार्क रोज़ जैसे शेड्स लगा सकती हैं। शाम के लिए प्लम, वाइन और ब्रॉन्ज शेड्स इस्तेमाल कर सकते हैं। शाम की पार्टियों के लिए, गोल्ड की टोन वाले शिमर सांवले रंग के लिए बेहतरीन काम कर सकते हैं।

फाउंडेशन

फाउंडेशन मेकअप का आधार होता है। इसलिए हमेशा अपनी नैचुरल स्किन से मिलते जुलते फाउंडेशन का चुनाव करना चाहिए। अपने स्किन टोन से अधिक हल्के फाउंडेशन न खरीदें अन्यथा चेहरे पर इसे लगाने से जगह-जगह पैच बन सकते हैं। मेकअप पूरी तरह से खराब हो सकता है। डार्क स्किन के लिए आमतौर पर दो तरह का फाउंडेशन इस्तेमाल किया जाता है। हल्के शेड का, जिसे चेहरे के बीच में लगाया जाता है और दूसरा नैचुरल टोन का होता है जिसे चेहरे के बाकी हिस्सों पर लगाया जाता है। इसे लगाने के बाद चेहरा साफ, उज्ज्वल और सुंदर दिखायी देता है। डार्क स्किन के लिए लिक्विड फाउंडेशन अच्छा होता है।

आई मेकअप

सांवली त्वचा वाली महिलाओं को आई शैडो के लिए वॉर्म ब्राउन, चॉकलेट, सिल्वर ब्रॉन्ज या ग्रीन शेड का चुनाव करना चाहिए, ये शेड सांवली त्वचा पर बहुत अच्छे लगते हैं। ब्राउन मस्कारा आपके कॉम्प्लेक्शन को कॉम्प्लिमेंट करेंगा। आई लाइनर भी ब्राउन ही लगाएं।

कंसीलर

आंखों के नीचे काले घेरे हैं तो फाउंडेशन से वे कवर नहीं होंगे। इसके लिए कंसीलर का इस्तेमाल करें। कंसीलर से आप स्किन के धब्बे छुपा सकते हैं। डार्क स्किन टोन के लिए ऑरेंज टोन वाले कंसीलर अच्छे रहते हैं। ऑरेंज या रेड शेड वाला कंसीलर लगाएं और अच्छे से ब्लेंड करें फिर इसके ऊपर हलके रंग का कंसीलर लगाएं।

लोकगीतों की सबसे खास बात यह रही है कि ये भारतीय समाज का आईना होने के साथ स्त्री या पुरुष के दुख को बहुत बारीकी से अभिव्यक्त करते हैं। इतनी बारीकी कि कई बार सुनने वाले की आंख में आंसू आ जाए।

लोक के गीत

विडंबना यह है कि लोकगीतों का सुर अवसान की ओर तेजी से बढ़ता गया है। शहरों में शादी-विवाह से लेकर जन्मदिन और अन्य पर्व-त्योहारों पर बॉलीवुड संगीत बजाने का प्रचलन तेजी से बढ़ा है।

• सरस्वती रमेश

मानसून के दस्तक के साथ ही खेतों में बढ़ जाती है हलचल। क्यारियों के बीच से आने लगती है मधुर गीतों की आवाज। इन गीतों के भाव और उनके बोल में छिपे संदेश खेतिहर महिलाओं को थकने नहीं देते। गाते-गाते कब कई बीघे जमीन पर धान की रोपाई हो जाती है और धानरोपनी स्त्रियों को पता भी नहीं चलता। खेत मे लगे पुरुष इन्हीं गीतों से ताजगी लेकर ऊजार्वान बने रहते हैं। ये गीत एक तरह से तन और मन को जाग्रत रखने का तरीका रहा है। इन गीतों को कागज पर कलम से रचा गया हो या नहीं, मगर ये सदियों से लोक की जुबान से ही अनवरत यात्रा पर हैं। हमारे रिश्तों, घर समाज, परिवार और कृषि को जोड़ने के मजबूत माध्यम बने रहे हैं ये लोकगीत। लोकगीतों में प्रकृति के साथ लोक के संबंध की अद्भुत व्याख्या है। आम महुआ के बागों, लहलहाती फसलों और कलकल बहती नदियों से लोक के संबंध का जैसा लुभावना और स्नेहिल वर्णन इन लोकगीतों में मिलता है, वैसा अन्यत्र दुर्लभ जान पड़ता है।

लोकगीतों की सबसे खास बात यह रही है कि ये भारतीय समाज का आईना होने के साथ स्त्री या पुरुष के दुख को बहुत बारीकी से अभिव्यक्त करते हैं। इतनी बारीकी कि कई बार सुनने वाले की आंख में आंसू आ जाए। खेतिहर समुदाय हो, व्यापारी वर्ग या आभिजात्य वर्ग- सबने अपने दुख-सुख को व्यक्त करने के लिए इन गीतों का सहारा लिया है। एक समय जब खेती में आधुनिक यंत्रों की उपस्थिति नहीं के बराबर थी और जोत भी काफी बड़ी होती थी, तब किसानी कर रहे स्त्री-पुरुष गीतों के माध्यम से अपने काम के बोझ को हल्का कर लेते थे। धान की रोपाई से लेकर फसल की कटाई तक हर जगह इस गाने की परंपरा रही है। ये गीत हर मौसम, हर त्योहार और शुभ कार्यों के मौके के लिए मौजूद हैं। जैसे चैत्र के महीने में चैती, सावन के महीने में कजरी, फागुन के महीने में फाग, बच्चे के जन्म पर सोहर, शादी-ब्याह के अवसर पर विवाह गीत।

एक समय था जब हमारे टोला-मोहल्ला की औरतें सुर-ताल और भावों के साथ इन गीतों को गाया करती थीं। बाद में लोकगीतों को गाने में कई महिलाओं और पुरुषों ने महारत हासिल किया। उनके गानों के कैसेट बने, सीडी आई और समय बदलने के साथ यूट्यूब पर लोक गायकों के हजारों चैनल बन चुके हैं। लोक गायन में रुचि रखने वाले लोग बड़े चाव से इन गीतों को देखते-सुनते हैं। लड़कियों की विदाई के मौके के गीत सुन कर मेरी नानी रोने लगती थींङ्क जोर-जोर से। फिर तो कई लोगों को मिल कर उन्हें चुप कराना पड़ता था। मैंने भी जब-जब सावन में बजने वाले नैहर के गीत सुने, मेरा मन नैहर जाने को छटपटा उठा। जैसे ह्यअम्मा मेरी बाबुल को भेजो रेङ्क्वङ्क या ह्यअब की बरस भेज भैया को बाबुलङ्क्वङ्क।

लोकगीतों में गाए गए कई परंपराओं को समाज ने सदियों तक निभाया है। फिर चाहे सावन में बेटी को बुलावा भेजने की परंपरा रही हो या त्योहारों पर भैया द्वारा बहन के घर उपहार ले जाने की। शादी के समय ननद द्वारा न्योछावर की मांग हो या दूल्हे के भाई की खातिरदारी का रिवाज। परदेस गए पति का इंतजार करती बिरह में डूबी पत्नी, इन्हीं लोक गीतों को गाकर अपना दर्द हल्का करती हैं। कभी वे अपने पति को उलाहने देती हैं या कभी अपनी जान की दुहाई। ह्यरेलिया बैरन पिया को लिए जाए रे, रेलिया बैरनङ्क्वङ्क। इन लोकगीतों में हमारे परंपराओं को जीवन मिला है। हमने गीत गाते-गाते बड़ों का आदर करना, बुजुर्गों को प्रणाम करना, सूरज के आगे नतमस्तक होना सीख लिया।

ऐसा नहीं है कि लोकगीत सिर्फ आदर्श की बातें करते हैं। इनमें हास्य विनोद, देवर-भाभी के रिश्ते की चुहल और पति-पत्नी के रिश्ते का उतार-चढ़ाव सुनने को मिलता है। जब ह्यरामायणङ्क और ह्यमहाभारतङ्क का पाठ करना निरक्षर लोगों के लिए संभव नहीं था, तब इन्हीं गीतों ने उन्हें हमारे समाज परंपरा के महान नायक और राजाओं से परिचय कराया। उनके जीवन और चरित्र पर हजारों गीत हैं, जो मौखिक रूप से आगे बढ़ते जा रहे हैं। ये गीत न सिर्फ आम जन के मनोरंजन का साधन हैं, बल्कि उनकी जानकारी का जरिया भी।

विडंबना यह है कि लोकगीतों का सुर अवसान की ओर तेजी से बढ़ता गया है। शहरों में शादी-विवाह से लेकर जन्मदिन और अन्य पर्व-त्योहारों पर बॉलीवुड संगीत बजाने का प्रचलन तेजी से बढ़ा है। जहां शहरों में लोक गीत गाने को पिछड़ेपन की निशानी समझा जाने लगा है, वहीं गांवों में भी शहरी संस्कृति तेजी से पांव पसार रही है। पारंपरिक कार्य छूटने के बाद शहरों की ओर पलायन ने हमारी परंपराओं को अधिक क्षति पहुंचाई है। अब न हमारे संबंधों में वह बात रही और न हमारे लोगों में लोकगीतों के प्रति वह लगाव। यह सच है कि कुछ देशज गायकों ने लोक गीतों को जीवित रखने का बीड़ा उठाया है, मगर लोकगीत तो लोक की कला है और इसे जीवित रखने का जिम्मा भी हम सबका होना चाहिए।

काफ्तान पहनकर पाएं कूल लुक

कुछ समय पहले तक काफ्तान का मतलब होता था ढीला-ढाला गाउन। लेकिन इसमें फैशन के तड़के ने इसे एलिगेंट व ट्रेंडी ड्रेस बना दिया है। गर्मी के मौसम और मॉनसून में काफ्तान ड्रेस का फ्लोई फ्लेयर आपको कम्फर्टेबल महसूस कराता है। इसमें कई लेंथ की ड्रेसेस मिलती हैं, जैसे मैक्सी ड्रेस, टॉप, नी लेंथ आदि।

रोज-रोज एक जैसी कुर्तियां, टी शर्ट और टॉप पहनकर बोर हो गए हैं, तो कुछ नया ट्राई करें। इस समर में कुछ नयापन चाहती हैं तो काफ्तान ड्रेस को ज़रूर ट्राई करें। काफ्तान को वेस्टर्न वियर माना जाता है, लेकिन ऐसा बिलकुल नहीं है। इन दिनों इसे एथनिक टच देकर इसे नये सिरे से ट्विस्ट किया गया है। चाहें तो इसके लिये अपनी फेवरेट स्टार्स के लुक को फॉलो कर सकती हैं। ख्याल रखें कि स्टेटमेंट ईयररिंग्स और स्टाइलिश वेस्ट बेल्ट के साथ अपने लुक को कंप्लीट करें। काफ्तान ड्रेस को ट्रेडिशनल ड्रेस कह सकते हैं। बस, यह समझ लें कि इंडियन वुमन फैशन में यह सालों से छुपा था। लेटेस्ट फैशन ट्रेंड ने इसे बाहर निकाला है।

कुछ समय पहले तक काफ्तान का मतलब होता था ढीला-ढाला गाउन। लेकिन इसमें फैशन के तड़के ने इसे एलिगेंट व ट्रेंडी ड्रेस बना दिया है। गर्मी के मौसम और मॉनसून में काफ्तान ड्रेस का फ्लोई फ्लेयर आपको कम्फर्टेबल महसूस कराता है। इसमें कई लेंथ की ड्रेसेस मिलती हैं, जैसे मैक्सी ड्रेस, टॉप, नी लेंथ आदि। इनमें विविधता अपनी ज़रूरत के अनुसार कस्टमाइज़ या रेडिमेड ले सकते हैं।

सेलेब्स की भी पसंद

कफ्तान ड्रेस हर फिगर के लिए बेस्ट होती है। बॉलीवुड सेलिब्रिटीज़ की बात करें तो करीना कपूर को भी कफ्तान ड्रेस काफी पसंद है। कई बार करीना इस ड्रेस में नज़र आई हैं। काफ्तान ड्रेस काफी कंफर्टेबल होती है।

काफ्तान के साथ स्टाइलिंग

यदि काफ्तान ड्रेस की लंबाई थाई या वेस्ट तक है, तो इसे आप जींस, जेंगिग्स, प्लाजो पैंट, सिगरेट पैंट या धोती पैंट के साथ पहन सकते हैं। अपर व डाउन वियर में कलर कॉन्ट्रास्टिंग व प्रिंट का खास ध्यान दें। यदि दोनों भड़कीले होंगे, तो ऐलिगेंस नहीं मिलेगी। कोशिश करें कि डाउन वियर प्लेन ही हो। नी लेंथ काफ्तान ड्रेस को आप वन पीस ड्रेस की तरह पहन सकती हैं। मैक्सी ड्रेस में भी काफ्तान ड्रेस में

भी आप खास लगेंगी। स्वीक्वेंस वाली बेल्ट के साथ पहनकर इसे और खूबसूरत बना सकती हैं। आप इंडियन पहनना ही पसंद करती हैं तो काफ्तान स्टाइल में कुर्ती पहन सकती हैं। इसे भी लेगिंग्स, प्लाजो, धोती पैंट्स के साथ पहन सकती हैं।

..तो खराब होगा लुक

इस स्टाइल की कुर्ती के साथ स्टोल व दुपट्टा न लें। एक तो काफ्तान का लुक खराब लगेगा। दूसरा आप मोटी नज़र आएंगी। इन्हें डिफरेंट कलर्स, फैब्रिक और प्रिंट्स में ऑफलाइन व ऑनलाइन खरीद सकते हैं। इसे मिनिमल ज्वेलरी व सीक्वेंस वाली बेल्ट से निखारें। इसमें वी नेक जंचता है। हाफ स्लीव्स से लेकर क्वाटर स्लीव्स फबती है। आजकल इसमें रफल स्टाइल की स्लीव ट्रेंड में है।

बॉडी टाइप में फिट

काफ्तान ड्रेस की खूबसूरती है कि ये हर तरह की बॉडी टाइप पर अच्छा लगता है। हर उम्र की महिला पर अच्छा लगता है। प्लस साइज की महिलाओं पर काफ्तान ड्रेस अच्छा फैशन ऑप्शन है। काफ्तान ड्रेस में मुलायम फैब्रिक आरामदायक रहता है। इसमें एब्स्ट्रैक्ट प्रिंट, एनिमल प्रिंट, बर्ड पैटर्न, फ्लोरल पैटर्न आदि अच्छा लगता है। प्रेगनेंसी में काफ्तान ड्रेस काफी आरामदायक रहती है।

मानसून परिधान भी हो मनभावन...

मानसून के दौरान हमें समझ नहीं आता कि हम कैसे स्टाइलिश और फैशनेबल लग सकते हैं। हालांकि कुछ छोटी-छोटी बातों का ध्यान रखेंगे तो आप कम्फर्टबल महसूस करेंगे और जचेंगे भी। असल में मानसून का मौसम होता तो बहुत मस्त है, लेकिन इसके साथ ही ह्यूमिडिटी भी साथ किचकिच भी शुरू हो जाती है। इसके कारण हम नए कपड़े पहनना अवॉइड करने लगते हैं। क्या आप भी मानसून को अपने स्टाइल गेम का अंत समझते हैं? अगर हां तो आप गलत हैं क्योंकि आपको और आपके बच्चों को कोई भी मौसम सही ढंग से तैयार होने से नहीं रोक सकता। फिर चाहे वह बारिश वाला मौसम ही क्यों न हो। आज हम जानेंगे कि आप अपने बच्चों को इस उमस भरे मौसम में कैसे स्टाइलिश बना सकते हैं-

इसे ट्राई करें

मानसून के मौसम में बहुत झीने कपड़े न पहनें क्योंकि भीगने पर आपको खुद अजीब लगेगा। इसलिए डार्क कलर के कपड़े इस मौसम में अच्छे रहेंगे। इस मौसम में अपनी फ्लैट और फ्लिप फ्लॉप फुट वियर को अलमारी से बाहर निकाल सकते हैं क्योंकि बारिश में हर रास्ते बहुत अधिक फिसलने वाले हो जाते हैं, जिसते कारण आप गिर सकते हैं। इसलिए यह समय है जब नए फूट वियर ट्राई कर सकते हैं। अगर बारिश के दिनों कुछ बंद या शूज टाइप पहन रहे हैं तो आपको अंदर वॉटर प्रूफ सॉक्स ज़रूर पहननी चाहिए और इस दौरान रंग बिरंगी सॉक्स पहन कर भी आपका मन काफी बहल जायेगा और इंफेक्शन से भी बच जाएंगे।

मिडी ड्रेस आजमाएं

इस मौसम में अगर रंग बिरंगी मिडी ड्रेस पहनेंगी तो आपका मूड भी उन ड्रेस के रंग और फ्लोरल प्रिंट को देख कर बहुत खुश हो जायेगा और अगर अचानक से बारिश आ जाती है तो इससे आपकी पूरी ड्रेस खराब नहीं होगी क्योंकि आपने तो मिडी पहनी है।

वॉटर प्रूफ पैंट्स का रखें ख्याल

अपने बच्चों को बारिश से बचाने के लिए यह जरूर ध्यान रखें कि उनके पास इस मौसम के दौरान वॉटर प्रूफ पैंट्स हों। इन दिनों ऐसी पैंट्स भी काफी फैशनेबल होती हैं। इसके साथ ही ध्यान रखें कि अगर आपके बच्चे बारिश के मौसम में घर से बाहर निकल रहे हैं तो उन्हें गम बूट्स ही पहनाएं ताकि वह अच्छे भी लगें और पानी भी उनके ऊपर से आसानी से उतर सके क्योंकि ऐसे बूट्स रबर के बने होते हैं। इन फैशन टिप्स के साथ ही अगर आप या आपके बच्चे कहीं बाहर निकल रहे हैं और अगर मौसम थोड़ा बारिश वाला है तो उन्हें कुछ चीजें देना न भूलें जैसे छाते को इस मौसम में हमेशा अपने पास रखें और कुछ वॉटर प्रूफ चीजों को भी अपने साथ रखें। ताकि आपको ज्यादा परेशानियों का सामना न करना पड़े। अगर आप चाहें तो बच्चों के लिए भी कुछ फ्लोरल कपड़े खरीद लें ताकि इस मौसम की वाइब के साथ वह भी मैच कर पाएं।

बच्चों को क्या पहनाएं?

इस मौसम में ह्यूमिडिटी बहुत अधिक बढ़ जाती है और बच्चों को बहुत पसीना आने लगता है। इसलिए यह सुनिश्चित करें कि आप बच्चों को लाइट और ब्रेथेबल फैब्रिक के कपड़े ही पहनाएं। नीले आसमान में काले बादलों के बीच अगर आप बच्चों को थोड़े ब्राइट रंग के कपड़े पहनाएंगी तो यह कॉम्बो बहुत सुंदर लगेगा। इसके साथ ही ब्राइट कलर इस मौसम की वाइब के साथ भी परफेक्ट रूप से मेल खाएंगे। उन्हें रंग बिरंगे और वाइब्रेंट रेन कोट्स पहनाएं ताकि वह चलते हुए खुद के साथ एक स्टाइल स्टेटमेंट भी कैरी करें। रेन कोट भी ट्रेंच कोट जैसे ही होते हैं लेकिन इनका मैटीरियल अलग होता है।

कनफ्यूजन नहीं, फूड फ्यूजन

खानपान के सच्चे शौकीन तो वही होते हैं, जो आए दिन नए-नए प्रयोग करके नयी रेसिपीज तैयार करते रहते हैं। आजकल पहनावा हो या संगीत, हर चीज में फ्यूजन का बड़ा बोलबाला है, फिर फूड-वर्ल्ड ही इससे दूर क्यों रहे? जानते हैं, कुछ खास नयी और स्वादिष्ट रेसिपीज को-

क्रुफीन

क्रोइसेंट (फ्रेंच रोल) और मफीन इन दोनों चीजों को मिलाकर बनाया गया है क्रुफीन। इस प्रयोग को आजमाया सैनफ्रांसिस्को, कैलिफोर्निया के होम्स बेकहाउस ने और ग्राहकों ने इसे हाथों हाथ सिर माथे पर बैठा लिया। यह पेस्ट्री लैमिनेटेड डफ को बेक करके मफीन के आकार में तैयार की जाती है। इसके बाद इसे शुगर में रोल किया जाता है और बीच में फिलिंग की जाती है, जो अक्सर फ्लेवर्ड क्रीम, जैम या फ्रूट योगर्ट की होती है।

क्रोनट

शेफ डोमिनिक एंसेल क्रोइसेंट (फ्रेंच रोल) और डोनट (कुकीज या बिस्कुट) दोनों से ऊब चुके थे। उन्होंने दोनों का फ्यूजन तैयार कर डाला और ग्राहकों को चखाया। क्रोनट नामक यह पेस्ट्री ग्राहकों को पसंद आ गई। इस पेस्ट्री को लेयर्ड डोनट पेस्ट्री के मिश्रण (डफ) को तेल में फ्राई करके बनाया जाता है। इसके चाहने वाले अनेक लोग हैं।

बिरिज्जा

आपने बिरियानी भी खाई होगी और पिज्जा भी खाया होगा। लेकिन कभी बिरिज्जा खाया क्या? इन दोनों पॉपुलर फूड्स का फ्यूजन है बिरिज्जा। यह आविष्कार किया है मशहूर फास्ट फूड चेन पिज्जा हट की भारतीय शाखा ने। इसे बिरियानी से भरे केसरोज में पिज्जा क्रस्ट पर सील करके पेश किया जाता है।

सुशीरीटो

सैनफ्रासिस्को के एक रेस्तरां ने सुशी और बुरीटो की घालमेल से शानदार रेसिपी तैयार की है- सुशीरिटो। यह एक प्रकार का अनूठा 'मल्टी कल्चरल' फ्लेवर है। फ्लोर टोर्टिला में सुशी की फिलिंग को लपेटकर पेश किया गया यह आइटम खूब पसंद किया गया। इस तरह दुनिया का मशहूर फूड आईटम सुशी भी फूड लवर्स को आसानी से खाने को मिल रहा है।

नूडल समोसा

समोसे में आलू का भरावन तो न जाने कब से चला आ रहा है। अब कुछ स्मार्ट फूड कॉर्नर अपने शौकीन ग्राहकों के लिए नूडल समोसा भी पेश कर रहे हैं। इसमें अपने नाम के मुताबिक ही भरावन के लिए आलू नहीं, बल्कि मसाला नूडल का इस्तेमाल किया जाता है और चिली सॉस व टोमैटो सॉस के साथ परोसा जाता है।

मूंग चीला विद डोसा

भारत के कई महानगरों में आप इन दिनों एक नया फ्यूजन देख सकते हैं। मूंग की दाल के चीले में मसाला डोसा वाला आलू मसाला रहता है और साथ में दी जाती है धनिया-पुदीना चटनी, मीठी चटनी और कहीं-कहीं नारियल चटनी भी। खाने पीने के रसिया इसे खूब मजे से खाते हैं और एक चीला खाते ही पेट भी भर जाता है।

तन्दूरी पाइनेपल

आए दिन वही पनीर, शिमला मिर्च और टमाटर को तन्दूर में भुन कर खाना और खिलाना... ज्यादातर लोग इससे बोर हो चुके लेकिन किसी अच्छे विकल्प के अभाव में इसे खाते रहे हैं। बाद में प्रयोग करने की बारी आई। इसके बाद अब भोजन प्रमियों ने एक नया प्रयोग किया है और पनीर के बजाय अनन्नास को तंदूर में भून कर आजमाया है।

बॉडी ट्रांसफॉर्मेशन के आगे

फैंस हुए नतमस्तक

बॉलीवुड में अब महिलाओं का काम पहले की तुलना में काफी बदल चुका है। पहले के जमाने में जहां ज्यादातर अभिनेत्रियां पर्दे पर सिर्फ ग्लैमरस और अबला नारी का किरदार निभाती नजर आती थीं तो वहीं अब हीरोइनें दमदार एक्शन के साथ साथ अनोखे रोल भी कर रही हैं। हीरो की तरह अब हीरोइनें भी अपने किरदार के लिए पहले से काफी ज्यादा मेहनत कर रही हैं। पर्दे पर प्रेग्नेंट महिला का रोल निभाना हो या फिर किसी खिलाड़ी का, ये अभिनेत्रियां बिना किसी हिचकिचाहट के अपना वजन घटा भी रही हैं और बढ़ा भी रही हैं। जिस तरह से ये अभिनेत्रियां अपना बॉडी ट्रांसफॉर्म कर रही हैं वो लोगों के लिए किसी प्रेरण से कम नहीं है। हालांकि बात वजन बढ़ाने की हो या फिर घटाने की किसी के लिए भी ऐसा करना मुश्किल होता है। तो चलिए आज आपको कुछ ऐसी ही अभिनेत्रियों के बारे में बताते हैं जिन्होंने अपने ट्रांसफर्मेशन से लोगों को चौंका दिया।

प्रियंका चोपड़ा

हॉलीवुड फिल्मों में अपन हुनर का लोहा मनवाने वाली प्रियंका चोपड़ा ने 'मैरी कॉम' फिल्म में काम किया था। इस फिल्म में एक खिलाड़ी की तरह दिखने के लिए उन्होंने कड़ी मेहनत की थी। प्रियंका ने काफी वेट ट्रेनिंग की थी जिससे उनकी बाजू मजबूत दिखे। मैरी कॉम में अपने किरदार से प्रियंका ने सबको प्रभावित कर दिया था।

कंगना रणौत

कंगना की फिल्म 'थलाइवी' बहुत जल्द पर्दे पर रिलीज होने को तैयार है। इस फिल्म में वो जय ललिता के किरदार में नजर आएंगी। दिवंगत मुख्यमंत्री के रोल में फिट बैठने के लिए कंगना ने करीब 20 किलो वजन बढ़ाया था। इस लुक में कंगना को काफी पसंद किया गया। वहीं फिल्म की शूटिंग पूरी होने पर उन्होंने अपना वजन घटा भी लिया।

कृति सेनन

कृति फिल्म मीमी में एक गर्भवती महिला का किरदार निभाती नजर आने वाली हैं। इस फिल्म के लिए कृति ने 15 किलो वजन बढ़ाया है। अभिनेत्री ने बताया कि, 'अच्छे मेटाबोल्जिम के कारण मैं हमेशा जो कुछ भी चाहती हूं उसे खा सकती हूं। इसी कारण मेरे लिए किलो में वजन बढ़ाना आसान नहीं था। वजन बढाने के लिए मुझे नाश्ता , मिठाई, आदि ज्यादा से ज्यादा खाना पड़ा'।

सोनाक्षी सिन्हा

सोनाक्षी सिन्हा ने जब बॉलीवुड में कदम रखा तो उसके लिए उन्होंने कई किलो वजन घटाया था। वहीं फिल्मों में आने के बाद उन्होंने फिर मेहनत करना जारी रखा और अब वो काफी पतली हो चुकी हैं। हालांकि फिल्म 'अकीरा' के लिए सोनाक्षी ने काफी मेहनत की थी। उन्होंने मार्शल आर्ट्स सीखने के लिए 30 दिन की वर्कशॉप ज्वाइन की थी। फिल्म में उनके स्टंट फैंस को काफी पसंद आए थे।

रश्मि रॉकेट

तापसी पन्नू का नाम बॉलीवुड की उन अभिनेत्रियों में शामिल हैं जो सफलता हासिल करने के लिए मेहनत के किसी भी स्तर को पार कर सकती हैं। तापसी इन दिनों कई सारे प्रोजेक्ट में व्यस्त हैं। फिल्म 'रश्मी रॉकेट' के लिए तापसी कड़ी मेहनत कर रही हैं। फिल्म में एक एथलीट की तरह दिखने के लिए उन्होंने ना सिर्फ वजन बढ़ाया है बल्कि काफी मस्कुलर बॉडी बना ली है। उनके लुक को देखकर हर कोई हैरान है।

राजेंद्र मेडिकल स्टोर डबरा की ओर से **हमारा देश हमारा अभिमान** मासिक पत्रिका लॉन्च करने पर

बहुत बहुत शुभकामनाएं

प्रो. नारायण दास गुप्ता

टपकेश्वर ट्रेडर्स (पेंट्स) डबरा की ओर से हमारा देश हमारा अभिमान मासिक पत्रिका के प्रथम संस्करण के प्रकाशित होने पर बहुत बहुत शुभकामनाएं

प्रो. प्रमोद पचौरी

रघुनाथ तिवारी (कार्यकारी अध्यक्ष कांग्रेस कमेटी ग्वालियर ग्रामीण) की ओर से **हमारा देश हमारा अभिमान** मासिक पत्रिका के प्रथम संस्करण प्रकाशन पर

बहुत बहुत शुभकामनाएं

रघुनाथ तिवारी
कार्यकारी अध्यक्ष कांग्रेस

मा. शिवराजसिंह चौहान
मुख्यमंत्री, मध्यप्रदेश

मा. नरोत्तम मिश्रा
गृह मंत्री, मध्यप्रदेश

मा. भूपेंद्र सिंह
नगर विकास मंत्री, मध्यप्रदेश

प्रशासक प्रदीप शर्मा (एसडीएम)
डबरा नगर पालिका एवं डबरा

कौशलेंद्र विक्रम सिंह
कलेक्टर, ग्वालियर

महेश पुरोहित
सीएमओ डबरा नगर पालिका

नगर पालिका डबरा के द्वारा हमारा देश हमारा अभिमान पत्रिका के प्रथम अंक प्रकाशन की हार्दिक शुभकामनाएं सहित डबरा के नागरिकों से अपील करती है...

1. कोरोना के बचाव हेतु दो गज की दूरी मास्क है जरूरी।
2. निकाय के करों का समय पर भुगतान करें।
3. नगर को साफ स्वच्छ बनाने हेतु कचरा घरों में ही पृथक-पृथक डिब्बो में रखे, वाहन आने पर वाहन में ही कचरा डालें।
4. सड़क / गलियों में कचरा न फेंके।
5. वृक्षों को लगाना है, शहर को सुंदर बनाना है।